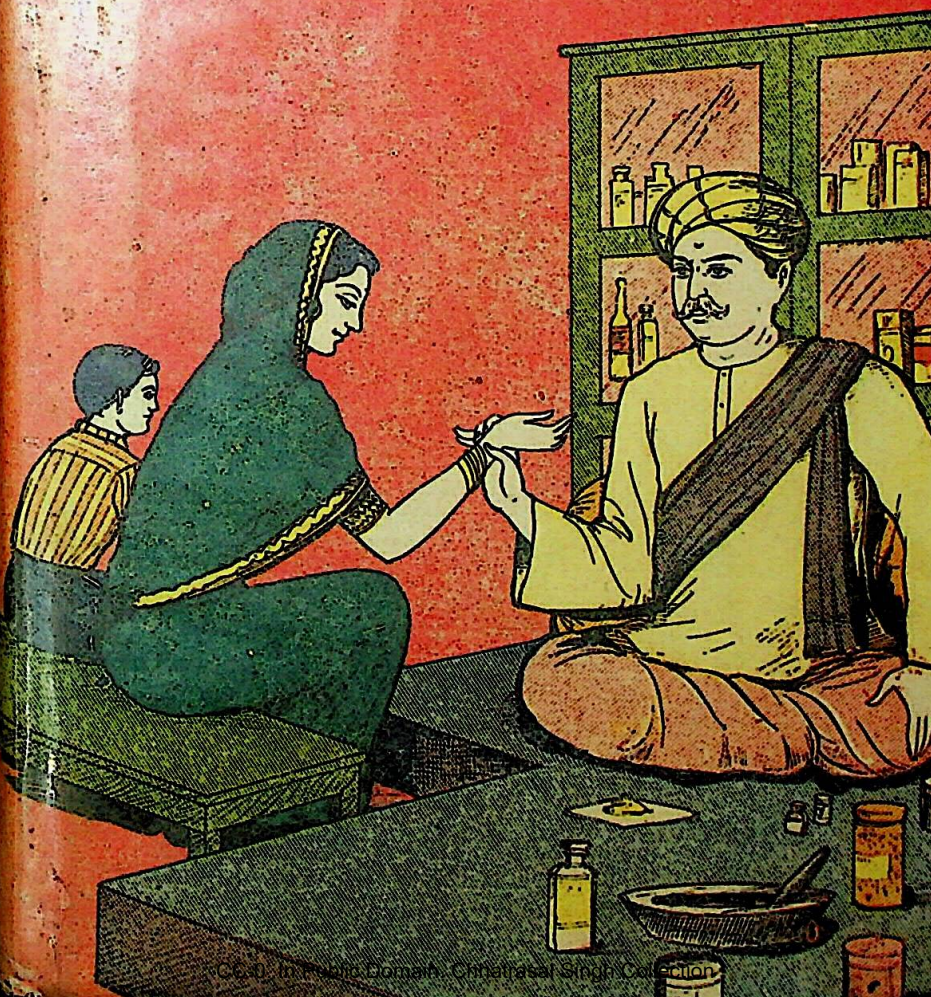
Digtized by Muthulakshmi Research Academy

452

महात्मा जी के १२५१ नुसखे



CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection.

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

58

❀ श्री ❀

महात्माजी के

अनुभूत १२५१ नुसखे

ऐलोपैथिक मिक्सचर, पेटेण्ट दवाऐं, इंजेक्शन सहित

(संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण)

लेखक—महात्मा कीढ़ीराम जी

संशोधक एवं परिवर्द्धितकार

सत्यदेव शर्मा 'चिकित्साचार्य' ए. एस. वी.
रजिस्टर्ड मेडीकल प्रेक्टिशनर,
इन्चार्ज—चैरीटेविल जैन डिस्पेंसरी
कीठम (आगरा)

—:❀:—

मुद्रक व प्रकाशक :—

लाला श्यामलाल हीरालाल

श्याम काशी प्रेस, मथुरा ।

मूल्य ३)

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

दो शब्द

आयुर्वेद शास्त्र में ऋषि महर्षियों ने जितने भी योगों व वर्णन किया है वे प्रायः सबही अनुभूत हैं। किन्तु आयुर्वेद ग्रन्थ का मथन करना हिन्दी भाषियों के लिये कोई आसान का नहीं। यह सौभाग्य का विषय है कि अर्से से अनुभूत योगों व विवेचन भाव प्रकाश, शारंगधर संहिता, योग रत्नाकर, भैषज रत्नावली आदि ग्रन्थों में संग्रहकर किया गया है। वर्तमान समय के आयुर्वेदज्ञ दिग्गज विद्वानों ने भी हिन्दी भाषा में अनुभूति योगों का संकलन करना प्रारम्भ कर दिया है। उनमें से सिद्ध भैषज्य मणिमाला (संस्कृत में) सिद्ध प्रयोग हिन्दी भाषा में विशेष उल्लेखनीय हैं।

महात्मा कीढ़ीरामजी ने भी कितने ही साल पहिले १२५१ अनुभूत योगों का संकलन कर हिन्दी भाषा का भण्डार भरने का प्रयत्न किया-इसी ग्रन्थ का इसके प्रकाशक महोदय ने संशोधनएवं परिवर्द्धित करने का कार्य मेरे ऊपर डाला अतः इस ग्रंथ का संशोधित और परिवर्द्धित रूपमैं आपके सन्मुख रख रहा हूँ।

पूर्व प्रकाशित अनुभूति योगोंमें मात्राका उल्लेख नहीं किया गया था, तथा बहुतेरे योग उचित नहीं जँचे अतः उनकी जगह नवीन प्रयोगों का समावेश किया गया है। साथ ही उन२ रोगों पर एलोपैथिक मिक्सचर, पेटेंट दवाऐं व इन्जेक्शनों का भी यथा स्थान विशेष उल्लेख किया गया है। साथ ही इसमें वे ही योग लिखे गये हैं जिनको मैंने हजारों रोगियों पर परीक्षण क लाभ उठाया है। यह योग ९९ फीसदी सफल योग हैं।

इस एक ही पुस्तक से आयुर्वेद व ऐलोपैथिक चिकित्सा क रसास्वादन मिलेगा-बहुतसी पुस्तकों को देखना न पड़ेगा ऐस मेरा पूर्ण विश्वास है।

श्री बिहारीलाल हरचरनलाल जैन धर्मार्थ डिस्पेंसरी कीठम (आगरा) विनीत— सत्यदेव शर्मा "विद्यासागर

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

विषय-सूची

:::❀:::—

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
ज्वर	१	आमवात (गठिया)	४५
फुम्फुसन्निपात (निमोनियां)	८	मूत्राघात-मूत्रकच्छ	४६
बच्चों की पसली चलने पर		कुष्ट (कोढ़)	४८
मोतीझला	६	पाण्डु	५१
सन्निपात	११	श्वेत प्रदर-रक्त प्रदर	५४
अतिसार	१२	दाद-खाज	५५
आमातिसार	१३	मंदाग्नि	५६
अजीर्ण	१५	हिचकी	६२
खांसी	१६	हृदय दौर्बल्यता	६३
श्वास (दमा)	१६	आधाशीशी-सिर दर्द	६५
संग्रहणी	२१	वीर्यदोष-प्रमेह	६८
अर्श (बवासीर)	२३	मधुमेह	७७
कफ (काँस)	२७	पूयमेय (सुजाक)	७८
वमन	२८	उपदंश	७६
श्लेष्म	३१	वातशूल	८०
जलोदर	३१	पित्तज्वर	८६
शोथ	३७	नपुंसकता	८८
प्लीहा-जिगर	३७	दाह-जलन	८६
गुल्म (वाय गोला) उदर शूल	३६	चित्त व्याकुलता	६१
उदावर्त	४१	तृषा	६१
अनाह (अफरा)	४२	हैजा	६२
बातरोग	४३	रक्त दोष	६५
		भस्मक	६७

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

विषय सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
ताऊन	९७	भगन्दर	१२९
व्रण	९८	मोच	१३०
अग्निदग्ध	१०१	बच्चों की कोष्ठबद्धता	१३१
सोमरोग	१०२	नहरूआ	१३१
राजयक्ष्मा	१०३	गंज	१३२
छाती का दर्द	१०४	नष्टार्तव	१३३
योनि दोष	१०५	गर्भ स्थापन	१३५
पथरी	१०७	गर्भपात	१३७
गलगण्ड	१०८	गर्भवती की वमन	१३८
चोट की सूजन	१०९	सन्तान निरोध	११९
मुखरोग	१११	दन्त रोग	१४०
शीतला-माता	११४	स्वर भङ्ग	१४२
कलेजे की निर्बलता	११५	मृगी	१४३
प्रसूति रोग	११६	योपास्मार	१४४
प्रतिश्याय	११८	बाल रोग	१४६
गठिया	११९	उन्माद (पागलपन)	१५१
नकसीर	१२०	कृमिरोग	१५३
मुँहासे	१२१	सर्व विष चिकित्सा	१६०
नेत्र रोग	१२५	बच्चों का दवाखाना	१६४
कर्ण रोग	१२६	नित्यप्रति काम में आने वाली	
गर्भ पीड़ा	१२८	एलोपैथिक रामबाणदवाएँ	१६७
फीलपाँव	१२९	बच्चों के टीके	१७०

—:※:—

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

॥ श्री ॥

(संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण)

महात्मा जी के अनुभूत

१२५१ नुसखे

—०❀०—

ज्वर—फीवर—बुखार

१—तुलसी के पत्तों का रस ६ माशे, शहद ६ माशे, यह एक मात्रा है। ऐसी ३ मात्रा दिनभर में खानो चाहिए। विषम ज्वर नाशक है।

२—नींव की जड़ की छाल २ तोला, पानो ऽ।= उबाल कर शेष ऽ≡ रहने पर छान कर दिनमें दो बार पीवे सोंठ व धनियाँ का चूर्ण मिला, पित्त ज्वर व विषम (मलेरिया) में लाभदायक है।

३—कंजा की मींगी ऽ= काली मिर्च ऽ= पलास पापड़ा ऽ= सबको कपड़छन कर पानी के साथ पीस मटर के बराबर गोली बनावें। ज्वर आने से पहिले तीन बार २-२ गोली दें।

४—छोटी हड़ ७ माशा, मुनक्का ७ माशा, जीरा ७ माशा, जल ऽ। इनका क्वाथ करें। आधी छटांक शेष रहने पर शीतल कर स्वर्णमाक्षिक भस्म २-३ रत्ती मिला रोगी को पिलावें। प्रातः तथा सायंकाल। यह यह सब प्रकार के ज्वरों का पाचन करता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

५—नीबू कागजी के दो टुकड़े करलें । एक में जीरा, नमक, काली मिर्च भर कर तथा दूसरे में बूरा भर कर चूसें । मलेरिया ज्वर नाशक एवं छर्दि (कै) को लाभकारी है ।

६—कड़वी असीस का चूर्ण १ माशा ऐसो दो खुराक बुखार के पेश्तर पानीके साथ लेवें । विषमज्वर को रोकने में अत्युत्तम है ।

७—धतूरे के हरे पत्ते ऽ— काली मिर्च ऽ। पीस कर काली मिर्च के बराबर गोली बनालें । बुखार से पहले १ गोली गुनगुने पानी के साथ लेवें । मलेरिया को रोकता है । एक ही गोली ज्वर को रोक देती है ।

८—पित्तपापड़ा का चूर्ण ३ माशे । शहद में मिला दिन में ३ बार लेवें । पित्त ज्वर नाशक है ।

९—आक के फूलों की बोंडी ऽ— कालीमिर्च ऽ— दोनों को पानी के साथ पीस झड़बेर के बराबर गोली बनावें । बुखार से पहले ३ बार लेलें । खाँसो, विषम ज्वर एवं मन्दाग्नि नाशक है ।

१०—चाय १ चम्मच, दूध आधी छटांक, शक्कर १ तोला । चाय की तरह बनावें । दिन में ३ बार पीवें । विषम ज्वर (सर्दी का बुखार) एवं निमोनियाँ में लाभप्रद हैं ।

११—हारसिंगार के पत्तों का रस ६ माशे, शहद

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

६ माशे। दिन में तीन बार पीवें। सब प्रकार के ज्वर में लाभप्रद है।

१२-पियाबाँस के पत्तों का रस ६ माशे, शहद ६ माशे। दिन में ३ बार लेवें। जीर्ण ज्वर एवं काँस (खांसी) में अत्युत्तम है।

१३-ब्रह्मी के पत्तों का रस ६माशे, शहद ६ माशे, दिन में ३ बार पीवें। बुद्धिवर्द्धक, स्मरणशक्ति दाता, एवं ज्वर नाशक है।

१४-मुलैटी ६ माशा, खुरासानी अजवायन ३ माशा, जल १ पाव क्वाथ करें। आधी छटाँक रहने पर छान कर पिलावें। प्रातः सायं शीतपूर्वक आने वाला ज्वर निश्चित दूर होता है।

१५-काला जीरा १ तोला, मुसब्बर १ तोला सोंठ १ तोला, काली मिर्च १ तोला व कायफल १ तोला, करज की मिंगी १ तोला। इनको पानी में पोस चने के बराबर गोली बनावे। ज्वर रुकता है तथा चढ़ा हुआ ज्वर उतर जाता है।

१६-कुनीन सल्फ १ तोला, बंशलोचन १ तोला, छोटी इलायची बीज १ तोला, प्रवाल भस्म १ तोला, नीबू का सत १ तोला। गुलाब जलमें खरलकर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बनावे। मात्रा १ गोली ३ बारज्वर चढ़ने से पहिले। ज्वर रोधक है।

CC-0. In Public Domain. Chhattrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१७–अतीस १ तोला, कांगड़ासिंगी १ तोला, नागरमोथा १ तोला, छोटी पीपल १ तोला सबको कपड़छन करलें। मात्रा १ से ४ रत्ती ३ बार शहद या माँ के दूध में बच्चों के ज्वर में लाभकारी है।

१८–चित्रक की जड़, आँवला, बड़ी हड़ का छिलका, छोटी पीपल, सेंधा नमक सब समान भाग लें मात्रा—१।। माशा से ३ माशा तक जल से। हरारत, खाँसी, कब्ज, अपाचन में उपकारी है।

१९–कुटकी १० रत्ती, चिरायता १० रत्ती, सनाय १० रत्ती बड़ी हड़ का छिलका १० रत्ती, मुनक्का १ तोला, गुड़ २ तोला सबको जौकुट करलें। सबको १० तोले पानीमें खौलालें सुबह मलकर छानकर पीलें। मलेरिया (फसली) बुखार व कब्ज को दूर करता है।

२०–बकरी का दूध ऽ। पानी ऽ। पीपल छोटी ५ नग केवल दूध रहने पर ३ माशे खूबकला फांक ऊपर दूध पीवें प्रातः सांयं। जीर्ण ज्वर निश्चित दूर होताहै।

२१–सप्तपर्ण की छाल १ सेर को १६ सेर जलमें क्वाथ करें चौथाई रहने पर छानकर पुनः मंदी आँच पर पका गाढ़ा करलें। इसमें काली मिर्च, पीपल, सोंठ, करंज की मिंगी, नाय का चूर्ण ५-५ तोला मिला कर १-१ माशा की गोली बनालें। मात्रा १ से चार गोली दिन में ३ बार। मलेरिया के लिए लाभकारी है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

२२—क्लोरोक्वीन, नेवाक्वीन, कैमाक्वीन, इनमेंसे कोई सी गोली बुखार से पहले २गोली बाद में १ गोली ३ वार जलसे दें। १०-१५ गोलो देना पर्याप्त है।

२३-पुटास साईट्रास १५ ग्रेन, स्प्रिट ईथरनाईट्रोसी ३० बूंद लाईकर एमोनियाँएसीटास १ ड्राम, सिरप औरन्साई १ ड्राम, जल १ औंस—यह एक मात्रा है। ऐसी दिन भर में ३ खुराक दें। यह पसीना द्वारा ज्वर को हटाता है, शारीरिक वेदना (दर्द) को दूर करताहै।

२४-सोड़ा सेलोसिलास १० ग्रेन, सोड़ा वाईकार्व-१० ग्रेन, पुटास साईट्रास १० ग्रेन टि-कार्डको १० बूंद, टिंचर हाईयोसाइमस ५ बूंद, सिरपजिंजर १ ड्राम पानी १ औंस। यह एक मात्रा है। ऐसी तीन मात्रायें दिनभर में दें। तरुण ज्वर का प्रसिद्ध एवं पाचन योग है।

२५-यूकुनोन २ ग्रेन, ग्लूकोज ५ ग्रेन (१ मात्रा है) दिनमें ३बार जलके साथ दें। बच्चोंके बुखार रोकनेको।

२६-कुनीनसल्फ ५ग्रेन, एसिड सल्फ्यूरिकडिल १० बूंद टिंचरकार्ड को० १५ बूंद, मैगसल्फ १ ड्राम पानी १ औंस दिनमें ३बार। यह मलेरिया को रोकने की दवाहै।

२७-कुनोन बाई हाईड्रोक्लोर १० ग्रेन का इन्जेक्शन माँसपेशी में दें। इकतरा, तिजारी, रोज आनेवाले बुखार को एक ही इन्जेक्शन में रोक देता है। ६ घन्टे पहले इन्जेक्शन दें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

२८-एमस्टीन या डाई हाई स्टप्टोमाईसीन का इन्जेक्शन मांसपेशी में हर तीसरे दिन दें। राजयक्ष्मा (तपेदिक) को लाभ करताहै। कमसे कम ३०इन्जेक्शनदें

२९-नीम के पत्ते १० भाग, त्रिफला ३ भाग, त्रिकुटा ३ भाग, अजमायन ५ भाग, सेंधा नमक १ भाग काला नमक १ भाग, सांभर नमक १ भाग, जवाखार २ भाग, इनका कपड़छन चूर्ण करले। मात्रा ३ से ६माशा गर्म जल के साथ दिनमें दो बार। यह प्रसिद्ध निम्बादि चूर्ण है। सम्पूर्ण प्रकार के ज्वरों का नाशक है।

३०-प्रवाल भस्म १ भाग, सुहागा फूला २ भाग, मिला सुदर्शन पत्तोंके रसकी ७ भावना दें। आधीरत्ती से १ रत्ती सुदर्शन पत्तों के १ तोला रस के साथ देने से एस्प्रीन के तुल्य प्रस्वेद आकर ज्वर दूर होता है।

३१-गुलबनफसा, गाजुबां, खूबकला.सौंफ, गिलोय का सत्त बराबर ले चूर्ण करे फिर सबके समान मिश्री मिलालें यह चूर्ण २ से ३ माशे गुनगुने पानी के साथ देने से मन्द ज्वर को कम करता है।

३२-हड़ ८ तोला,गिलोय ४तोला,निसौथ ८ तोला, सितावर ४ तोला, विधारा ८ तोला, गोखरू ४ तोला, पीपर ८ तोला, वायविडंग ४ तोला,सौंठ ८ तोला, सहदेवी ४ तोला। इनको एकत्र कपड़छन चूर्ण बना मधु मिला रत्तीकी गोली बनावें। मात्रा-२ गोली प्रातःसायं-

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

काल जल के साथ। खाँसो, श्वांस तथा कोष्ठवद्धतायुक्त ज्वर नाशक है।

३३-शुद्ध हिंगुल २भाग,शुद्ध गंधक आमलासार १ भाग, सुहागा चौकिया फुलाया हुआ १ भाग,शुद्ध वत्स-नाभ १ भाग, कालीमिर्च १ भाग, छोटीपीपल १भाग। अदरक रस में मर्दन कर मूंग के बराबर गोली बनावें। मात्रा १ से २ गोली दिन में ३ बार अदरक रस शहद के साथ। यह मृत्युंजय रस बातजज्वर वातपित्तजज्वर, सन्निपातजज्वर, आमज्वर,जोर्णज्वर,विषमज्वरइत्यादि सब प्रकार के ज्वरों को नष्ट करने में अद्वितीय है।

३४-वायविडंग, सोंठ, छोटी पीपल, आंवला,बहेड़ा वच, गिलाय, शुद्ध भिलावा, शुद्ध वत्सनाभ सब समान भाग लेकर कपड़छन कर ७ बार गौ मूत्रमें घोंटकर १ १ रत्ती की गोली बनालें और छाया में सुखालें। यह संजीवनी रस सब प्रकारके ज्वरों का पाचन शीघ्र ही करती है। प्रायः वैद्य लोग मंथर (मोतीझले) ज्वरमें प्रारम्भसे रोगमुक्त होने तक इसी का व्यवहार करतेहैं। मात्रा-१-१ गोली ३बार शहद के साथ दिनमें ३ बार।

३५-कांयफल का चूर्ण ४ रत्ती शहद में खाने से बात ज्वर नष्ट होता है।

३६-भारंगी का चूर्ण ३ माशा शहद में खाने से बात ज्वर नष्ट होता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

३७-सोंफ को कपड़ मिट्टी कर १० सेर कंडों में फूंक दें। मात्रा-१ माशा गर्म पानी से। इससे सब प्रकार के ज्वर उतर जाते हैं तथा हृदय को हानिनहीं करता।

फुप्फुस सन्निपात निमोनियाँ

३८-विशखपरा का चूर्ण ३ माशे, पोपलका चूर्ण २ रत्ती गर्म पानी या शहद के साथ खावें। निमोनियाँ में लाभप्रद है।

३९-संजीवनी २ रत्ती, अभ्रक २ रत्ती, शृंग २ रत्ती, टंकण २ रत्ती अदरक के रस या शहद में खावे निमोनियां को शीघ्र ही लाभ करता है।

४०-सल्फा थायजौल १ गोली, खाने का सोड़ा ३ रत्ती गर्म पानी के साथ दें। नं० ३९ नुस्खा और ये २-२ घण्टे पर अदल-बदल कर दें। निमोनियाँ को तत्काल लाभ करता है।

४१-प्रोकोन पेनसिलन इन्जेक्शन ४ लाख माँस पेसी में दें। १ या २ इन्जेक्शनों से ही लाभ हो जाता है। इसके साथ ३९,४० नम्बर के नुस्खे अवश्य सेवन करे।

४२-मोम देशी आधापाव कपूर ३ तोला, तारपीन तेल ३ छटांक, अलसी तेल २ छटांक, लाईकर एमोनियां फोर्ड २॥ छटांक, पानी १ छटांक। पहले तारपीन के तेल में कपूर डालकर हल करलें फिर अलसी का

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

तेल डालें-फिर मोम को गर्म कर मिलावें फिर लाइकर एमोनियां फोर्ट मिला हिलाकर रखलें। यह निमोनियाँ एवं पार्श्वशूल में आशुफल कारी है। बच्चों के पसली रोग में भी तत्काल लाभ करता है । वायु सम्बन्धी रोगों को भी लाभप्रद है।

४३-बच्चों की पसली चलने पर नुस्खा नं० ३९ ४०, ४१ एवं ४२ तत्काल लाभप्रद है। इसके अलावा बच्चों के घर-घर कफ की आवाज होने पर १ रत्ती से ४ रत्ती तक उशारारेवन्द पीसकर माँ के दूध में गर्म करें जब खदक पड़ जावे मलाई को हटाकर रात को व सुबह के वक्त (ठंडक के समय) पिला दें । इससे एक कै व दस्त होकर छाती का बलगम निकल जाता है। बच्चे का पसली चलना ठीक होता है।

मोतीझला-तपैमुवारिकी-टायफायड फीवर

४४-कटेरी की जड़ ४माशा, सोंठ ४ माशा,गिलोय ४ माशा पोखरमूल ४ माशा बड़ी हड़ का वक्कल ४ माशा। इन्हें जौकुट कर १ पाव पानी क्वाथ करें। आधी छटांक शेष रहने पर छान शीतल कर पिलावें। प्रातः तथा सायंकाल प्रथम सप्ताह में दे सकते हैं।

४५-भारंगी ३ माशे, गिलोय ३ माशे, कटेरी का पंचाग ३ माशे बड़ी हड़ का वक्कल ३ माशे, सोंठ ३ माशा, पोखर मूल ३ माशा। सबको जौकुट कर पाव-

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

भर पानो में औटावें आधी छटाक शेष रहने पर छान ठंडा कर पिलावें। सुबह शाम। वात पित्त के श्लेष्म (कफ) का अनुबंध होने पर दें।

४६-तुलसीपत्र २ तोले, गिलोय का सत १ तोला, लोंग ६ माशे, धनियां ६ माशे, कासनी के बीज ३ माशे, छोटी इलायचीके बीज ६माशे। सबको कपड़छन करलें फिर तुलसी के पत्तों के स्वरस की भावना देकर उड़द के बराबर गोली बनालें। १ गोली प्रातः सायं दें इससे मंथर ज्वर नष्ट होता है।

४७-लाईकर एमोनियां एसेटेटिसडिल १ ड्राम, सैलोल ५ ग्रेन म्युसिलेजअकेसिया १ ड्राम, टि. यूक्यूलिप्टस १५ बूंद आयल सिनेमम ६ बूंद, सिरप औरेंजशाई १ड्राम, पानी १औंस ऐसी एक मात्रा जब तक रहे दिन में २-४ बार देते रहें।

४८-पेराफीमलिकुड ४ ड्राम—ऐसो एक मात्रा सोते समय कब्ज के लिए।

४९-क्लोरेल हाईड्रेट ५ से १० ग्रेन-ऐसी एक कैपशूल में भरकर सोते समय प्रलाप के लिए।

५०-क्लोरोमाईसेटीन या सिन्थोमाईसेटीन कैपशूल एक २ कैपशूल ६-६ घंटे दिन रात दें। इससे ज्वर ३-४ दिन में ही उतर जाता है किन्तु इसे बाद में भी ८-८ घंटे पर देते रहना चाहिये। यह मंथर ज्वर [टाईफाईड]

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है। बच्चों के लिए क्लोरोमाईसेटोन पामिटेड ससपेन्सन[जो मीठी होतीहै] आधी से १ चम्मच दिन में ४ बार पिलावें।

सन्निपात डिलेरियम

५१-शुद्ध हिंगुल, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध टंकण, कस्तूरी जावित्री, जायफल, काली मिर्च, छोटी पीपल प्रत्येक समान भाग इनको कपड़छन कर जल के साथ अच्छी तरह से घोंट कर १-१ रत्ती की गोली बनालें। मात्रा १ से २ गोली पान का रस अदरक का रस या मधु। अति भयंकर सन्निपात को नष्ट करता है।

५२-बेल गम्भारी, पाढल, अरनी; अरलू, शाल-पर्णी, पृष्टिपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गोखरू, प्रत्येक समान भाग जौकुट कर रखलें। साधारणतया यह क्वाथ सन्निपात, ज्वर, कास, श्वाँस, तन्द्रा, पार्श्व-शूल, शिरशूल शोथ, अनाह और अरुचिको नष्ट करता है। उपर्युक्त १५न० को औषधि खिलाकर ऊपरसे इस क्वाथ को पिला देने से सन्निपात की सभी अवस्थाओं में लाभ होता है। हम इस क्वाथमें प्रलाप (बकने) पर १ भाग बायबिडंग, १ भाग बायखुम्मा और मिलाते हैं। क्वाथ की मिलित दवायें २ तोला पानी ऽ। शेष ऽ— औटा छान ठंडा कर देवें।

५३-गिलोय का रस १ तोला, पीपल छोटी ४

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

रत्ती, शहद या अदरक रस में पिलाने से सन्निपात में लाभ होता है।

५४-कायफल, चूल्हे को मिट्टी, अरहड़ को दाल भूनी हुई, कौड़ो जली हुई कपड़छन कर सब शरीर पर मलनेसे शीतांग सन्निपातका पसीना आना दूर होता है।

५५-पोटास ब्रोमाईड ५ ग्राम क्लोरेट हाईड्रेट १ ग्राम, पानी ६ औंस ४ ग्राम २-२ घंटे में प्रलाप, बेचैनी, अनिद्रा आदि के लिबे है।

५६-क्लोरोमाईसेटीन कैपशूल—२ या १ कैपशूल ४ से ६ घंटे के अन्तर से।

५७-एक्रोमाईसेटोन कैपशूल—१ या २ कैपशूल ४ या ६ घंटे के अन्तर से।

५८-कोरीमीन १ सीसी सुबह सायंकाल मांसपेशी में नाड़ी क्षीण होने व हृदय की दुर्बलता में दें।

अतिसार इसहाल डायरिया-ज्वरातिसार

५९-अतीस कडुवा ४ रत्ती पानी में घिसकर या शहद में चाटें।

६०-लोध का कूर्ण १ माशे, ठंडा पानी या शहद के साथ चाटें तो अतिसार के दस्त बन्द हो जाते हैं।

६१-वेलगिरी, मोचरस, लोध, इन्द्रजौ, धाय के फूल, सब समान भाग से दुगुना गुड़ मिलाकर १-१ माशे की गोली बनालें। १ से २ गोली दिन में चार बार पानी से। सब प्रकार के अतिसार दूर होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

६२-आम की गिरी, भुना जोरा, सौंठ, वेलगिरी, सौंफ, नागरमोथा, पोस्त के डोरा सब समान भाग कपड़छन करके रख लो २ से ५ माशे तक पानी से दिन में चार बार सब प्रकार के अतिसार तथा प्रवाहिका में उत्तम लाभप्रद है।

६३-ईसबगोल को भुसी ३ माशे, खाँड़ ६ माशे, पोसकर रख लें। यह एक मात्रा है दिन में दो बार पानी के साथ। दस्तों में अवश्य लाभ होता है बिना खांड मिलाए पेचिश में लाभप्रद है।

६४-हड़ १ माशा, सौंठ १ माशा, पीपल २ रत्ती यह एक खुराक है। दिन में ३ बार सादा पानी से। आम को पकाकर अतिसार को दूर करता है।

६५-आइल सिलेमम २ बूंद, विस्मथ कार्ब १५ ग्रेन, सोड़ावाइकार्ब १५ ग्रेन, पल्वकोटाएरोमेटिक २० ग्रेन, स्प्रिट एमोनियाँएरोमेटिक २० बूंद, म्युसिलेजअकेसिया १ ड्राम, एकुआ १ औंस, दिन में तीन बार।

६६-एन्ट्रोवाइफार्म एक टिकिया, विस्मथकार्ब १० ग्रेन, मिल्कशुगर १० ग्रेन दिन में ३ बार।

६७-कंस्टरआइल एक औंस, क्लोरोडीन १५ बूंद मिलाकर दें आंतोंमें सुद्दे पड़ने पर विशेष लाभदायक है।

अमातिसार पेचिस डिसिन्ट्री

६८-हर्र का चूर्ण ३ माशे गर्म पानीसे तीन बार लें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

६९-इमली का रस एक तोला दिन में दो बार यदि पेचिस के साथ ज्वर हो तो लाभदायक है।

७०-बेल का गूदा ३ माशे या बेल का मुरब्बा ६ माशे तीन बार लें।

७१-अमरूद का पका फल खाना लाभप्रद है।

७२-अनार का रस दो-दो तोले दिनमें ३ बार लें।

७३-भांग धुली हुई ४-४ रत्ती पानीसे ३बार लें।

७४-कहरवा समई १-१ माशा पानी से दिन में ३ बार लेने से खूनी दस्त बन्द होते हैं।

७४-अरलू की छाल २ तोला। पावभर पानी में औटावें १ छटाँक रहने पर दोनों समय पीवें।

७६-हिंगुल शुद्ध २ तोले, नागरमोथा २ तोले, अहिफेन २ तो० इन्द्रजौ २ तोले, जायफल २ तोले, कपूर २ तोले। इन सबको महीन पीस अदरक रसकी भावना दें। फिर मूंग के बराबर गोली बना लेवें। मात्रा १-१ गोली ३ बार ठंडे पानी से।

७७-हड़ बड़ी का बक्कल १ माशा, सोंठ १ माशा सेंधा नमक २ रत्ती यह एक मात्रा है। दिन में ३ बार ठंडे पानी से दें। घोर प्रवाहिका भी इसके प्रयोग से दूर हो जाती है। प्रत्येक ज्वर ठीक कर देती है।

७८-कोटर आयल २ ड्राम, क्लोरोडीन ५ बूंद सैलोल ५ ग्रेन पल्व अकेसिया ३० ग्रेन; टिंचरकार्डको

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१० बूंद, सिरप जिंजर १ ड्राम, एक्वा मैथापिप १ औंस इमल्शन बन लें। ४-४ घटे में दें। रोगके आरभमें दें।

७९-ऐक्सट्रेक्ट वेला लिकुट १ ड्राम, ऐक्स०-कुर्चो लिकुड १ ड्राम, लाइकर हाईड्राईज पर क्लोराईड १० बूंद, सैलोल २ ग्रेन, पल्व गमअकेसिया ३० ग्रेन, विस्मथ कार्व १० ग्रेन टि० कार्ड को० १० बूंद, एक्वा क्लोरोफार्म १ औंस। इमल्शन बनावें। दिनमें ३ बार दें।

८०-सल्फे डायजीन या सल्फे ग्वायडीन-नवीन रोगमें पहले ४-४ गोलो बाद में १ से २ टिकिया ३-३ घंटेमें।

८१-क्लोरोमाईसेटीन १-१ कैपशूल ४ या ६-६ घंटे के अन्तर से।

८२-डोवर्स पाउडर ५ ग्रेन, सोडाबाई कार्व १० ग्रेन विस्मथ कार्व १० ग्रेन—ऐसी १ पुड़िया ३ बार पानीसे।

८३-थैलाजौल २ टिकिया दिनमें २बार पानी से।

८४-इमेटीन हाईड्रोक्लोर का इंजेक्शन मांशपेशीमेंदें।

अजीर्ण बदहजमी (इनडाईजेशन)

८५-मूली के पंचाग का रस २ तोला, मिश्री ६ माशे, भोजन के बाद।

८६-नीबू रस १ सेर, सेंधा नमक आधसेर; पीपल छोटो पावभर। पीपल को रस व नमक में ४ दिन भिगोवें। फिर छाया में सुखा लें। २ से ४ पीपल गर्म पानीसे भोजन के बाद। अजीर्णनाशक तथा पाचक है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

८७-सुहागा फूला ८ माशा, कालो मिर्च ४ तोला अजमायन ३।। तोला, मुसब्बर ४ तोला इन्हें पीसकर ग्वारपाठे के रस में खरल कर चने बराबर गोली बना लो ३-३ गोली गर्म जल से तीन बार। पेट को शुद्ध कर आध्मान, शूल तथा अजीर्ण नाशक है।

८८-सोडाबाईकार्ब १० ग्रेन, टि० वेलाडोना ५ बूंद, विस्मथकार्ब १५ ग्रेन टि० नक्सवोमिका ५ बूंद, मैगसल्फ २ ड्राम सिरपटोलू एक ड्राम एकुआ एक औंस २ मात्रा भोजन के बाद।

८९-टाकाडायास्टेज, पेप्टोडायास्टेज का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है।

९०-फैरीएटकुनीन साईट्रास १० ग्रेन, लाइकर-स्ट्रिक्नीन ५ बूंद एसिड हाइड्रोक्लोरिकडिल ५ बूंद, स्प्रिटक्लोरोफार्म १० बूंद जल एक औंस तीन मात्रा पांडु युक्त उदर शूल नाशक एवं अग्निदीपक है।

९१-एसिड सल्फ्यूरिकडिल २० बूंद, सोडा खाने का १ ड्राम झाग उठते ही दोनों समय भोजनके बाददें।

खांसी—कफ—दमकशी

९२-पीपड़ामूल १ तोला, गोंद बबूल १ तोला, सेंधानमक १ तोला, कांकड़ासिंगी १ तोला महीन पीस पानी के साथ चने बराबर गोली बनालें। दिन भर में ८ गोली तक मुंह में रख चूसें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

९३-अपामार्ग (ओंगा) पत्तों का रस १ माशे, शहद ६ माशे, मिला दिन में ३ बार पीवें।

९४-आँवला १ माशा, अदरक ४ रत्ती शहद में मिला चाटने से खांसी ठीक होती है।

९५-अनार का रस ६ माशे, नमक ४ रत्ती मिला ४ बार लें।

९६-अडूसा के पत्तों का रस १ माशा, शहद ३ माशे मिला दिन में ४ बार चाटें। खांसी नाशक है।

९७-आक की जड़ की छाल १ तोला, कालीमिर्च ४ तोला पानी के साथ चने बराबर गोली बनावें दिन में ३-४ गोली चूसें श्वांस,कफ की खांसी ठीक होतीहै।

९८-कटेरी की जड़ १ माशे, काली मिर्च ३ माशे पाव भर पानी में औटावें १ छटांक रहने पर पीवें दो बार लें।

९९-लोंग, काली मिर्च, बहेड़े का छिलका प्रत्येक १-१ भाग कत्था ३ भाग सभी का चूर्ण कर बबूल की छाल का काढ़ा कर छान उसमें घोट चने के बराबर गोली बनावें, १-१ गोली दिन में ४ बार चूसें सब प्रकार की खांसीमें लाभप्रद है। श्वाँस और कण्ठ रोगों में भी लाभ करती है। यही प्रसिद्ध लवंगादि बटी हैं।

१०१-काली मिर्च १ तोला, छोटी पीपल ६ माशा, जवाखार ६ माशा, अनारदाना ४ तोला, गुड़ ८ तोला।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

गुड़ को थोड़े पानी में घोल बाकी चीजों का चूर्ण कर खरल में महीन कर १-१ माशा की गोली बनावें। १ से तीन गोली दिन भर में मुंह में रखकर चूसें। सभी प्रकार की खांसी को दूर करतीहै। इसके अलावा प्रतिश्याय (जुकाम) कफ खाँसी में भी लाभ करती है।

१०१-कुलोजन २ रत्ती दिन में तीन बार पान में खाने से खांसी जाती है।

१०२-कायफल का चूर्ण ४ रत्ती शहद में मिला तीन बार चाटें कफ की खाँसी, श्वांस में लाभदायक है।

१०३-गौंदी के फल खाने से खाँसने से गला पड़ने को लाभकारी है।

१०४-बंशलोचन एक माशा, शहद ६ माशा के साथ चाटने से कफ ढीला होकर निकल जाता है दिन में तीन बार लें।

१०५-सौंठ, मिर्च पीपल सब बराबर लेकर चूर्ण करलें ४-४ रत्ती शहद में मिला चाटने से खांसी दूर हो।

१०६-काँकड़ासिंगी, भारगी, इलायची छोटी, वंशलोचन, सत गिलोय सब सामान भाग ले महीन चूर्ण करें। १-१ माशा दिन में तीन बार शहद में चाटें।

१०७-कुचला गाय के दूध में भून कर जला कर प्रातःकाल २ रत्ती खावें। सर्दी के मौसम में खावें खाँसी को फायदा करता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१०८-अकरकरा, मिर्चकालो, अदरक, भारंगी, सज्जी शुलाबी, कंजे की मिंगी १-१ माशा, पान सात अदद कूट छानकर चार-चार रत्ती क. गोली बनावें। प्रातः सायं एक-एक गोली खावें।

१०९-गाय का लोंनी घी १ तोला, मिश्री ६ माशे, मिला दो बार लें। सूखी खाँसी में लाभकारी है।

११०-सोडावाई कार्व ५ ग्रेन, एमोनियाँ कार्व ५ ग्रेन, वाइनमएपी वाक १० बूंद, सिरपटोलू २ ड्राम एकुआ क्लोरोफार्म १ औंस दिनभर में तीन खुराकलें। बलगम को पतला कर खाँसो को दूर करता है।

१११-ग्लाईकोडीन टपवसाका (२) सिरोलिन (३) ग्रीमाल्ट्स सिरप (४) रेसोल सिरप इनमें से किसी एक पेटेंट दवा का इस्तेमाल करें।

श्वांस-दमा-एस्थमा

११२-तुलसी की पत्ती ऽ-, कालीमिर्च १ तोला, इनको पीस कालीमिर्च के बराबर गोली बनालें। दिन में चार बार १-१ गोली खावें। श्वांस में लाभकारी है।

११३-अदरक का रस एक तोला, शहद एक तोला दिन में तीन बार खावें। श्वांस दबता है।

११४-लहसन की एक कली भूनकर नमक २ रत्ती मिला दो बार खावें। श्वांस में फायदेमन्द है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

११५-सत्यानाशी की जड़ का चूर्ण ४ रत्ती, शहद ६ माशा दिनमें ४ बार खावें। श्वांस जाती है।

११३–विसखपरा का रस ६ माशे, शहद ६ माशा, दिन में दो बार लें श्वांस नष्ट होती है।

११ –बेल के पत्ते २ तोला, पानी ऽ। औटावें एक छटांक शेष रहने पर प्रातः सायं पीवें। श्वांस नष्ट हो।

११८–सुदर्शन के पत्तों का रस ४ माशे, शहद ६माशे मिला दोनों समय पीवें। श्वांस नष्ट होती है।

११९–बहेड़े के ऊपर घी चुपड़ लीजिये फिर गोबर के बीच रख गोली बना भूभल में दाब दीजिये भुनने पर बहेड़ा का बक्कल मुख में रख चूसिये दिन में ४ बार खाँसी श्वांस में अत्यन्त लाभप्रद है।

१२०–आक के फूलों की कली ऽ= पोपल ऽ~ सेंधा नमक ऽ~ सबको घोंट पोस एक २ रत्ती की गोली बनालो एक २ गोली प्रातः सायं मधु अथवा गर्म पानी से लो। श्वांस रोग दूर करती है।

१२१–बंसलोचन ४ छटाँक, छोटी इलायची के दाने १ छटांक मिश्री दस छटांक। सब कूट-पीसकर रखलें। मात्रा १ माशे प्रातःकाल मक्खन, मधु, घृत के साथ। अत्यन्त सौम्य, शोतल, बलवर्द्धक, काश, स्वांस आदि रोगों को दूर करने में अपूर्व योग है। विशेषतया बालकों के लिए तो अत्यन्त फायदेमन्द है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१२२—अदरक का रस ऽ—, लहसन का रस ऽ—, प्याज का रस ऽ—, मधु, ऽ—, घीग्वार का रस ऽ—, इनको एक चीनी मिट्टी के पात्र में जमीन में गाड़ देते हैं। चौथे दिन निकाल छान बोतल में रख लेते हैं। मात्रा ३ माशा दिन में दो बार। १५ दिन से १ मास तक पिलावें।

१२३—पुटास आयोडाइड ५ ग्रेन पुटासवाई कार्ब १० ग्रेन, पुटासब्रोमाइड ५ ग्रेन, वाइनम एपी काक दस बूंद, सिरपटोलू एक ड्राम, एकुआ क्लोरोफार्म १ औंस ऐसी दो-तीन खुराकें दें।

१२४—एफेड्रीन हाईड्रोक्लोराईड की चौथाई या आधी ग्रेनकी गोली जिह्वा के नीचे रखने व सुबह, रात पानी के साथ लेने से श्वांस को अत्यन्त फायदेमन्द है।

१२५-ऐड्रीवेलीन क्लोराईड आधी सी. सी. मांसपेशी में इन्जेक्शन दें। दौरे की दशा में।

१२६—ऐड्रीनेलीन, विदफेड्रीन आधी सी. सी. मांसपेशी में दें। दौरे के समय।

१२७—मैक्राबिन एक सी. सी. (५० एम० जी०) रोजाना मांसपेशी में २० दिन तक बिना दौरे के समय रोग को पूर्णतया आरोग्य लाभ के लिये।

संग्रहणी—

१२८—बड़ी हड़ का चूर्ण ३ माशे शहद के साथ दो बार लें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१२९-बेल का गूदा ४ माशे अफीम आधी रत्ती मिला दिन में तीन बार लें।

१३०-अरलू की छाल का चूर्ण ६ माशा दिन में तीन बार पानी के साथ लें।

१३१-सेमर गोंद ३माशे, शहद ६माशे में मिलाकरलें।

१३२-मैथी का साग खाना भी लाभदायक है।

१३३-चित्रक का चूर्ण १ माशा पानी के साथ लें।

१३४-अजमोद पिसी हुई ३ माशे, काला नमक एक माशा मठा व दही के साथ लें।

१३५-केवल मठा पीना नमक, जीरा भुना, हींग भुनी डालकर पीना भी संग्रहणी में अत्यन्त लाभप्रद है। पानी के स्थान पर भी मठा ही पीवें।

१३६-मठा ६ सेर, अडूसा की जड़ की छाल एक सेर दोनों वस्तुओं को मिट्टी के बर्तन में बन्द कर छत पर रख दें। एक सप्ताह के बाद छानकर दोनों समय एक-एक छटाँक पीवें। संग्रहणी हरे।

१३७-पीपल की छाल एक तोला, मिश्री १ तोला पीसकर दो पुड़िया प्रातः सायं लेवें जल के साथ। संग्रहणी में आने वाले रक्त को रोकता है।

१३८-इमली का गूदा १ सेर, मिश्री ऽ।=, सेंधा नमक ऽ= जोरा भुना ३ तोला चूर्ण बना खावें। मात्रा—एक माशा पानी के साथ दिन में दो बार।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

अर्श–पाइल्स-बवासीर

१३९-कुचिला को घिसकर ४० दिन तक अर्श के मस्सों पर दोनों समय लेप लगाने से अर्श नष्ट हों।

१४ -अपना या गौ मूत्र से मस्सों को बार-बार धोने से मस्से नष्ट हो जाते हैं। यह प्रयोग एक मास तक करना चाहिए।

१४१-नौसादर ३ रत्ती, प्याज की गाँठ नग एक, दोनों को पीसकर मस्सों पर गुनगुना बाँधने से मस्से दूर हो जाते हैं।

१४२-बर्फ का टुकड़ा २ तोला, गुदा द्वार पर बाँधें। रक्तार्श का रक्त फौरन बन्द होता है।

१४३-बानर भिष्टा २ तोला की गुदा में धूनी दें अर्श में लाभकारी है।

१४४-नीम का पंचांग का रस २ तोला दोनों समय पीने से दोनों प्रकार की बवासीर अच्छी हो जाती है।

१४५-अपामार्ग के पत्तों का रस ६ माशे ११ काली मिर्च डालकर पीने से बातज अर्श ठीक होता है।

१४६-गिलोय का रस १ तोला दिन में तीन बार पीवें। दोनों प्रकार की बवासीर में लाभदायक है।

१४७-कंजा की मिंगी एक छटांक कालीमिर्च १ तोला दोनों को कपड़छन करले। मात्रा १ माशे से ३ माशे पानी के साथ दोनों समय लें, रक्त को रोके।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१४८–बबूल की पत्ती का रस २ तोला, मिंगी ६ माशे डालकर पीने से खूनी वबासीर दूर होती है।

१४९–कुकरौंधेके पत्ते का रस १ तोला, मिश्री ६माशे डालकर दोनों समय पीवे, बबासीर में लाभप्रद है।

१५०–गूलरके पत्तों का रस १ तोला, मिश्री ४ माशे डालकर पीने से पित्त की वबासीर में लाभप्रद है।

१५१–केला के पत्तों का रस १ तोला, मिश्री ६माशे डाल पिलावें। खूनी बबासीर में लाभ होता है।

१५२–मूली का रस १ तोला तीन बार पोवे तथा मस्सों पर लगावें दोनों प्रकार की बबासीर को लाभकारी है। मूली का साग खाना मुफीद है।

१५३–हारसिंगार के पत्तों का रस १ तोला, मिश्री ६ माशे दोनों समय लें। दोनों प्रकार की वबासीर को लाभ करता है।

१५४–बिसखपरा की टिकिया बना मस्सों पर बांधे अर्श को लाभ करता है।

१५५-वनगोभी को पीस टिकिया बना मस्सोंपर बांधे।

१५६–पागल बूंटी जो ज्वार-बाजरे के खेत में होती है २ तोला ११ कालीमिर्च के साथ पोस ठंडाई कर पीवें। अर्श जड़ से ठीक हो जाती है।

१५७–वकायन की मिंगी, नीम की मिंगी का चूर्ण तीन २ माशे तीन बार पानी के साथ लें बबसीर को

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

लाभकारी हैं ।

१५८—गेंदा की पत्ती टिकिया बाँधने से व पत्ती का रस एक तोला दोनों समय पीने से रक्तार्श दूर होता है ।

१५९—सोंफ ऽ। पानी एक सेर शेष ऽ।। चीनी ऽ।। डाल शर्बत बनावें । एक २ तोला सुबह शाम पीने से दोनों प्रकार की वबासीर ठीक होती है ।

१६०—धनियां २ तोला १।। पानीमें भिगोवें २ तोला मिश्री मिला दो बार पीवें, वबासीर का खूद बंद हो ।

१६१—कपूर पीस कर रखलें । मात्रा १।।-१।। माशे ताजे पानी के साथ पीने से दिन में तीन बार पीवे वबासीर ठीक हो जाती है ।

१६२—मदार का दूध मस्से पर लगाने से मस्सा कट जाता है मस्सा कटने पर सफेदा १तोला, राल ६ माशे, एक छटांक लौनी घी को कांसे की कटोरी में २१ बार घो मिला मरहम बना मस्से कटने को जगह पर लगावे

१६३—भाँग का वफारा मस्सों पर लगाने से दोनो प्रकार की वबासीर में गुण करता है ।

१६४—ओंघाहोली का चूर्ण एक छटांक मिंगी एक छटांक मात्रा एक तोला तीन बार ठंडे पानी से खूनी बवासीर ठीक हो जाता है ।

१६५—कला मौंगरा का रस एक तोला, शहद ६ माशे डालकर दो बार लें । अर्श को गुणकारी है ।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१६६-गाल को पीस कर पानी तथा अलसी के तेल में भली प्रकार मिला कर लगावे। इससे दाह तथा वेदना की शान्ति होती है।

१६७-भाँग तथा मैंहदी की पत्ती जल में पीसकर अर्श पर बाँधने से दाह, वेदना तथा रक्तस्राव में लाभ हो।

१६८-रक्तार्श की शान्ति के लिए नागकेशर असली ३ माशा मक्खन तथा मिश्री के साथ प्रातः सायं लेना तथा योग संख्या १५५ की टिकिया बांधने से लाभहो।

१६९-निम्बौली, रसौत बीजाबोल, जमीकन्द, बकायन के बीज, बड़ी इलायची, कलमी शोरा, धनियाँ इन सबको सम भाग लेकर सूली के रस में घोंट कर एक माशा की गोली बनावें। २-४ गोली दिन में तीनबार जल के साथ लेने से रक्तार्श में शीघ्र लाभ होता है।

१७०-क्रीम आफ टार्टर ३० ग्रेन,सल्फर सब्ली मेटस ३० ग्रेन ऐसी एक पुड़िया दूध के साथ दो बार।

१७१-टैनिक एसिड मलहम आधा ड्राम, स्ट्रैमोनियम मरहम आधा ड्राम, बेलाडोना मलहम आधा ड्राम-अर्श को सुखाने के लिए भीतर के अर्श पर लगावें।

१७२-एच. पी. आयन्टमैंट। इसमें एक नली लगी रहती है। उसको सहायता से मस्सों पर लगावें।

१७२-हैडेन्सा मरहम। मस्सों पर लेप करें।

१७४-जाइलोकेन मरहम। यह दवा संज्ञानाशक

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

होती है अतः गुदा में लेप करने के साथ ही पोड़ा और क्षोभ शांत होता है।

१७५-वैलीन्स गोलियां सेवन करें मुख से ।

१७६-पाइलेस गोलियां मुखसे १-१गोली ३ बार लें

१७७-ग्लीसरीन कार्बोलिक एसिड १० प्रतिशतकी १ से ४ बूंद का इंजेक्शन मस्सों में लगावें। ५-६ इन्जेक्शन लगाने से बिल्कुल सूख जाते हैं।

कफ (कांस) कफ का ज्यादा जाना

१७८-तुलसी की पत्तो ११ कालीमिर्च ५ नग मिला कर खाने से कफ की बीमारी जाती है।

१७९-बड़ी हर्र का ववकल ३ माशे, बहेड़ा का वक्कल ३ माशे, शहद के साथ तीन बार खाने से कफ की बीमारी नष्ट होती है।

१८०-मछेड़ो जड़ सहित ३ माशे, कालीमिर्च ११ नग के साथ दो बार खाने से कफ की बीमारीअच्छीहो।

१८१-कंजा की पत्तो; एक माशा, कंजा की मिंगी एक माशा, काली मिर्च ३ माशे मिला पीस खाने से कफ की बीमारी आराम होती है।

१८२-मेढ़ासिंगी ऽ-, अडुसा की पत्ती ऽ- दोनो को पीस झड़वेरी के बराबर गोली बनालें। १ से ४ गोली दिन में ३ बार खिलावे। कफ की बीमारी ठीक हो।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१८३–घीग्वार का गूदा एक तोला खावें २ बार कफ, पित्त की बीमारी तथा सूखी खांसी अच्छी होती है।

१८४–कत्था एक तोला, अकरकरा एक तोला पीस-रखलें एक माशा शहद में मिला दिन में दो बार खाने से कफ की बीमारी जाती रहती है।

१८५–निसौथ सफेद ३ माशे पानी से खालें दस्त के रास्ते कफ को निकाल देती है।

१८६–पीपड़ामूल गाँठ का एक तोला, गुड़ ५ तोला दोनों को मिला कूट, कमलगट्टे के बराबर गोली बनालें। दिन से २-२ गोली व रात को एक गोली मुंह में रखकर सो रहें कफ ठीक होता है।

१८७–वायबिडंग का चूर्ण ३ माशे, शहद ६ माशे में मिला दिन में ३ बार खिलावें। कफ की बीमारी ठीक होती है।

१८८–मूली का रस ६ माशे, नमक एक माशे मिला दिन में दो बार पीवें, कफ की बीमारी ठीक होती है, सूखी खांसी ठीक होती है।

१८९–छोटी कटेरी का चूर्ण ३ माशा शहद के साथ खाने से कफ की बीमारी जाती है।

१९०–अंडी के पत्तों का रस ६ माशे नमक ४ रत्ती मिला खाने से कफ में आराम होता है।

१९१–कांयफल ऽ–, कालीमिर्च २॥ तोला, मिला

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

चूर्ण करें ३ माशे शहद में मिला तीन बार लें । कफ की बीमारी नष्ट होती है ।

१६२-अदरक का रस एक तोला, शहद एक तोला मिला पीवें कफ की बीमारी जाती रहती है ।

१६३-छोटी पीपल ऽ-, अजमोद ऽ- मिला कूट पीस लें । तीन-तीन माशा शहद में मिला तीन बार ले । कफ की बीमारी ठीक होती है ।

१६४-कपूर कचरो पीस कर रख लें । जरूरत के समय २ से ४ रत्ती पानी के साथ दें । छर्दि एवं जी मिचलाना दूर होता है ।

१६५-बरगद की डाढ़ी लेकर जला रख लें, जितनी जली भस्म हो उसके बराबर मिश्री मिला कर रखलें। आवश्यकता के समय एक माशा पानी के साथ दें। वमन एवं जी का मालिश करना शमन हो जाता है ।

१६६-कपूर एक तोला, सत अजवायन एक तोला, पीपरमेंट एक तोला इन चीजों को मिला शीशी में रख लें यह जलवत् हो जावेगी मात्रा ५ बूंद से १५ बूंद तक पानी या खांड़ में मिला कर । प्रत्येक प्रकार की वमन हैजा, दस्त होवा, जो मालिश करने में आशु-फलकारी है ।

१६७-पीपल की छाल चूल्हे में जला पानी में बुझा दें

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

कै के रोगी को यही पानी छानकर पीने को दें छर्दि में विशेष उपयोगी है।

१ ड्रॉप आइडाफोन (अंग्रेजी दवा) २ बूंद से २० बूंद तक पानी में मिला कर दें। वमन, अतिसार (दस्त) पेट का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त बन्द हों।

१९९-बड़ी इलायची भुनी नग २ शहद ६ माशे में मिला चाटें छर्दि, प्यास उबाकी को दूर करती है।

२००-गिलोय का चूर्ण एक तोला, जल ८ इन दोनों को मिट्टी के बर्तन में रात को भिगोदें। प्रातः मलकर जल को छान ६ माशा मधु मिला रोगी को थोड़ा-थोड़ा पिलावें कष्ट साध्य वमन आराम होती है।

२०१-इलायची नागकेशर, फूलप्रियंगु, धान का लावा पीपल लौंग, बेर की गुठली की मिंगी, नागर-मोथा, सफेद चन्दन सब समान भाग लें। कपड़छन करलें। मात्रा ३ से ६ माशा। मधु, मिश्री के साथ ३ बार दें। छर्दि वमन को दूर करता है।

२०२-कालीमिर्च एक तोला, सफेद जीरा एक तोला, काला नमक एक तोला कपड़छन चूर्ण कर एक तोला मिश्री मिला रखें। मात्रा ३ से ६ माशा मधु के साथ लें। प्रातः तथा सायंकाल तत्काल वमन बन्द होती है।

२०३-पुटासवाई कार्ब १० ग्रेन, स्प्रिट एमोनियां, ऐरोमेटिक १५ बूंद, एसिड हाईड्रोसायविकडिल ४

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

बूंद, लाईकर विस्मथ २० बूंद स्प्रिट क्लोरोफार्म १० बूंद, जल एक औंस यह एक मात्रा है । ऐसी ३ खुराक दिन भर में दें।

२०४-स्प्रिट क्लोरोफार्म १० बूंद, स्प्रिट एमोनियां ऐरोमेटिक १० बूंद टि० कार्ड को दस बूंद टिंचर आयोडीन (रेक्टोफाइड स्प्रिट से बना हुआ) २ बूंद, सिरपग्लूक्लोज १ ड्राम एकूआ ऐनोसी १ औंस यह एक मात्रा है । दिन भर में ३ मात्रा दें।

२०५-राई दो तोला, कपूर ६ माशा जल के साथ पोस पेट पर घी लगा ५-७ मिनिट तक लेप रखना छर्दि को बन्द करता है।

श्लेष्म रोग

२०६-तुलसी के पत्तों का रस ६ माशे, काली मिर्च १ माशा दिन में तीन बार चाटें।

२०७-झाऊ की पत्ती १ तोला, पानी ऽ। शेष ऽ- शहद ३ माशा डाल कर पीवें दोनों समय।

२०८-कायफल का चूर्ण १ माशा, ६ माशा शहद डाल कर चाटें दिन में दो बार श्लेष्म ठीक होता है।

जलोदर (जलंधर) इस्तिस्का उलू वारीतून एसाइटीज

२०९-पीपल छोटी ५ तोले, थूहो क्षीर (सेंहुड़ का

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

दुग्ध) १० तोला पीपल का चूर्ण कपड़छन करथूअर के दूध में पीस लें। मिट्टी सी हो जाने पर तब चना से जरा बड़ी वटी बनावें और छाया में सुखालें। दो गोली प्रातः दो रात्रि को ऊटनी के गर्म मीठे दूध के साथ दें। ऊटनी का दुग्ध न मिले तो गाय के दूध से दे। भोजन में जल और लवण न लें। मुनक्का या मिश्री थोड़ी खालें। एक मास सेवन करें। इससे ५-७ दस्त रोज होंगे यदि ज्यादा दस्त हों तो एक ही बार सेवन करें। जब प्रयोग आरम्भ करें तो फीते से पेट को नाप लें पेट घटता जावेगा।

२१०-कचनार की जड़ की छाल १ तोला पानी ऽ। शेष ऽ~ शहद एक तोला डालकर एक बार पीवें।

२११-अजवायन ऽ। पांचों नमक ५ तोला सब को कपड़छन करलो मात्रा ६माशा गर्म पानीसे दोनोंसमय।

२१२-इन्द्रायण की जड़ दो तोला पानी ऽ। शेष ऽ~ शहद १ तोला डालकर एक बार पीवे दस्त के द्वारा पेट को हल्का करता है।

२१३-बरगद के पत्तों का रस १ तोला शहद ६ माशे ३ बार लें। साथ ही बरगद के पत्ते तेल में चुपड़ गुन-गुने कर रात को पेट पर बांधें जलंधर में गुणकारी है।

२१४-कुकरौंधा की जड़ दो तोला पानी ऽ। शेष ऽ~ शहद १ तोला डाल दोनों समय पिलावें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

२१५–कुकरौंधा की जड़ २ तोला, पानी ऽ। शेष ऽ– शहद १तोला डाल दोनों समय पीवें रोग नष्ट होताहै।

२१६–करील की जड़ का रस ६ माशे, शहद ६माशे डाल दोनों समय पीवें। दस्त के द्वारा पेट के पानी को निकाल रोग दूर करता है।

२१७–नगंदबावरी का चूर्ण ऽ। काला नमक १ तोला डालकर कपड़छन करें। ६-६ माशे ३ बार लें गर्म जल से। यह बूँटी खाकर साँप केंचुली छोड़ देता है।

२१८–टिंचरडिजीटेलिस एक ड्राम, लाईकर एमोनियां एसेटेटिस एक ड्राम स्प्रिट ईथर नाईट्रोसी २ ड्राम, सिरपटोलू ४ ड्राम, एकुआ क्लोरोफार्म ३ औंस, एक ड्राम ३-३ घंटे में बच्चों के लिये।

२१९–कोपेबारेजिन १५ ग्रेन, पल्व गम अकेसिया ३० ग्रेन, पुटास साईट्रास २० ग्रेन, स्प्रिट रैक्टीफाईड २० बूंद सिरपजिंजर १ ड्राम, एकुआ मेंथापिप १ औंस ऐसो एक मात्रा ३ बार (प्रकृति रोग के कारण)।

२२०–यूरिया ४ औंस-विधि ४ ड्राम दिनमें २-३बार।

२२१-एमीनोफाइलीन [टिकिया] एक शीशी। विधि १-२ टिकिया दिन में तीन बार।

२२२–नेप्टल [टिकिया], मर्कलोरन (टिकिया), डायमौक्स (टिकिया) इनमें से किसी एक दवा की टिकिया दिन में १-२ बार।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

२२३–नेपटोल का इन्जेक्शन भी दिया जा सकता है मांसपेशी में इससे पेशाब के द्वारा पानी निकल जाता है, शीत हो वह भी दूर होजाता है। पर इंजेक्शन देते समय ध्यान रक्खें अन्दर (गुर्दे) में खराबी न हो।

शोथ-सूजन ड्रोसी और ईडिया

२२४–कंजा के फल की मिंगी ऽ– कालीमिर्च एक तोला पीसकर ४ माशे गुनगुने पानी से ४ बार लें।

२२५–मकोय का रस दो तोला; शहद एक तोला डाल तीन बार पीवें। वात, शोथ नष्ट होता है।

२२६–पुनर्नवा (सांठ) का रस एक तोला, शहद ६ माशे डाल तीन बार पिलावें। शोथ नाशक है।

२२७–उशवा दो तोला, पानी ऽ। शेष ऽ= छा. कर १ तोला शहद डाल दो बार पीवें शोथ एवं रक्त शोधक है।

२२८–चिरायता २ तोला, पानी ऽ शेष ऽ= में शहद १ तोला डाल दो बार पीवें। शोथ नष्ट होता है।

२२९–मैथी को भून लें। ६ माशे मैथी, ६ माशे गुड़ मिला दो बार लें। शोथ नाशक है।

२३०–काला जीरा ऽ।, बाला नमक २। तोला, चूर्ण बनालें। ४ माशे गुनगुने पानी से तीन बार लें। शोथ को दूर करता है।

२३१–अंडी का तेल [साफ किया] हुआ दो तोला

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

दूध ऽ। में मिला सुबह-रात पीवें। शोथ दूर होता है।

२३२–अंडो के पत्तों का रस २ तोला, शहद ६ माशे डाल दोनों समय पिलावें। शोथ नष्ट होता है।

२३३–देवदारु २ तोला, पानी ऽ। शेष ऽ= एक तोला शहद डाल दो बार पीवें। शोथ में लाभ कर है।

२३४–अजवायन ऽ।, अजमोद ऽ।, सोंठ ऽ।, सोंफ ऽ।, मकोय ऽ।, ६ सेर पानी डालकर भवके से अर्क खींचे, मात्रा-२।। तोला दिन में तीन बार। शोथ नाशक है।

२३५–करील के फल (टेंटी) ऽ– सुखाकर पीसकर रखलें। मात्रा एक माशे से ४ माशे तक गुनगुने पानी से। शोथ हर है।

२३६–गोरखमुंडी २ तोला, सेंधा नमक २ तोला, जल ४ सेर को क्वाथ करें। १ सेर रहने पर छानलो, इसीको ३-५ दिन तक पिलावें। शोथ को मिटाताहै।

२३७–मकोय के पत्ते ऽ।, सोंठ ऽ।, गेरु, ऽ= पानी में मिला पीसें, गर्म कर लेप करें। शोथ को मिटाता है।

२३८–श्वेत पुनर्नवा का जौकुट पंचाग आधा सेर, जल ४ सेर इनका क्वाथ करें १ सेर जल शेष रहने पर छानलें। इस क्वाथ में १ सेर मिश्री, १ छटांक शोरा कलमी मिलाकर तीन बार छानलें और बोतलमें भरदें। मात्रा २ तोला प्रातः सायंकाल। यह उपद्रव-युक्त शोथनाशक है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

२३९–पुनर्नवा २ तोला, हल्दी १ तोला, दारु हल्दी २ तोला सोंठ २ तोला, पीपल १ तो०, चित्रक १तो० गिलोय १ तोला, पाढ़ल १ तोला, कटेरी २ तोला, अतीस १ तोला, गोखरू १ तोला, एकत्र कपड़छन कर चूर्ण कर रखना मात्रा एक माशा गौमूत्र के साथ प्रातः सायं । शोथ को विनाश करता है ।

२४०–सूखी मूली, त्रिफला, वायबिड़ंग, सोंठ, पीपर, दन्तीजड़, नागर मोथा, काली मिर्च, चिर चिरी, चीते की जड़ प्रत्येक १-१ तोला कपड़छन चूर्ण करलें । मात्रा ३ माशा, वेल के पत्तों का रस ६ माशा, शहद ६ माशा मिला पिलावें, प्रातःकाल । शोथ नाश करता है ।

२४१–मंडूर भस्म (गौ मूत्र की भावना युक्त) दो रत्ती मधु ६ माशे, श्वेत पुनर्नवा का रस ३ माशे पिलावें, प्रातः सायं शोथ को शीघ्र नष्ट करता है ।

२४२–ऐक्सट्रेक्ट पुनर्नवा लीकड् एकड्राम, एमोनियाँ क्लोराईड १५ ग्रेन, पुटास एसीटास १५ ग्रेन, टिं० ड्रिजोटेलिस ५ बूंद, स्प्रिट जूनिपर ३० बूंद मैगसल्फ १॥ ड्राम, जल १ औंस दिन में ऐसी तीन मात्राःमूत्रक, रेचक एवं शोथ का उत्तम योग है ।

२४३–नेपटाल का मांसपेशी में इन्जेक्शन दें या १-१ गोली दो बार पानी से दें ।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

प्लीहा-तिल्ली-जिगर-यकृति-लीवर रोग पर

२४४—कंजा की मिंगी ३ माशे, कालीमिर्च ३ माशे, तीन बार पानी से लें।

२४५—इमली के बीज ६ माशे पानी के साथ दो बार लें।

२४६—सहदेंई का चूर्ण ६ माशे, कालोमिर्च एक माशा गुनगुने पानी के साथ लें।

२४७—ऊटकटेरी की जड़ कपड़छन करके ६ माशे सुबह-शाम शहद में मिला खावें।

२४८—मकोय का रस १ तोला, शहद ६ माशे मिला दो समय लें। यकृति प्लीहा की सूजन ठीक होती है।

२४९—अरणी के बीज ऽ नमक काला १ तो०-कपड़ छन कर रखलें। मात्रा ४ माशे गुनगुने पानी के साथ दो बार यकृति—प्लीहा ठीक होती है।

२५०—कुमारी (ग्वारपाठे) का गूदा १ तोला शहद ६ माशे मिला सुबह-शाम लें। तिल्ली ठीक हो।

२५१—आकाश वेल ऽ१ पानी आठ सेर रात को भिगोदें। सुबह भवके से अर्क निकाल लें। मात्रा २॥ तो० ६ माशे शहद डाल दिनमें तीन बार लें। यकृति-प्लीहा को लाभकारी हैं। आकाश वेल को पीस गर्म कर लेप करने से सूजन में भी लाभ होता है।

२५२—झाऊ के पत्ते ऽ। काला नमक १॥ तो० मिला

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

कपड़छन करलें। मात्रा ६ माशे सुबह-शाम गर्म पानी के साथ लें। यकृति-प्लीहा ठीक होता है।

२५३—अंजीर के पके फल खाने से रोग ठीक होताहै।

२५४—आक की जड़ की छाल ४ रत्ती, शहद ६माशे मिला तीन बार लें। यकृति प्लीहा में लाभप्रद है।

२५५—नौसादर २ रत्ती, लोह भस्म १ रत्ती पीपल क्वाथ के साथ दो बार। यकृति शोथ नाशक है।

२५६—समुद्रफेन चूर्ण ४ रत्ती, सौचरनमक चूर्ण ४ रत्ती, रोहिड़ा जड़का क्वाथ २ तोला सुबह शाम लें। यकृति, प्लीहा वृद्धि को दूर करती है।

२५७—बोल २ तोला, पीपल की लाख २तोला, नाग-केशर १ तोला, सोंठ १ तोला कपड़छन करलें। मात्रा-तीन माशा मधु के साथ दो बार यकृति शोथनाशकहै।

२५८—हल्दी चूर्ण ६ रत्ती, काला नमक ३ रत्ती, ग्वार पाठे का रस १ तोला मिला प्रायः सायंकाल लें। यकृति प्लीहा विकार को ठीक करती है।

२५९—मैगसल्फ २ ड्राम, कुनीन सल्फ ३ ग्रेन फैरी सल्फ २ ग्रेन एसिड सल्फ्यूरिक डिल ५ बूंद, एकुआ मैंथा १ औंस यह एक मात्रा है। सुबह-शाम दो बार लें यकृति प्लीहा को ठीक करने में लाजवाब दवा है।

२६०—लीवर क्योर (२) लीवर जिन (३) लिवटीन टेबलेट (४) मीकोसिन। तिल्लीके लि॰ (१) पाइरेक्स

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

(२) क्वीनाक्वीन (३) किनार्सोल (४) ईमेनोफील-इन पेटेन्ट औषधियों में से किसी एक दवा का सेवन करें।

२६१—किनार्सोल एक से २ सी. सी. का इन्जेक्शन सप्ताह में दो बार मांस में (२) कुनीन बाई हाईड्रा-क्लोराइड इन्जेक्शन (५ ग्रेन) तीसरे दिन मास में। (३) कुनीन-आइरन आर्सनिक दो सी.सी. का इन्जे-क्शन मांस में तीसरे दिन (४) लीबर ऐक्सट्रिक बिद विटामिन डी. ए.ड सी. मांस में हर तीसरे दिन खून की कमी होने पर। उपरोक्त इन्जेक्शनों में से एक इन्जेक्शन लगाना चाहिए।

गुल्म—उदर रोग—कौलक पेन

२६२—अजमायन ७।। तोले, रसौत ७।। तोले, पीपल ७ तोले, सेंधा नमक ५ तोले, काला नमक २।। तोले, सुहागा भुना ४ तो०, शुद्ध कुचला ४ तोले—उपरोक्त सभी चीजों को बारीक पीसलें। १ माशे से १।। माशे तक गर्म जल से दें। उसी समय दर्द दूर हो जावेगा। एक बार बन्द न होने पर दूसरी बार दें।

२६३—नीबू का रस १ तोला, मधु ३ माशा, जवाखार ३ माशा मिलाकर देने से भयंकर शूल भी नष्ट हो।

२६४—तीन वर्ष पुरानी सरकंडे की जड़ १ तोला, चौलाई १ तोला, पानी ऽ। शेष ऽ— क्वाथ कर छान पिलावें। उदर रोग नाशक है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

२६५–चौलाई की जड़ १ माशा गर्म जल से लें। उदर रोग नष्ट होता है।

२६६–कुटकी ऽ=, नीम की छाल ऽ=, इन्द्रायण की जड़ ऽ=, कटेरी की जड़ ऽ=, उसबा ऽ=, बबूल की फली ऽ=, रतनजोत ऽ=, हड़ का छिलका ऽ– लेकर १२ सेर पानी में ऽ॥ गुड़ डाल क्वाथ करें। चार सेर शेष रहने पर छानकर रखलें। मात्रा ऽ– छटांक से ऽ= तक दोनों समय। उदर रोग दूर हो।

२६७–कुमारी (ग्वारपाठा) गूदा १ सेर, अर्क भस्म १ सेर, नमक ५ तोला, सज्जी खार (खाने का सोडा) ऽ–, अजवायन ऽ=, पानी ८ सेर पाताल यंत्र से अर्क निकालें मात्रा १तोला से १। तोला तक। उदररोग दूर हो।

२६८–नीबू का रस १ सेर, भुना सुहागा ऽ= पीली कौड़ी ३० नग इन सबको कांच के बर्तन में भर मुख मुद्रा कर धान्य राशि में १५ दिन दबा दें। मात्रा १ तो० उदर रोग, गुल्म, प्लीहा नष्ट होती है।

२६९–एक बोतल में साफ पानी या बर्फ का धुला हुआ पानी भर दीजिए फिर उसमें गन्धक का तेजाब ऽ– डाल दीजिये, फिर नौसादर उड़ा हुआ ५ तोला, कालीमिर्च ५ ताला, नमक ५ तो० हींग भुनी ६ माशे कूट कपड़छन कर मिला कर रख दीजिए और बोतल में पानी कम हो तो उसे भर दें। ५ से ३० बूंद तक

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

दो तोले पानी में मिला कर कांच पात्र में पिलावें। इससे पेट का दर्द यकृति प्लीहा वृद्धि पतले दस्त अजीर्ण शान्त हो जाता है। दिन में तीन बार दें।

२७०—ईख का रस बीस सेर बड़ी हड़ का छिलका, बहेड़ा का छिलका, प्रत्येक ४० तोला, सनाय की पत्ती १० तोला, विडनमक ५ तोला, सेंधा नमक ५ तोला। एक मिट्टी के बर्तन में पहिले ईख का रस भरदें फिर बाकी वस्तुओं को जौकुट कर डाल दें। और मटके का मुंह बन्द कर १ मास रखदें। १ मास बाद निकालकर कपड़े से छान बोतल में भरदें। पेट दर्द के समय एक या २ तोले अर्क और उतना ही पानी मिलाकर पिला दे। दर्द बन्द हो जावेगा। गुल्म और तिल्ली में भोजन के बाद दोनों समय दें। अवश्य लाभ होता है।

२७१—फ्रूट साल्ट या एनाज साल्ट थोड़े से पानी में एक चम्मच मिला झाग उठते ही पीवें। उदर शूल तत्काल नष्ट होता है। दस्त साफ लाता है।

२७२—मदार का दूध बायगोले पर लाभ करता है।

२७३—विसखपरा का चूर्ण ४ माशे शहद ६ माशे में चाटें।

उदावर्त—रोग पर

२७४—निसौत २ तो०, पीपर ४तो०, मिश्री ८ तो०, इनका कपड़छन चूर्ण कर रखलें ६ माशा शहद के साथ

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

दोनों समय। उदावर्त को शान्त करता है, विवन्ध नाश में उत्तम है।

२७५—निसौत १ तोला, हड़ का छिलका ५ तोला, इन सबका कपड़छन चूर्ण कर सेंहुड दूध में खरल कर चने के बराबर गोली बनावें। मात्रा १ गोली गर्म दूध या गर्म जल के साथ प्रातः काल। विवन्ध नाश कर उदावर्त नाशक है।

२७६—एरण्ड तेल (साफ किया हुआ) आधा छटाँक गर्म दूध डेढ़ पाव प्रातःकाल दस्त कराकर उदावर्त, आध्मान तथा अनाह नाशक है।

२७७—जवाखार ५ तोला, हींग १ तोला, चीता ५ तो०, अम्लवेल ५ तो० इन सबका कपड़छन चूर्ण करलें। मात्रा-३ से ६ माशा गर्म जल के साथ। शुष्क मल को ढीला करके निकालती है। अत्युत्तम है।

२७८—शंख भस्म ४ रत्ती, गुड़ १ तो०, दो बार लें। उदावर्त अवश्य नष्ट होता है।

आनाह—अफरा

२७९—कन्जा की मिंगी का चूर्ण ४ माशा, शहद के साथ चाटें।

२८०—अडूसा की जड़ दो तो०, पानी ऽ शेष ऽ क्वाथ करें १ तो० शहद डाल पीवें तो अफरा दूर होता है।

२८१—जीरा भुना ६ माशा, नमक काला ३ माशा,

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

गर्म पानी के साथ फक्को करें । अफरा नाशक है ।

२८२-मैन फल ४ तो०, गच ½ तो०, पीपल ४तो०, कूट ४ तो० सफेद सरसों ½ तो० इनका कपड़छन चूर्ण करलें फिर इसमें गुड़ ८० तोले मिला दूध में पोस छोटी उँगली के बराबर बत्ती बनालें । बत्ती जरूरत के समय गुदा में रखलें । यह विवन्ध को दूर कर गुदा दर्द, उदर दर्द तथा अनाह नाशक है ।

२८३-सोडावाई कार्व १० ग्रेन, सोड़ा साई ट्रास १० ग्रेन, टि० कार्ड को० १० बूंद, टि० बेलाडीना ५ बूंद, टि० कैप्सीकम दो बूंद, इन्फ्यूजम जेंसियन १ औंस, दिन में तीन बार-दीपन, पाचन तथा वातानुलोधक है ।

२८४-ग्लेसरीन की बत्ती गुदा मे रक्खें । १० मिनट में दस्त लाकर अनाह (अफरा) को दूर करती है ।

वात रोग पर

२८५-सोंठ ऽ- विधारा ऽ- मालकांगनी ऽ- सबको कपड़छन कर दूध या गर्म पानी के साथ ६ माशे सुबह शाम खावें । इससे सब प्रकार की बात नष्ट होतीहै ।

२८६-बेल की जड़ २तो० पानी ऽ। शेष ऽ- क्वाथ कर छान सुबह शाम पीवें । इससे वायु रोग नष्ट होतेहैं ।

२८७-मेहदी के बीज ऽ= तेल मीठा ऽ। पका छान लें । इसके लगाने से वायु रोग शमन होता है ।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

२८८–धतूरे के फल ऽ=, धतूरे के पत्तों का रस ऽ। तेल मीठा ऽ।। में पकावें, तेल मात्र रहने पर छान कर रखलें। इसके लगाने से वात रोग अच्छा होजाता है।

२८९–मदार का दूध या पत्तों का रस दर्द पर लगावें। वायु रोग शमन होता है।

२९०-महुआ के फल ३ माशा सुबह शाम खाने से वायु रोग अच्छा होता है।

२९१-अरनी की जड़ ऽ।। पानी ८ सेर भवके से अर्क खींचे। मात्रा ५-५ तोला सुबह-रात इससे गठिया बाय अच्छी होती है।

२९२-घी ग्वार का रस ऽ।। सेर, तेल मीठा १ सेर पकावें तेल मात्र रहने पर छान लगावें। इससे पित्त सम्बन्धी वायु नष्ट होती है।

२९३-इन्द्रायण की जड़ ऽ। तेल मीठा ऽ१ पकावें। पकने पर छान लें। इसके लगाने से वायु दर्द दूर हो।

२९४-बावूना ऽ= पानी ऽ।। शेष ऽ। तेल मीठा ऽ१ में डाल पकावें, तेल मात्र रहने पर छान लें। इसके लगाने से वायु जाती है।

२९५-भिलावा ऽ=, मोम ऽ–, धतूरे के पत्ते ५० नग, आक के पत्ते ५० नग। सबको पीस पानी डाल टिकिया बनावें। जलने पर छान कर लगावें। सब प्रकार के वायु रोग को दूर करता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

आमवात-गठिया-रिमीटक

२९३-सोंठ, सितावर, कपूर, पुनर्नवा, गिलोय, गोरख मुण्डो, देवदारु प्रत्येक १-१ तोला, कपड़छन चूर्ण करलें। मात्रा ३ से ६ माशा दोनों समय काँजी के साथ। भोजन के बाद।

२९७-रास्ना, गोखरू, गिलोय, देवदार, पुनर्नवा, अमलतास का गूदा, अंडी की जड़ प्रत्येक १-१ तोला। इनको जौकुट करे। २ तोला द्रव्य पावभर पानी में क्वाथ करें, १ छटांक रहने पर २ माशा सोंठ चूर्ण मिला रोगी को पिलावें, दोनों समय उत्तम है। वायुनाशार्थ।

२९८-कुचला शुद्ध २ रत्ती, ऐस्प्रीन ४ रत्ती, सोड़ा सेली सिलास ४ रत्ती यह एक मात्रा है। ऐसी दिन भर में ३ खुराक दें। प्रत्येक प्रकारका वायुदर्द दूर हो।

२९९-जीवतिक्त सी (विटामिन सी) १०० मि. ग्राम दिन में तीन बार दें।

३००-इरगापोईरीन १ टिकिया दिन में ३ बार दें।

३०१-इरगापाईरीन ५ सी० सी० का इन्जेक्शन मांसपेशी में तीसरे या चौथे दिन दें। दर्द को २-४ इन्जेक्शन में ठीक कर देती है, तथा शोथ को दूर कर देता है।

३०२-नोवल्जीन १ टिकिया रोजाना दो बार दें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

३०३-नोवेल्जिन २ सी. सी. या असह्य दर्द हो तो ५ सी. सी. का इन्जेक्शन माँसपेशी मे दें।

३०४-गाएकोल १ ड्राम टि० आयोडीन ७ ड्राम मिला लगावें।

३०५-लिनिमेंट ए. बी. सी. संधि शोथ पर मले।

३०६-एन्टीफिलेजिस्टीन शोथ तथा वेदनापूर्ण स्थान पर लगावें।

नोटः—गृधसी वात (साईटिका पेन) पर भी उपर्युक्त दवाओं एवं इन्जेक्शनों का व्यवहार लाभप्रद है।

मूत्राघात तथा मूत्रकृच्छ्र

३०७-कलमी शोरा १ तोला, फिटकरी १ तोला, इनको कलईदार बर्तन मैं गर्म करें पिघल जाने पर केला के पत्ते पर डाल पर्पटी बनालें। मात्रा ३ माशा ६ माशा मिश्री मिलाकर जल के साथ तीन बार।

३०८-भुनी फिटकरी दो माशा, गेरू दो माशा, मिश्री ६ माशा धारोष्ण दूध के साथ पूयमेह (सुजाक) मैं श्रेष्ठ है।

३०९-चन्दन का तेल १ तोला, बिरोजा तेल १ तो०, शीतल चीनी का तेल १ तोला, एकत्र कर शीशी मैं रखना। मात्रा-५ बूंद से २० बूंद तक। मिश्री ६ माशा के साथ। दिन मैं तीन-चार मात्रा। मूत्र कृच्छ, मूत्र की जलन तथा मवाद आने मैं हितकर है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

३१०-विरोजा सत्व, कल्मी शोरा, फिटकरी का फूला, कत्था, सफेद चन्दन का चूर्ण, श्वेत चीनी, लाल गेरू, संगजराहत, खड़िया मिट्टी, गेरू हजरुलयहूद, प्रत्येक ६-६ माशा इनका कपड़छन चूर्ण करें। चूर्ण के बराबर मिश्री मिलावें। मात्रा-४ माशा, गाय के दूध के साथ दोनों समय मूत्र कृच्छ्र तथा मूत्र नाशक है।

३११-पलाश (ढाक) के फूल को जल में उबाल कर पेडू पर सेक करने से मूत्रावरोध में लाभ हो।

३१२-रसौत इन्द्री के भीतर के घाव को ठीक करे।

३१३-मूली का रस ऽ- मिश्री १ तोला, कलमी शोरा १ माशा, मिला पीवें-इससे मूत्र खुलता है।

३१४-जवासा का काढ़ा कर ठंडा करें उसमें लिंगेन्द्रिय को डुबाकर रखने से मूत्र रोग ठीक होता है।

३१५-धनियां ऽ- जौ कूट कर ऽ॥ पानी में भिगोवें सुबह मल छान २ तोला मिश्री मिला तीन बार लें।

३१६-गोखरू का चूर्ण १ तोला सुबह शाम ठण्डे पानी से लें। इससे मूत्र खुलासा आता है।

३१७-टि०वेलाडोना १० बूंद, सोड़ा ब्रोमाईड १० ग्रेन, स्प्रिट ईथर नाईट्रोसी २० बूंद इन्फ्यूजम ऐनीसी १ औंस ऐसी १ मात्रा दिन में तीन बार दें।

३१८-टिंचर सिल्ला दो ड्राम, स्प्रिट ईथर नाईट्रोसी दो ड्राम एक्वा ऐनेसी २० औंस १ औंस २-२ घंटे में।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

३१९-पाईरोंडिम १ टिकिया आवश्यकतानुसार यह अत्यन्त उपयोगी है।

३२०-यदि मूत्रभाग में जलन व मवाद आता हो तो प्रोकीन पेनसिलीन का इंजेक्शन मांसपेशी में दें। अधिक से अधिक १२ इन्जेक्शन में पूर्णतया लाभ हो जाता है।

कुष्ट-कोढ़—लेप्रोसी—श्वेतदाग-वर्स ल्युकोडर्मा

३२१-तुलसी के पत्ते ऽ१, पानी ८ सेर भवके से अर्क निकाल लें। मात्रा-२॥ तोले से ५ तोले तक दिन में ३ बार। इससे कुष्ट में लाभ होता है।

३२२-ऊंट कटेरी को घिसकर लगाने से उकौत् अच्छा होती है।

३२३-रसौत और कपूर को लगावें। विन्नी (आंख) के घाव को अच्छा करता है।

३२४-कंघी को घाव पर लगाने से घाव अच्छा हो।

३२५-कुचला ऽ= मीठा तेल ऽ= इसको तेल में जला छान लें लगाने से कुष्ट अच्छा होता है।

३२६-देशी असगन्ध का चूर्ण १ माशा खाने से कुष्ट रोग जाता है।

३२७-चिरायते का चूर्ण ७ माशा शहद १ तोला चाटने से कुष्ट अच्छा होता है।

३२८-ब्राह्मी का रस ऽ॥ तेल कडुआ ऽ१ पकावें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

रहने पर छानकर रखलें। लगाने से कुष्ट रोग जावे।

३२९-वायविडंग का तेल सफेद दाग पर लगाते रहने से दाग का रंग असली हालत पर आजाता है।

३३०-जलनीम (जो किसी २ नीम पर बहता है) २-२ तोला दो बार पीवें। कुष्ट दूर होता है।

३३१-हल्दी का चूर्ण ६ माशे शहद १ तोला मिला तीन बार लें कुष्ट में लाभ करता है।

३३२-करील की जड़ की छाल ऽ= तेल ऽ॥ में पका कर छान लें इसके लगाने से उकौता अच्छा होता है।

३३३-नकछिकनी का चूर्ण ऽ। पानी में पीस कर चकती बना नीम के ऽ॥ तेल में जला लगावे कुष्ठठीकहो।

३३४-तूतिया १ तोला वालुका यन्त्र शराब संपुट में रख फूंक दें। माला एक चावल पान में रख कर खावें कुष्ट नाशक है।

३३५-भांग को धो शुद्ध कर एक माशा, मधु तीन माशा, घृत ६ माशे के साथ चाटने से कुष्ट नष्ट हो।

३३६-ढाक के बीज १ तोला, शुद्ध गंधक १ तोला, चित्रक १ तोला दुग्ध में स्वेदन कर सुखा कर चूर्ण करें। माला २ माशा जल के साथ लें मण्डल कुष्ट नष्ट होता है एक मास सेवन करना आवश्यक है।

३३७-बंदाल के फल १ तोला थूअर के दूध से सात

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

बार भावना देवें। मात्रा एक रत्ती जल या दूध से। नमक आदि त्याग करें।

३३८—नीम के ताजे पत्ते १ तोला प्रातःकाल ताजे पानो से लेवें कुष्ट को मिटाता है। गुड़, तेल, दुग्ध को छोड़दें प्रयोग एक मास सेवन करें। घृत ऽ। रोज खावें बात रक्त नष्ट होता है।

३३९—नीम को सींक ऽ= रोज प्रातःकाल घोट करं पानो में छान सेवन करें।

३४०—चिरायते का रस ऽ।। मोगरा का रस ऽ।। अमरबेल का रस ऽ।। नोम का मद ऽ।। मधुऽ।। लेकर कांच के बर्तन में भरकर आठ दिन तक धूपमें रखदें। मात्रा ऽ— पथ्य में अलौनी चनाकी रोटी कुष्ट नाशहो।

३४१—सूखा चूना एक माशा, तेल एक तोला में मथन कर शरीर पर मालिश करें। विभूति कुष्ट (सफेद सीप) को नष्ट करता है।

३४२—एवलीस सल्फेन १ टिकिया दो बार प्रति सप्ताह ४ सप्ताह तक बाद में २ टिकिया दो बार प्रति सप्ताह ४ सप्ताह तक।

३४३—न्युश्टैब 'बूट्स' १-२ टिकिया (२५ एम० जी०) दिन में दो-तीन बार ४ से ८ सप्ताह तक।

३४४—स्ट्रप्टोमाईसीन १ ग्राम डिस्टल्ड वाटर चार औंस इसके गौज जख्मों पर रक्खें और सूखने न दें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

३५४-पेनसिलिन चार लाख यूनिट-डिस्टल्ड वाटर १ पौण्ड इसमें गौज भिगोकर जखमों पर रखें और सूखने न दें।

३४६-सल्फेथायजौल की मरहम ५ प्रतिशत छोटे २ जखमों पर दिन में दो बार लगावें।

३४७-हाईड्राजिहि ओलिएट तीस ग्रेन इकथ्यौल तीस ग्रैन एसिड सेली सिल्क बीस ग्रेन, वैसलीन एक औंस। इस मरहम को रोजाना लगावें।

३४८-एन्टिले प्रौल (वेयर) एक शीशी इसके १५-१५ बूंद के कैपशूल बनालें एक-एक कैपशूल दिन में तीन बार दें।

३५९-आयल चाखमीग्रा २ ड्राम, लैनोलीन ६ ड्राम इस मरहम को दिन में दो-तीन बार १५ मिनिट मलें।

३५०-ल्युडर्मौल एक शीशी इसे सफेद दागों पर मलें कई मास तक।

३५१-विटीज २ टिकिया दिन में तीन बार।

पाण्डु-रक्ताल्पता-एनीमियां

३५२-पुनर्नवा की जड़ का चूर्ण ३ माशे, शहद ६ माशे, मिलाकर तीन बार चाटें पाण्डु दूर होता है। मुण्डी बूंटी का चूर्ण ४ माशे, शहद एक तोला मिला प्रातः सायं चाटें। पाण्डु हर है।

३५३-मंडूर भस्म दो से चार रत्ती (गौ मूत्र भावित)

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मधु तीन माशे घी ६माशे मिला दो बार लें। सशोथ पाण्डु को दूर करता है।

३५४-हल्दी, दारू हल्दी, बहेड़ा, आंवला, कुटकी प्रत्येक २-२ तोला, लोहभस्म ६तोले, २ रत्तीकी मात्रा में मधु तीन माशा घी ६ माशा मिला सेवन करें। पाण्डु, कामला हलीमक अर्श आदि में लाभकारी है।

३५५-मिश्री ६ माशे, कुटकी ६ माशे, कालीमिर्च ३ माशे यह १ खुराक है। ऐसी दो खुराक रोज पानी से लेवें, पाण्डु नष्ट होता है।

३५६-द्रोणापुष्पी का स्वरस निकाल अंजन लगावें।

३५७-देवदाली पीस या पानी में भिगो नस्य लेवें। नाक द्वारा पीला पानी निकाले पाण्डु नष्ट होता है।

३५८-कड़वी तोरई का रस लेकर नस्य लेवें।

३५९-कच्चो मूली का रस ऽ=, मिश्री २।। तोला। प्रातःकाल दोनों को मिला पीवे। ७ या ९ दिन में पाण्डु नष्ट हो जाता है।

३६०-सनाय १२ माशे, पिंड खजूर ऽ- मंजीठ तीन माशे जौकुट कूट कर ऽ। पानी में रात्रि को भिगो कर रख देवें। प्रातःकाल पानी को बिना हिलाये नितार लेवें। इसमें ऽ= मिश्री मिला कर पीवें, पाण्डु कण्डू, रक्तपित्त नष्ट होता है। पेशाब व दस्त लाता है।

३६१-शमा (छोंकरा) के पत्ते २ तोला, पीस कर

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

पानी में छान कर मिश्री मिला पीवें। पांडु नाशक है।

३६२-कलमी शोरा १ तोला, मिश्री ५ तोला, प्रातः सायं ६-६ माशे लेवें। पाण्डु नाशक है।

३६३-मंडुर भस्म २ रत्ती, मात्रा ३ माशा, गौ मूत्र २ तोले में मिला दो बार पीवें। मिट्टी खाने से होने वाले पाण्डु में विशेष उपयोगी है।

३६४-ऐक्सट्रेक्ट हेमेटिसलीकुड १ड्राम, टि० नक्सवीमिका ५ बूंद, फैरीएट एमोनिया साईट्रास १५ ग्रेन सिरप और शाई १ ड्राम एकुआ क्लोरोफार्म १ औंस १ मात्रा तीन बार भोजन के बाद।

३६५-निम्न दवायें दो प्रकार की आती हैं एक इन्जेक्शन द्वारा लगाने की दूसरी मुख द्वारा पीने की इनका प्रयोग सूची द्वारा या मुख द्वारा किया जा सकता है-(१) बिटामिन सी, (२) विटामिन बी, कम्पलैक्स, (३) लोवर ऐक्सट्रेक्ट (४) स्टोमक ऐक्सट्रेक्ट (५) आइरन के योग। रक्त वृद्धि एवं रक्त कणों में सहायक होने के कारण उक्त औषधियां पांडु में उपयोगी मानी जाती हैं।

३६६-ईस्टन सिरप (२) फेनोनाइकम (३) फेरीक्स (४) सिपेलान (५) हिमोजिन (६) हिपेटाक्स आदि पेटेन्ट योगों का भी पांडु रोग में प्रयोग किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

रक्त-प्रदर—श्वेत प्रदर—लिकोरिया

३६७—तुलसी के पत्तों का रस ६ माशे, शहद ६ माशे मिला दोनों समय लें। दोनों प्रकार के प्रदर दूर करे।

३६८—पीपल की लाख ४ माशे, शक्कर ४ माशे-दिन में तीन बार लें। रक्त प्रदर ठीक होता है।

३६९—शीशम के पत्तों का रस १ तोला मिश्री १तोला मिला दो बार लें। रक्त प्रदर ठीक होता है।

३७०—ब्रह्मदंडी का पंचाग १२ माशे, रसौत ६ माशे, मिश्री ३६ माशे घोट पीस ऽ= पानी में छान पीवें। शीत ऋतु में क्वाथ कर पीवें गर्मी में ठण्डा हो पीवें। विविध प्रकार के प्रदर नष्ट होते हैं।

३७१—समुद्र शोष १ तोला, मिश्री १ तोला को पानी के साथ पीने से प्रदर शान्त होता है।

३७२—पके गूलर का फल का चूर्ण ३ माशा, मिश्री तोन माशा प्रातः सायं दूध के साथ दें। रक्त प्रद निश्चित दूर होता है।

३७०—मौलश्री की छाल ऽ= मिश्री ऽ= मिला रखलें प्रतिदिन प्रातःकाल १ तोला चूर्ण ताजा पानी के सा दिया करें। १ सप्ताह में आराम हो जाता है।

३७४—ढाक का गोंद ऽ—, खाँड सफेद ऽ— दोनों पी लें ६ माशा प्रातः सायं पानी के साथ लें। एक सप्ता में आरोग्य लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

३७५–भुने चने ६ माशा, संगजराहत ६ माशा, माजू आधा नग, खांड १।। तोला मिला रक्खें । ५ माशा की तादाद में पानी के साथ लें । इससे रोग अवश्य नष्ट होता है ।

३७६–नागकेशर असली ६ माशे, मठा ऽ। के साथ लें । रक्त प्रदर ठीक होता है ।

३७७–संगजराहत, गेरू समान मात्रामें लेकर बारीक चूर्ण करलें ७ माशा की मात्रा में ताजा पानी से प्रातः सायं लेवें । एक दो दिन में रक्त प्रदर शान्त होता है ।

३७८–कंघी के बीज ऽ। लेकर कपड़छन करलें फिर इसमें ऽ। खांड मिलालें । ६ माशे प्रातः सायं पानी से लिया करें दो सप्ताह में प्रदर ठीक हो जाता है ।

३७९–सरयाली के बीज ऽ।।, मिश्री ऽ।, मिलाकर रखलें । प्रातः सायं ६-६ माशे लें । कुछ दिन सेवन से प्रदर ठीक होता है ।

दद्रु-दाद–रिंगवर्म–खाज-खुजली

३८०–तुलसी के पत्तों का रस दाद पर लगाने से दाद जाता है ।

३८१–चन्दन का तेल लगाने से दाद अच्छा होवे ।

३८२–सेम के पत्तों का रस लगाने से दाद नष्ट हो ।

३८३–आक को जला कर उसकी राख तेल में मिला लगावें दाद नष्ट होता है ।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

३८४-सोंठ के पत्तों का रस लगावें, दाद ठीक हो ।

३८५-हल्दी, सफेदा पानी में पीस लगाने से रोग जाता है।

३८६-कसोंदी के पत्तों का रस लगाने से दाद-खाज जाय।

३८७-कुचला ऽ=, तेल ऽ- में जलाकर लगावें। दाद खाज, झाई ठीक होती है।

३८८-तमाकू का फूल दाद पर मलने से दाद जाता है।

३८९-पटसन के पत्तों का रस लगाने से दाद ठीकहो।

३९०-दाल चीनी ६ माशे, काला नमक ६ माशे सब शरीर पर लगाने से सूखी खुजली ठीक होती है।

३९१-सुहागा ३ तोला, तेजाब गंधक १० बूंद, पानी ऽ।। में मिला दाद पर लगावें, दाद ठीक हो।

३९२-कत्था पाडिया, कौडियाँ, लोवान, सुहागा, गन्धक, समान भाग लेकर नीबू के रस में गोली बना दाद पर नीबू के रस में घिसकर लगावें। दाद ठीक होता है।

३९३-राल २ तोला, पारा १।। तोला, कडुआ तेल ऽ।, पहले राल पारा का खूब महीन करें फिर तेल में मिला कांसे की थाली में १०० बार धोवें खाज खुजली पर लगाने की शर्तिया दवा है।

३९४-कपूर १ तोला, गन्धक १ तोला, ऽ= मिट्टी के

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

तेल में पीस कर मिला लें। दाद शीघ्र समूल नष्ट हो।

३९५-हल्दी ऽ।, कबीला ऽ।, मेंहदी ऽ। सफेदा जयपुरो ऽ। सबको कपड़छन कर कडुए तेलमें मिला लगाने से फोड़ा-फुन्सी, खाज-खुजली ठोक होती है।

३९६-गन्धक १ तोला पीस कर रखलें। फिर ऽ। दही को तेज धूप में रख दें जब उबाल आजावे गन्धक मिला लगावें, खुजली ठीक होती है।

३९७-चोक की जड़ लेकर थूक में घिस कर लेप करदें। ४-५ बार लेप करने से दाद ठीक होता है।

३९८-भेड़ की सफेद ऊन जला कर राख करलें। १०० बार धुले मक्खन में मिला दाद पर लगावें।

३९९-नीम की कोंपल एक तोला, जल १ छटांक एकत्र पीस १५ दिनों तक दूध के साथ पीना प्रातःकाल कण्डू नाशक है।

४००-राल २ तोला, गन्धक २ तोला, भुना सुहागा २ तोला, फिटकरी २ तोला एकत्र कपड़छन कर रखना, घी में मिला लगावें दाद नाशक है।

४०१-लोविया, २ तो., सुहागा २ तो०, गन्धक २ तो० चकबड़ बीज २ तो० इनका कपड़छन चूर्ण कर चकवड़ के रस में घोंट २ रत्ती प्रमाण गोली बनावें। नीबू के रस में घिस रोज़ाना दाद पर लगावें।

४०२-हरा तूतिया चार मा० सुर्ती (तमाकू) चार

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

माशा, कबोला ८ माशा, सफेद चोनो १६ माशा इन को एकत्र पीस सरसों के १ छटाँक तेल में मिला लगावें कण्डु (खुजली) ठीक होती है।

४०३–हरा तूतिया १० माशा, कर १०, माशा, आँवलासार गंधक १० माशा, १०० बार धुला घृत १ छटाँक एकत्र मिला शरीर पर मल १ घंटे बाद स्नान करें। कण्डू नाशने में सर्वोत्तम है।

४०४–मिटिगल लोशन आइन्टमेन्ट, इसे रोजाना खारिश व दाद पर मिलें।

४०५–स्केबीजन (झंड्) दिनमें २बार खारिशपर मलें।

४०६–यूरेक्स इसे दिनमें २बार खारिश पर लगावें।

४०७–अर्गोटेमीन टार्टरेट १ टिकिया दिनमें ३बार।

४०८–पल्वकैम्फर चार ग्रेन, मेन्थोल ५ ग्रेन, एसिड कार्बोलिक १० बूंद, लैनोलीन १ औंस, बोरिक लोशन से साफ करने के बाद इस मरहम को लगावें, भग की खुजली में।

४०९–एसिड क्राइसोफेनिक एसिड २० ग्रेन एसिड सेलीसिलक तोस ग्रेन हाईड्राइज एमोनिएटा १० ग्रेन मेन्थोल ५ ग्रेन बैसलीन १ औंस इस मरहम को एक बार लगावें शरीर के दाद के लिये।

४१०–डेरोवीन (ग्लेक्सो) १ ट्यूब थोड़ी सी मरहम को दिन में एक बार दाद पर लगावें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

४११-स्टोरब्स १० ग्रेन प्रेसोपिटेटेड सल्फ़र ६० ग्रेन रिसोसिन ५ ग्रेन, कैम्फर १० ग्रेन, मेन्थोल २ ग्रेन, एसिड कार्बोलिक १० बूंद, लैनोलीन और वैसलीन कुल एक औंस यह मरहम दाद के अलावा एकजीमा (छाजन) मुहासे, बवसीर और गुदा की खुजली दूर हो।

४१२-मर्सेजल क्रीम दो बार दाद पर लगावें।

मन्दाग्नि

४१३-हींग घी में भुनी १ तो० कालीमिर्च २० तो०, नमक सेंधा ४० तो०, पीपल १० तो०, चूक २० तो०, सबको कूट पीसकर चूक में घोंट झरबेरी के बराबर गोली बनावें. दिन में चार पाँच गोली मुंह में डाल रस चूसें मन्दाग्नि नाशक है।

४१४-अदरक का रस १ तोला, शहद १ तोला मिला दिन में दो बार चाटें। मन्दाग्नि नाश करता है।

४१५-अरनी का चूर्ण ३ माशे शहद में चटावें। भूख बढ़ती है।

४१६-पीपड़ामूल का चूर्ण १ माशे, शहद ६ माशे में तीन बार लें। मन्दाग्नि में लाभदायक है।

४१७-कालाजीरा तीन माशे, शहद में मिला तीन बार लें। भूख बढ़ती है।

४१८-प्याज १ तो० भूनकर दो बार खावे, भूख बढ़े।

४१९-सेंधा नमक ७ छटांक, काला नमक ऽ-,

CC-0. In-Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

जोरा भुना ऽ=, टाटरी ऽ–, पिपरमेंट ६ माशा, हींग भुनी ६ माशा सबको कपड़छन कर घोंट २ रत्ती से ८ रत्ती तक भोजन के बाद खावें, मन्दाग्नि, पेट का दर्द, जी मिचलाना कै, उवाकी आदि में आशुफल कारी है ।

४२०-पीपल ऽ।=, टाटरी ऽ।=, नमक सेंधा ऽ=, कालीमिर्च ऽ।=, हींग घी में भुनी ऽ=, गेरू ऽ= सबको कपड़छन कर घी डाल कूटें, एक जीव होने पर ६-६ रत्ती की चपटी गोली बनालें । भोजन के बाद एक से २ गोली का रस चूसने से तत्काल भूख लगती है ।

४२१-जीरा ऽ=, सोंठ ऽ।, कालीमिर्च ऽ१।, पीपलऽ।, लौंग २।। तो०; सोंफ ऽ=, हर्र छोटी भुनी ऽ–, सेंधा नमक ऽ।, काला नमक ऽ।, टाटरी ऽ=, नौसादर ऽ।, हींग (घी में भुनी) १ ।। तोला सबको कपड़छन करलें मात्रा-४ रत्ती से १ माशा तीन बार मन्दाग्नि में अत्यन्त लाभदायक है ।

४२२-जम्मीरी नीबू का रस ऽ५, जीरा भुना २ तो०, नमक काला ऽ।, सोंठ भुनी ऽ। मिर्च काली ऽ।, पीपल ऽ।, लौंग २।। तो०, अजमायन ऽ–, हर्र छोटी भुनी ऽ।, सुहागा चौकिया भुना ऽ–, नौसादर ऽ= सेंधा नमकऽ= सब चीजों को पीस कपड़छन कर जम्भीरी नीबू के रस में डाल मटके का मुंह कपड़ मिट्टी कर १ मास

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

रख दें बाद में खोल बोतलों में भर लें । मात्रा ६ माशे से १ तो० तक दिन में तीन बार मन्दाग्नि, अजीर्ण, उदर शूल को तत्काल दूर करता है ।

४२३-कालीमिर्च ३ माशे । जल से रगड़ कर धोकर सुखालें चूर्ण कर कपड़े में छानलें उसको ६ माशे या १ तोला घृत में मिला कर भात के साथ प्रातः सेवन करें, अग्निदीपक है । आमातिसार में लाभकारी है ।

४२४-काला नमक १ तो०, बिड्लवण १ तो०, सोंठ २ तो० मिर्चकाली १ तो०, कालाजीरा १ तो० सफेद जीरा १ तोला, अजवायन १ तो० अजमोद १ तो०, धनियाँ १ तो०, चीतेकी छाल १तो०, अम्मरबेल१तो० सीमाक १४ तो० चूर्ण बना कर रक्खें । मात्रा १ माशा, दीपन, पाचन, रुचिकारक और ग्रहणी हर है ।

४२५-कालीमिर्च १ तो०, नौसादर १ तो० सबको पीसकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बनालें अग्निमान्द्य में लाभप्रद है ।

४२६-शुद्ध कुचला १ तो०, नौसादर १ तो० हींगभुनी १ तो० विजौरा नीबू, अनार, अंजोरी के रस में २-२ दिन भावना देकर चने बराबर जौ की गोली बनालें मन्दाग्नि को दूर करती है ।

४२७-नीबू का रस १ तो०, काला नमक २ माशे । नीबू के रस में नमक मिलाकर गर्म कर सेवन करें ।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मंदाग्नि को नष्ट करता है।

४२८-विटामिन वी कम्पलेक्स (२) फ्रूट साल्ट (३) हैप्टो गिलोबिन (४) प्रोस्टो साल्ट—इनमें से किसी एक दवा का सेवन करें। मंदाग्नि, अरुचि नाशक है।

हचकी—हिक्का

४२९-ऊँट कटेरी की जड़ १ तो० पानी ऽ। शेष ऽ- छान ६ माशे शहद डाल पीवें। हिचकी दूर होती है। दो बार लें।

४३०-माल कांगनी का चूर्ण १ माशा शहद ६ माशे के साथ उबाल लें। हिचकी नष्ट होती है।

४३१-देवदारू का चूर्ण ३ माशे ६ माशे शहद में मिला तीन बार चाटें। हिचकी ठीक होती है।

४३२-मोर के चँदुए का बीच का चमकोला भाग जलालें। दिन में तीन बार शहद के साथ चटावें। हिचकी नाश करने में लाजवाव है।

४३३-रेणुका १ तोला, पीपल १ तोला, जल १ पाव। इनको ऽ। जल में क्वाथ करें—एक छटांक शेष रहने पर छान १ रत्ती हींग मिला पिलावें। दिन में दो बार। यह हिचकी को दूर करने में उत्तम है।

४३४-सोंठ चूर्ण १ तो०, गुड़ आधा तो०, एकत्र मिला सुंघावें। हिक्का अवश्य बन्द होती है।

४३५-अनार की कली १ तोला, तुलसी का पत्ता १

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

तो०, दूब १ तो० । इन्हें एकत्र पीस कपड़े में बांध रस निकाल ३-४ बूंद नाकमें डालें । रोग शीघ्र दूर हो ।

४३३-सोड़ावाई कार्ब १० ग्रेन, स्प्रिट एमोनियां एरोमेटिक १० बूंद, स्प्रिट क्लोरोफार्म १५ बूंद, टि. कार्ड को १० बूंद एकुआ मेथापिप १ औंस, ३ मात्रा-अजीर्ण जन्य हिक्का में लाभप्रद है ।

४३७-लाईकर पुटास १० बूंद, आयल ऐनेसी ६ बूंद टि. कैम्फर को. १० बूंद, म्युसिलेज प्रकेसिया १ ड्राम मैगसल्फ १ ड्राम, आयल मेथापिप ३ बूंद, जल १ औंस, यह १ खुराक है । ऐसो ४ मात्रा दो-दो घंटेमें ।

४३८-नाईट्रोग्लीसरीन टेवलेट एक-एक गोली ३-४ घंटे के अन्तर से जीभ के नीचे रखना हिक्का नाशक है ।

४३९-एमिल नाइट्राइट सुंघानें से हिचकी शांत होती है ।

हृदयदौर्वल्यता—हार्टवीकनैस

४४०-चिरायते का चूर्ण ३ माशे, पानी के साथ दो बार लें या चिरायता २ तो०, पानी ऽ। शेष ऽ= का क्वाथ कर ६ माशे शहद डाल पिलावें । दोनों समय हृदय को बल देता है ।

४४१-मुनक्का नग ५ खाने से रोग ठीक होता है । प्यास को शान्त करता है ।

४४२-कुकरौंधे का चूर्ण ६ माशे, शहद १ तो० के

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

साथ खावें हृदय बलवर्द्धक है।

४४३-अर्जुन की छाल २ तो०, दूध ऽ। पानी ऽ। जब केवल दूध मात्र रह जाय दोनों समय पीवें। हृदय दुर्बलता को मिटाता है।

४४४-कपूर कचरी १ तो०, पानी ऽ। शेष ऽ= क्वाथ कर छान ६ माशे शहद डाल दोनों समय पिलावें। हृदय बलदायक है तथा कै (छर्दि) को बन्द करताहै।

४४५-मृतसंजीवनी सुरा १ तो०, जल १ तोला दिन में २-३ बार, हृदय दुर्बलता को मिटा नाड़ीको बलवती बनाता है।

४४६-गोखरू का चूर्ण १ तोला, मिश्री १ तोला, मिला दूध या ठण्डे पानी के साथ दोनों समय लें। हृदय दुर्बलता को मिटाता है।

४४७-छित्तक चूर्ण ३ माशे, शहद ६ माशे डाल खावें ३ बार। हृदयकी दुर्बलता मिटाता है। बैठा हुआ कण्ठ (स्वर) खुल जाता है।

४४८-स्प्रिट एमोनियां ऐरोमेटिक १० बूंद स्प्रिट क्लोरोफार्म १५ बूंद नक्सवोमिका १० बूंद, वाइनम-ग्लेसियाई १ ड्राम, कैम्फर जल १ औंस—ऐसी २ दिन में तीन मात्रा।

४४९-एक्सट्रेक्ट माल्ट १ ड्राम, बाईनमऐपीकाक १ औंस ऐसी तीन चार मात्रा।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

४५०-कोरामिन लिकुड १ सी० सो० १५ बूंद १ औंस जल में मिला तीन-तीन घण्टे में।

४५१-हार्टीक २टिकिया भोजन के पूर्व दिनमें ३बार।

४५२-कोरामीन कैफोन १ सी० सी० १ औंस जल में तीन घण्टे में।

४५३-डिजोकोलीन १ टिकिया दिनमें दो-तीन बार।

४५४-कोरामीन इन्जेक्शन दिनमें दोबार मांसपेशीमें दें।

आधाशीशी—सूर्यावर्त्त—हेमीकेनिया मिग्रेन हैडकपेन—मस्तकशूल—सिरदर्द

४५५-तुलसी का रस ३-३ बूंद नाक में डालने से शिर-पीड़ा नष्ट हो।

४५६-गुलाब का तेल (गुलरोगन) लगानेसे लाभहो।

४५७-सेवती का रस लगाने से लाभ होता है।

४५८-मोंगरा का तेल लगाने से सिर पीड़ा वष्ट होती है।

४५९-चमेली का तेल मलने से लाभ होता है।

४६०-रीठा की गूदी पानी में पीस मस्तक पर लगावें शिर पीड़ा नाशक है।

४६१-चन्दन का तेल लगाने से गर्मी की पीड़ा दूर होती है तथा गर्मी की फुन्सी नष्ट होती है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

४६२–मेंथी को पत्ती पीसकर लगाने से रोग जाताहै

४६३–कनेर के पत्तों का महीन चूर्ण सूँघने से शि पीड़ा दूर होती है तथा पीनस में लाभ होता है।

४६४–उसवा को पानी में पीस सिरदर्द में लेप करे

४६५–मालकांगनो का चूर्ण ३ माशे शक्कर ३ मा पानी के साथ दो बार खिलावें सिर पीड़ा मिटतो है

४६६–विषखपरा का लेप करने से गंज ठीक होताहै

४६७–जवासा पीसकर लगाने से शिर पीड़ा दूर हो

४६८–पियावासाकी जड़ का लेपकरे शिरपीड़ा दूरहो

४६९–बकायन के पत्तों का लेप करने से मस्तक शू नष्ट हो।

४७०–कायफल को महीन पीस सूँघने से शिर द दूर हो।

४७१–मौलश्री का फूल सूँघने से शिर पोड़ा जाय।

४७२–मुचकन्द के फूल पानी में पीस मस्सक पर ले करने से शिर पीड़ा दूर होती है।

४७३–तम्बाखू सूँघने से शिर रोग दूर होता है।

४७४–धनिये को पानी के साथ पीस मस्तक प लगाने से शिर पीड़ा दूर होती है।

४७५–जंगली कंडों की राख कर आक के दूध भावना दे छाया में सुखा लें इसमें से थोड़ी सो द नस्य के रूप में सुंघावें। आधाशीशी दूर होती है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

४७६—नौसादर १ तो०, चूना १ तो० एक शीशी में २ तो० पानी डाल मजबूत काग लगादें। दर्द के समय सूंघने से मस्तक पीड़ा तत्काल नष्ट होजाती है।

४७७—इटसिट जिसे पुनर्नवा भी कहतेहैं उसके बीजों को छाया में सुखा कपड़छन करलें। जरूरत के वक्त थोड़ी सी दवा सूंघे। चार-पांच बार के प्रयोगसे समस्त मस्तक का बलगम निकले और शिर पीड़ा दूर हो।

४७८—पोटाशब्रोमाईड ६ ड्राम, ऐन्टीपाईरीन २ड्राम, कैफीनसाईट्रास १ ड्राम, स्प्रिट क्लोरोफार्म २ ड्राम, ऐकुआकैम्फर १० औंस इसमें से चार ड्राम दौरा आरम्भ होने के समय दें और २ ड्राम सुबह शाम दें जब दौरा न हो।

४७९—सिवाल्जेन एक से दो टिकिया पानी के साथ दौरे के समय।

४८०—गाइनजैन ५ टिकिया जीभ के नीचे रक्खें।

४८१—एन्टीफेब्रिन ३ ग्रेन कैफीनसाईट्रास १ ग्रेन, सोड़ावाईकार्ब २ ग्रेन एक पुड़िया दौरा प्रारम्भ होते ही दूसरी पुड़िया ३ घण्टे में जरूरत के अनुसार।

४८२—एस्प्रो १ से २ टिकिया दौरे के समय सिरदर्द, जुकाम, मलेरिया, इनफ्लूऐन्जा में लाभप्रद है।

४८३—नोवोल्जिन या शिवेल्जिन इनमें से कोई सा १ इन्जेक्शन मांसपेशी में दें। तीव्र सिर-पीड़ा पर।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

वीर्यदोष—प्रमेह

४८४-पीपल की लाख चार माशा, शक्कर या मिश्री चार मा० मिलाकर फांके ऊपर से पावभर गाय का दूध पीवें तो प्रमेह को लाभ करता है।

४८५-इमली के बीज की मिंगी चार माशे, मिश्री ४ माशे मिला सुबह शाम पानी या गाय के दूध से लें प्रमेह ठीक होती हैं।

४८६-शंखाहूली ६ माशे, शहद १ तोला मिला सुबह शाम लें वीर्य पुष्ट होता है साथ ही स्त्रियों का ज्यादा रजस्राव होना (पैर कटना) बन्द होता है।

४८७-सुपाड़ी के फूलों का चूर्ण ६ माशा, मिश्री ६ माशा, धारोष्ण गाय के दूध में सेवन करें। शुक्रमेह में लाभप्रद है।

४८८-बीज खिरैटी एक तोला, उटंगन के बीज १ तोला, कौंच के बीज १ तो०, मिश्री १॥ तो० कपड़छन कर लें। १ मा० रात्रि को गाय के दूध के साथ लें। शुक्रतारल्य को मिटाता है।

४८९-ढाक का गोंद १ तो०, पाषाणभेद १ तो० समुद्रशोष एक तो०, दालचीनी १ तो०, मिश्री ४ तोला लेकर चूर्ण बनावें। मात्रा एक माशा दूधके साथ वीर्य दोष मिटाता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

४८०-बबूल की छाल, गोंद, पुष्प फल, १-१ तोला लेकर चूर्ण करें। मात्रा १ माशा दूध की मीठी लस्सी के साथ शुक्र क्षरण में लाभ करता है। १ तोला मिश्री भी मिलाई जा सकती है।

४८१-काले तिल १ माशे प्रतिदिन खाने से बहुमूत्र में लाभ होता है।

४८२-लिसोड़े के फल ६ माशे, शहद १ तोला खिलावें प्रमेह में लाभकारी है।

४८३-सफेद मूसली, खरैटी, गंगेरन को छाल, तालमखाना समान भाग सबके बराबर मिश्री मिला रखलें। मात्रा ६-६ माशे गाय के ऽ। दूध के साथ।

४८४-सोंठ ऽ। सितावर ऽ। ब्रह्मदंडी ऽ। सबको कपड़छन करलें। मात्रा ४ माशा दोनों समय पानी के साथ प्रमेह में अत्यन्त लाभप्रद है।

४८५-खरैटी का चूर्ण ६ माशे, मिश्री ६ माशे दूध के साथ दोनों समय प्रमेह को दूर करता है।

६८६-सेमर की जड़ ऽ— सेमर के फूल ऽ= शक्कर ऽ= मिला चूर्ण बनालें। मात्रा ६-६ माशे गाय के दूध के साथ दोनों समय पतले वीर्य को गाढ़ा करता है।

४८७-उड़द का चूर्ण ६ माशे, शक्कर ६ माशे दोनों समय गाय के दूध के साथलें। अत्यन्त वीर्य पुष्टकरहै।

२८८-बबूल को पत्ती ६ माशे, कालीमिर्च १ माशा

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मिश्री मिला घोंट पानी मिला पीवें वीर्य के पतलेपन को दूर करता है पुष्टकारी है।

४९९–सालम मिश्री [पंजे की] ६ माशे, शक्कर ६ माशे के साथ सुबह रात फाँकें ऊपर से दूध पीवें।

५००–खैर का गोंद ६ माशे, मिश्री ६ माशे दूध के साथ दोनों समय लें। वीर्य बढ़े और पुष्ट हो।

५०१–विदारीकन्द का चूर्ण ६ माशे, मिश्री ६ माशे दोनों समय गाय के दूध के साथ लें वीर्यको पुष्ट करे।

५०२–गुलसकरी का चूर्ण ४ माशे मिश्री ४ माशे मिला सुबह शाम गाय के दूध के साथ फाँकें। वीर्य पुष्टकर है।

५०३–१० बूंद बरगद का दूध बतासे में डाल कर गर्म दूध के साथ १ महीना बराबर खावें। स्वप्नदोष, धातु का गिरना और मूत्र रोग ठीक होता है।

५०४–धनियाँ १ तोला, खशखश १ तोला, पोस्त डोरा १ तोला, मिश्री १ तोला, सबको कूट छान कर ३माशा सुबह शाम दूधके साथ सेवन करें। जिरियान अहितलाम धातु के जाने को बहुत मुफीद है।

५०५–बीजबन्द ४ माशा सुबह निहार मुखबासी पानी के साथ खाने से स्वप्नदोष दूर होता है।

५०५–असगंध नागौरी ऽ॥ पीस कपड़छनकर रखलें। उसमें से ८ माशे लेकर आध सेर गाय के दूधमें पकावें

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

ऽ। दूध रह जाने पर ४ तोले मिश्री मिला कर ठण्ड के दिनों में ४० दिन पीवें। इससे कमर का दर्द जोड़ों का दर्द दूर होकर चेहरा सुर्ख होजावेगा, नया खून पैदा होगा। इस दवा के खाने के बाद अपना वजन, तन्दुरुस्ती, दिमागी व मर्दमी की ताकत को देखें।

५०७—अकरकरा, बीरबहुटी, जावित्री, खरातीन, लौंग, जायफल, केशर प्रत्येक को ६-६ माशा कस्तूरी १ रत्ती मुन्दवेदस्तर ३ माशा हर एक को बारीक पीसकर चमेली के तेल में इतना मिलावें कि गाढ़ा हो जावे। इसकी मालिश करने से इन्द्री के तमाम नुख्स दूर होकर सख्ती पैदा होती है।

५०८—मैदा ऽ।, घी देशी ऽ।, चीनी ऽ।, सालम मिश्री पंजे की ऽ= केशर तीन माशे, गिरी अखरोट, बादाम, चिलगोजा पिस्ता प्रत्येक १-१ छटाँक। विधि—मैदा को पहिले घी में भूनलें फिर चीनी व सालम मिश्री को महीन पीस थोड़ी२ कर सब डाल मिलादें १ तो० दूध में केशर को महीन पीस मिलादें, फिर आग से उतारलें फिर सब गिरी को बारीक कतरकर मिला दें और १-१ छटाँक के लड्डू बनालें। सर्दियों में १-१ लड्डू सुबह शाम गर्मी में सिर्फ एक बार शामके वक्त दूध के साथ लें। यह कमर दर्द, पेशाब के रास्ते धातु का जाना स्वप्नदोष को दूर कर अपूर्व ताकत लाताहै।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

५०९-गाय का ताजा ऽ। दूध लेकर छान लें उसमें ७ या ८ पिण्ड खजूर (जो ताजो हों) डाल दें। अब इस दूध को आग पर रख कर मन्दाग्नि से औटावें। ज्यों-ज्यों दूध औटता जायगा दूध पर घी उतरता आयेगा। जब आधा दूध जल जाय दूध को उतार कर रख लें। इसमें शक्कर या चीनी बिल्कुल नहीं मिलावें दूध अपने आप मोठा हो जावेगा। इसके १ घंटे बाद चम्मच से १ पिण्ड खजूर निकालकर खाइये और थोड़ा सा दूध पी लीजिए। इस प्रकार एक-एक पिण्ड खजूर खाते जाइये और ऊपर से दूध पीते जाइये। बाद में इधर-उधर जमी हुई मलाई को खुरच कर खा डालिए। यह बड़ा स्वादिष्ट, जायकेदार, किफायती एवं शक्ति वर्द्धक योग है। कामियों के लिए उत्तम वस्तु है।

५१०-जामुन की गुठलियाँ छाया में सुखाकर रख लें और बारीक पीस लें ६ माशा सुबह ६ माशा शाम को पानी के साथ खाने से पेशाब के साथ वीर्य का गिरना, स्वप्नदोष, मधुमेह को शर्तिया फायदा करता है। अगर दूध के साथ खिलावेंगे तो वीर्य को गाढ़ाकर रुकावट पैदा करेगा।

५११-बबूल का गोंद ऽ= शक्कर ऽ= दोनों को पीस पानी के साथ घोंट ६-६ मासे की चकियां बनाएं प्रतिदिन १-१ चकियाँ दोनों समय दूध के साथ लें

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

प्रमेह स्वप्नदोष वीर्य का पतलापन आदि के लिए प्रभावक औषधि है।

५१२-लाल फिटकरी १ तो०, छोटी इलायची ७ नग, खेलखड़िया १ तो०, इन तीनों औषधियों की १४ पुड़िया बनावें। प्रातः १ पुड़िया दूध की लस्सी के साथ लें २ सप्ताह में पूर्ण लाभ करता है।

५१३-बरगद को कौपल ऽ- गूलर की छाल ऽ- मिश्री ऽ= मिला कूट छानलें। दोनों समय दूध के साथ १तो० की मात्रा दिया करें। पतले वीर्य को गाढ़ा करे।

५१४-दालचीनी ३ माशा रात को पावभर दूध के साथ लें। एक सप्ताह के सेवन से वीर्य में फर्क पैदा करता है।

५१५-प्याज का रस ५ माशे, घी ४ माशे, शहद ३ माशे मिलाकर सुबह शाम पीवें। २ महीने में खूब ताकत बढ़ती है।

५१६-मोचरस का चूर्ण ६ माशे, मिश्री ४ तोले, इन दोनों को गाय के दूध में लगातार २-३ महीने लेने से स्वप्नदोष आराम होकर बलवीर्य वृद्धि होती है।

१५७-सितावर १ तोले, गाय का दूध ऽ।। औटाइये जब डेढ़पाव बाकी रहे २ तो० मिश्री मिलाकर सुबह शाम पीवें। इससे मैथुन इच्छा बढ़ती है। ४० दिन प्रयोग करें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

५१८-सूखा सिंगाड़ा कूट पीसकर रखलो—इसमें घी और चीनी डाल हलुआ बनाकर सुबह खिलावें ४० दिन सेवन करने से वीर्य पुष्ट होता है।

५१९-सूखे सिंघाड़े और मखानों की ठुर्री—दोनों को बराबर लेकर कपड़छन कर रखलें। इसमें बराबर की मिश्री मिलालें मात्रा ६ माशे कच्चे दूध के साथ। इसके ३ माशे खाने से निश्चय ही धातु बढ़ती है और गाढ़ो होती है।

५२०-तरबूजे की बीजों की गिरी ६ माशे, मिश्री ६ माशे, मिलाकर खाने से शरीर खूब पुष्ट होता है।

५२१-चिनियाँ गोंद बहुफली ६-६ माशे लेकर पीस फाँक ऊपर से दूध पिलावें। ४० दिन खाने से वीर्य पुष्ट होता है।

५२२-पीपल के पेड़ की छाल, फल, अंकुर और जड़ ६-६ माशे लेकर पावभर दूध और सेर भर पानी में औटाकर केवल दूध रहने पर मिश्री मिला पिलावें। इससे १२ महीनों में बूढ़ा भी जवान होजाता है।

५२३-आध सेर दूध में ४ छुआरे गुठली निकाल औटावें, औटाते वक्त उसमें १रत्ती केशर और ४तोले मिश्री मिलावें। जब आधा दूध रह जाय पिला दें। यह दूध भी अधिक ताकत लाता है।

५२४-मक्खन १ तो०, मिश्री १ तोला, चाँदी के बर्क

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

नग २ इनको मिला सुबह-शाम खिलावें । ३-४ मास में नामर्दी ठीक होती है ।

५२५-बबूल की गोंद, ढाक की गोद, शतावर, काली मूसली, सफेद मूसली, असगन्ध, मुलहटी, तालमखाने के बोज प्रत्येक २-२ तोले--मिश्री १६ तोले पहिले सब दवाओं को कूट पीस मिश्री मिलालें । सुबह-शाम १-१ तोला दवा खाकर मिश्री मिला गर्म दूध पीओ । मैथुन शक्ति बढ़ाने में यह याग अति उत्तम है । लगातार ६० दिन खाना चाहिए ।

५२६-नागौरी असगन्ध २॥ तोले, सत गिलोय १ तोले, इन दोनों को मिला खूब घोटिये-मोंगरे के रस में, घुट जाने पर २-२ माशे की गोलियां बनावें । एक-एक गोली सुबह शाम दूध के साथ लें, खूब ताकतवर है । तीन-चार मास खावें ।

५२७-गाय या बकरी का दूध १ पाव, मधु ६ माशे गाय का घी १० माशे, कालीमिर्च पिसी छनी ६ रत्ती, मिश्री १ तोले सुबह-शाम ऐसा दूध पीने से दुबला पतला भी मोटा हो जाता है । इस दूध के पीने से काफी खून पैदा होता है ।

५२८-मुण्डो का चूर्ण ४ माशे, शहद ६ माशे, मिला सुबह शाम चाटें । वीर्य विकार नष्ट होता है ।

५२९-कुकरोंधा का चूर्ण ऽ- मिश्री ऽ= दोनों को

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मिला प्रातः सायं दूध के साथ लें। वीर्य दोष दूर हो।

५३०-हारसिंगार के पत्ते या बीजों का चूर्ण ६-६ माशे पानी के साथ लें। वीर्य विकार दूर होते हैं।

५३१-जल जमुनी ऽ१ पानी चार बोतल अर्क खींचलें मात्रा ऽ—, १ तोला मिश्री मिलाकर तीन बार लें।

५३२-एसिड फास्फोरिक डि० १० बूंद, ऐक्सट्रेक्ट डेमियाना लि० १ ड्राम, लाइकर स्ट्रिकनीन हाईड्रो-क्लोर ५ बूंद, टि० फैरीपरक्लोराईड १० बूंद, टि०, कैथेराईडिड ५ बूंद, स्प्रिट क्लोरोफार्म १० बूंद, एकुआ (पानी) १ औंस—ऐसो एक मात्रा दिन में २-३ बार धातुक्षीणता नष्ट होती है।

५३३-डेकिन्स डेमियाना १ गोली दिन में ३ बार।

५३४-ओकासा टैबलेट २ टिकियां दिन में ३ बार।

५३५-लीवर ऐक्सट्रेक्ट विद विटामिन बी कम्पलैक्स १ सी० सी० दूसरे तीसरे दिन मांस में। खून की कमी साधारण दुर्बलता को दूर करता है।

५३६—एन्ड्रोस्टिन—१—१ सी० सी० मांस में बारी बारी से नं० १ और नं० २ रोजाना इससे नपुंसकता अवश्य नष्ट हो जाती है।

५३७-गौने डोल २ सी० सी० मांस में।

५३८-कैप्रीटोक्स १ सी० सी० रोजाना या तीसरे दिन मांस में।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मधुमेह–शक्कर जाना–डायविटीज मेलीटस

५३९–कत्था ६ माशा, पीपल लाख ६ माशा, सुपाड़ी ६ माशा जल एक पाव इनका क्वाथ करें एक छटाँक जल रहने पर छानकर पिलावें। प्रातः सायंकाल।

५४०–पाढ़ल ५ तोला, घमासा ५ तोला, अर्जुन ५ तोला, वायबिडंग पाँच तोला, जल एक पाव ऽ। शेष ऽ– गर्म छानकर पिलावें २ बार।

५४१-गुड़मार १ तोला, जामुन बीज १ तोला, काली मिर्च ३ माशा चूर्ण कर रखना ३ माशा ताजा जल के साथ तीन बार।

५४२-अरनो २ तोला ऽ। क्वाथ करें १ छटाँक रहने पर छानकर पिलावें।

५४३-लिकुड ऐक्सट्रेक्ट जाम्बूल १ ड्राम, ग्लीसरीन ग्लीसरोफास्फ को० १ ड्राम. कोडीन फास्फेट आधा ग्रेन, जल १ औंस दिन में तीन बार।

५४४-यूरोट्रोमीन १५ ग्रेन ३–३ बार पानी से।

५४५-इन्सुलीन १ सी. सी. का इन्जेक्शन चर्मके नीचे दिन में एक बार भोजन के पहिले २०-४० यूनिट या अधिक मधुमेह शक्कर जाने को अत्यन्त लाभप्रद है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

पूयमेह–सुजाक–गनोरिया

५४६-गेरू ऽ–, कपूर ऽ–, शीतलचीनी ऽ–, इनका कपड़छन चूर्ण करलें ३ माशा ताजा जल से ६ बार मूत्र प्रणाली के दाद तथा पूयमेह को बन्द करता है।

५४७-शीतलचीनी ६ माशा, फिटकरी ४ माशा, कत्था ४ माशा बड़ी इलायची के बीज ६ माशा खड़िया मिट्टी ६ माशा राल ६ माशा इनका कपड़छन चर्ण करलें। चार माशा तीन बार गौ दुग्ध से लें। जलन को बन्द करता है।

५४८-शीतलचीनी २ तोला, रेबन्द चीनी २ तोला, कलमी शोरा डेढ़ तोला, कच्ची फिटकरी १ तोला छोटी बलायची दाना १ तोला इनको कूट पीस लें दिन में ६ बार दुग्ध के साथ लें दाह तथा मूत्र का रुक कर आना बन्द होता है।

५४९-सतविरोजा ऽ– कत्था ऽ– भुनी फिटकरी ऽ–, श्वेतचन्दन बुरादा ऽ–, रेवत चीनी ऽ–, गिलेअरमनी ऽ–, संगजराहत ऽ–, हजरतयहूद ऽ–, मिश्री १० तोला, इनका कपड़छन चूर्ण करें। ४ माशा दो बार धारोष्ण दूध के साथ। पूयमेह के सम्पूर्ण रोग दूरहों।

५५०-तूतिया ३ माशा, कत्था १ तो०, फिटकरी ६ माशा, जल आधा सेर इनको क्वाथ करें पावभर जल रहने पर छान शीतल करें। इसकी पिचकारी देने से मूत्र प्रणाली के व्रण ठीक होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

५५१-कोपेवा बाल्सम १४ ग्रेन, म्युसिलेज अकेसिया २८ ग्रेन मैगसल्फ २ ड्राम, जल १ औंस ऐसी दो तीन मात्रा सोपद्रव पूयमेह नाशक है।

५५२-सल्फाडायजिन १ गोली, सोड़ा खाने का १० ग्रेन ऐसी ४ मात्रा। प्रमेह के कीटाणु नष्ट होते हैं।

५५३-पुटाशपरमेगनेटिव आधा ग्रेन, जल १ औंस इससे पिचकारी लगावें।

५५४-प्रोकीनपेनसिलन ४ लाख का मांसपेशी में नित्य इन्जेक्शन दें। रोग होने पर ७ से ११ दिनतक।

५५५-प्रोकीनपेनसिलोन ४ लाख स्टप्टोमाईसीन १ लाख दोनों को मिला रोजाना मांसपेशी में इन्जेक्शन लगावें ७ दिन तक।

५५६-ऐरोमाईसीन २५० मि० ग्राम प्रति ४ घण्टे पर मुख द्वारा जल से ३ दिन तक।

उपदंश—गर्मी—सिपलिस

५५७-बेर की जड़ की भस्म १ तोला, आमके अचार के तेल में मिलाकर सेवन करें। ऊपर ताजा पानी पीवें, तेल खटाई नमक का सेवन न करें उपदंश मिटे।

५५८-गुठली रहित छुआरा १२ माशा सनाय १ तोला, शुद्धमुर्दासन ६ माशा का चूर्ण बनाकर रक्खें। प्रातःकाल ५ माशा ठंडे जल के साथ लें पथ्य में गेहूँ की रोटी घी उपदंश नष्ट होता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

५५९-कुड़ा की छाल १ तो०, मिश्री १ तो०, चूर्ण कर ७ दिन ताजे पानी से लें उपदंश नष्ट होता है।

५६०-दालचीनी ६ माशे आम के अचार के साथ दिन में २ बार, उपदंश को शीघ्र ही नष्ट करता है। चने की रोटी घी डाल बिना नमक की खावें।

५६१-स्वर्णक्षीरी की जड़ १ माशा, कालीमिर्च ७ नग इनको पीस छान दुग्ध से पिलावें। १५ दिन पीवें।

५६२-स्वर्णक्षीरी १ तो० लेकर इसमें पावभर दूध मिलाकर पन्द्रह दिन पिलावें।

५६३-इन्द्रायण के फलों का स्वरस लेकर धूप में सुखावें, बाद को १ माशा की मात्रा में प्रातःकाल कच्चे गौ दुग्ध के साथ देवें। इससे वमन-विरेचन होकर ७ दिन सेवन करने से उपदंश अच्छा हो जाता है। (प्रयोगकालमें चनेकी अलौनी रोटी घी के साथ खावें)

५६४-चोवचीनी का चूर्ण ३ माशा शहद ६ माशे के साथ प्रतिदित तीन बार खावें। फिरंग तथा उपदंश नष्ट होता है।

५६५-मनुष्य के सिर की हड्डी लेकर बारीक पीस लें कपड़े में छान उपदंश के घावों पर लगावें। इससे व्रण शीघ्र अच्छा हो जाता है।

५६६-दालचीनी छः माशा, शीतल चीनी छः माशा कबाबचीनी छः माशा चोव चीनी ३ माशा बड़ी इला-

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१ तोला, तूतिया भस्म १ तोला, शुद्ध सिंगरफ १ तो० सफेद कत्था १तोला, बाबची १तोला, माजूफल १तो० शुद्ध भिलावा १ तो०, शुद्ध पारद १ तो० शुद्ध गंधक १ तोला देशी कपूर १ तोला शुद्ध रस कपूर ६ माशा, पहिले गंधक पारा की कज्जली करें फिर अन्य चीजों का कपड़छन चूर्ण मिला बंगला पान के रस में खरल करके गोरख मुन्डो के बराबर गोली बनावें। १ गोली दूध की मलाई में प्रातःकाल रखकर निगल जावें दंत स्पर्श न होने पावे फिरंग दूर होता है।

५६७-शु० रस कपूर ४ मा० छिलका सहित चना ६ छटांक दोनों को बारीक पीस लें और सेंहुड़ के दूध में १ पहर तक खरल करके चने के बराबर गोली बना लें। एक गोली प्रातः सायंकाल लेने से अधिक विरेचन होता है। ज्यों-ज्यों दस्त कम होते जावेंगे त्यों-त्यों रोग भी कम होता जावेगा—जब उपदंश विष शरीर में नहीं रहेगा। दस्त सर्वथा बन्द हो जावेगा। उपदंश में रामवाण है।

५६८-लवंग १ तोला, कालीमिर्च १ तोला, जायफल १ तोला शुद्ध रस कपूर १ तोला, इनको अदरक के रस में खरल करके चने बराबर गोली बनावें। १-१ गोली प्रातः सायंकाल खावें। पथ्य में दूध घी और भात लें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

५६९—खजूर के पत्ते, बबूल की छाल, गेरू इनका क्वाथ करके कुल्ले करें। उपदंश में मुंह आने पर।

५७०—कचनार और बेरो की पत्तियों का क्वाथ बना कर कुल्ला करें इससे मुंह का आना व उपदंश शीघ्रही अच्छा होता है।

५७१—सफेदा कास्तकारी १ तोला, माजूफल १ तोला चन्दन १ माशा, कत्था १ तोला—१०१ बार धोये हुए गो के मक्खन में मिलाकर मलहम बनावें। इससे उपदंश में बहुत लाभ होता है।

५७२—कसोंधी को पत्ती २० माशे, कालीमिर्च ४ माशे दोनों को भाँग की तरह पीस पीवें। आतशक ठीक हो जाती है।

५७३—बड़ के पत्ते जलाकर राख करलो। इसमें से दो कौड़ी भर राख (३ माशे) पान में रख खाने से शेष रहा उपदंश आराम हो जाता है।

५७४—प्रोकीन पेनसिलन ४ लाख की मात्रा में मांस-पेशी में इंजेक्शन २१ दिन तक दें। बहुत लाभकारीहै।

५७५—आरियोमाईसीन या आइलोटायसिन १ गोली दिन में ४ बार ५ दिन तक दें। प्रारम्भिक अवस्था में तुरन्त लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

वातशूल

५७६—कंजा को पीसकर लगाने से वायुशूल नाश होता है इससे घाव के कीड़े भी मर जाते हैं।

५७७—शंखाहूली का चूर्ण छः माशे, शहद १ तोला मिलाकर दो बार लें वायुशूल दूर होता है।

५७८—एरंड का फल ३ माशे, शहद छः माशे मिला खावें। गर्मी में लाभप्रद है।

५७९—शहद २॥ तोला पानी ऽ। मिला ३ बार लें। सब प्रकार को गर्मी शान्त होती है।

५८०—अडूसा २ तोला पानी ऽ। क्वाथ करें १ छटांक रहने पर दोनों समय पीवें गर्मी में जो चिलक होती है इससे अच्छी हो जाती है।

५८१—शंखाहुली २॥ तो० पानी में मिला ठंडाई करें दोनों समय पीवें। रोग ठीक होता है।

५८२—सोंआ २ सेर पानी छः सेर में भिगो अर्क खींचें १-१ छटांक ३ बार पीवें। गरमी रोग शान्त हो।

५८३—गूलर की लकड़ी की राख कर गर्मी के घावों पर बुरकें उपदंश के घाव ठीक हो जाते हैं।

५८४—हुलहुल के पत्ते १ तो० पीस पानी में ठंडाई कर १ तोला शहद डाल ३ बार लें। रोग अच्छा हो।

५८५—अपामार्ग की जड़ ऽ— मिश्री ऽ— मिला रख

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

ल दिन में ६-६ माशे ३बारलें। गर्मी शांत होती है।

५८६-वनगोभी का चूर्ण ३ माशे, शहद ६ माशे डाल दोनों समय चाटें गर्मी शान्त होती है।

५८७-जयन्ती ब्रूटी का अर्क व चूर्ण ४ माशे शहद में मिला तीन बार लें गर्मी शान्त होती है।

५८८-जलनीम ४ सेर पानी ८ सेर भवके से अर्क खींचे। १-१ छटांक १ तोला शहद डाल ३ बार लें, गर्मी का रोग ठीक होता है।

५८९-सरसों का चूर्ण ४ माशे शहद में मिला ३ बार लें। गर्मी में लाभ होता है।

५९०-करील की जड़ का चूर्ण ऽ= मिश्री ऽ= मिला रखलें। ६-६ माशा २ समय पानी के साथ लें गर्मी ठीक हो जाती है।

५९१-जोड़ तोड़ का चूर्ण करलें ३ माशा मिश्री ३ माशा चूर्ण मिला खावें। गर्मी में लाभकारी है।

५९२-अकरकरा का चूर्ण ३ माशे, शहद के साथ चाटें तो वातज शूल विनष्ट होता है।

५९३-सनाय ऽ- मिश्री ऽ- गर्म पानी के साथ ६ माशे २ बार खावें वायु शूल जाता है।

५९४-सहजना ऽ१ पानी ऽ४ भिगो भवके से अर्क खींचें उसमें से ढाई-ढाई तो० तीन बार १-१ तो०

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

शहद डाल पीने से वायु शूल को लाभ करता है।

५९५-असगंध का चूर्ण ६ माशे, शक्कर ६ माशे, यह एक खुराक है दिन में दो बार लें इससे पित्त एवं कफ का शूल नष्ट होता है।

५९६-गंदना का चूर्ण तोला भर शहद में मिला चाटें वायु रोग निवारण होता है।

५९७-वायसुरई २॥ तोला, पानी डेढ़ पाव, शेष ऽ= क्वाथ कर १ तो० शहद डाल पीवें दोनों समय वायु दर्द दूर होता है।

५९८-जामुन का अर्क पीने से लाभ होता है।

५९९-सोंठ का चूर्ण चार माशे, शहद १ तो० मिला दोनों समय चाटें रोग हरता है।

६००-कालीमिर्च ३ माशे, शहद ६ माशे, मिला चाटें। दिन में ३ बार वायुशूल नाशक है।

६०१-सोंफका चूर्ण छः माशे, मिश्री छःमाशे मिलालें दिन में ३ बार लें। इससे वात, पित्त दोनों प्रकार का शूल नाश होता है।

६०२-अजमायन का चूर्ण ६ माशा, काला नमक ३ माशे मिला ३ बार गर्म पानी से लें। दिन में ३ बार वातज शूल जाता है।

६०३-वायविडंग का चूर्ण ४ माशे, शहद ६ माशे, मिला ३ बार गुनगुने पानी के साथ २ बार लें। कैप

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

शूल नाश होता है।

६०४-एट्रोपीन सल्फ १ – १०० का इन्जेक्शन या नोवेल्जिन का इन्जेक्शन मांशपेशी में दें पेट का वातज शूल तुरन्त नष्ट होता है।

६०५-मार्फिया विद एट्रोपीन का इन्जेक्शन मांसपेशी में दें १ इन्जेक्शन से रोता आदमी हँसने लगता है।

६०६-ए. पी. पी. टेबलेट २-२ गोली ३ बार दें। वायुशूल दुर होता है।

पित्तज ज्वर

६०७-बड़ी हर्र का चूर्ण ४ माशे, शहद में मिला दोनों समय लें। इससे पित्तज ज्वर नष्ट होता है।

६०८-आमला का चूर्ण ४ माशे शहद के साथ प्रातः सायं खावें। रोग नष्ट होता है।

६०९-मेंहदी को पीस कर हाथ एवं पैर के तलुओं पर लेप करावें, हाथ पैर की दाह, फड़कन एवं ज्वर दूर होता है।

६१०-इमली की खटाई २ तोला ऽ। पानो में भिगोदें सुबह मल छानकर १ तो० मिश्री मिलाकर पिलावें दाह एवं पित्तज ज्वर, लू लगना जाता है।

६११-घी ग्वार का गूदा २।। तोला दोनों समय खिलावें। पित्त कफ ज्वर विनष्ट होता है।

६१२-पोदीने का रस २ तोला, शहद १ तो० डाल

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

पिलावें। पित्त ज्वर ठीक होता है।

६१३-आलूबुखारा ६ माशे, जीरा ३ माशे नमक १ माशा पानी में घोंट चटनी बनावें रक्त पित्तज ज्वर जाता है। मुंहमें रख चूसने से तृषा (प्यास) कम हो।

६१४-दूब का रस २ तोला, मिश्री छः माशे डाल ३ बार दें। मुंह से रक्त आना बन्द होता है।

६१५-बांस के कल्ला का रस १ तो० शहद छः माशे डाल दो बार पिलावें रक्त पित्त दूर होता है।

६१६-बंसलोचन असली का चूर्ण १माशा शहद छैमाशे में मिला ३ बार चाटे रक्त पित्त एवं पित्तज्वर दूर हो।

६१७-कासनी का चूर्ण ३ माशे शहद छः माशे में मिला पिलावें पित्त की विकृति ठीक होती है।

६१८-जवासा २ तो०, पानी ऽ। शेष ऽ⁄ क्वाथ कर मिश्री १तो०मिला पिलावें, वात पित्तज नष्ट होताहै।

६१९-कुटकी का चूर्ण छःमाशे, मिश्री छः माशे मिला ३ बार लें। पाण्डु एवं पित्त को शान्त करता है।

६२०-नीव का रस १ तो०, मिश्री छः माशे मिला पिलावें इसको २ बार लेने से खाज-खुजली, पित्त विकार दूर होता है।

६२१-गिलोय को भिगो लुआव निकाल शहद डाल कर खावें, इससे पित्त ज्वर जाता है।

६२२-पित्त पापड़ा का चूर्ण ४ माशे, शक्कर छै

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

माशे मिला ३ बार लें पित्त ज्वर में लाभ होता है ।

६२३-धनियाँ का चूर्ण छः माशा मिश्री छः माशा मिला ठंडे पानी के साथ तीन बार फांके । पित्त विकार व जलन दूर होती है ।

६२४-पित्त पापड़ा, चिरायता, अडूसा, धनियाँ, कुटकी की फूल प्रियंगु प्रत्येक १-१ तो० इनको जौ कुटकर मिलावें द्रव्य २ तोला ऽ। पानी में औटावें आधा जल रहने पर चीनी मिला सुबह शाम पोवें ।

६२५-मुनक्का, बड़ी हड़ का छिलका, नागरमोथा, कुटकी, अमलतास, पित्त पापड़ा प्रत्येक समान भाग जौ कूटकर रखलें । २ तोला कुटा द्रव्य लेकर ऽ। पानी में औटावें, ऽ= मूर्छा, रहने पर छान दो बार पिलावें प्रलाप तथा प्यास नाशक है यह दस्त भी लाता है ।

६२६-गाय का घी कपूर मिलाकर मस्तकपर लगावें ।

६२७-काँसी के पात्र से हाथों को व पैर के तल भाग को रगड़ें ।

६२८-नीम के पत्ते या मुचकन्द के फूल थोड़ा कपूर मिला कर चन्दन की तरह पोसकर मस्तक पर लगावें पैत्तिक शिर शूल को नष्ट करता है ।

नपुंसकता—नामर्दी

६२९-ओंदफली ४ माशे, मिश्री छः माशे गायके दूध

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

के साथ दोनों समय लें।

६३०-ओंधाहूली बूंटी की जड़ अलेसी के तेल में घोंट लगाने से नपुंसकता जाती है।

६३१-मालकांगनी का चूर्ण ३ माशे, मिश्री ४ माशे मिला दोनों समय खावें बुद्धि स्मरण शक्ति बढ़ती है रोग शान्त होता है।

६३२-ब्रह्मदण्डी के पत्तों का चूर्ण ३ माशे, मिश्री ३ माशे दोनों समय दूध के साथ लें।

६३३-प्याज का रस इन्द्रिय पर मलने से रोग जाता है इन्द्री कठोर होती है।

६३४-शोतलचीनी (अंकोल) का तेल इन्द्री पर लगावें इन्द्री पुष्ट होती है।

६३५-मूली के बीज का तेल इन्द्री पर मलें।

दाह–जलन

६३६-गुलाब का अर्क दो-दो तो० दिनमें ३ बार लें।

६३७-सेवती का अर्क २-२ तो०, दिनमें ३ बार लें।

६३८-चमेली के फूलों का अर्क २–२ तोला दिन में तीन बार लें।

६३९-झरबेरी के बेरों का चूर्ण छः छः माशे दिन में ३ बार लेने से दाह एवं प्यास को ठीक करता है।

६४०-सीताफल दिनमें २ बार खानेसे दाहमें लाभहो।

६४१-अमरूद का पका फल खाने से दाह दूर होतीहै।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

६४२-नीबू के बीजों को निकाल दें फिर उसमें काली मिर्च भरकर कुछ गर्म कर चूसने से दाह ठीक होती है।

६४३-हुलहुल के बीज ३ माशे २ बार खावें।

६४४-मुलहटी को छोलकरे मुंह में रख कर चूंसने से दाह एवं प्यास दोनों शान्त होते हैं।

६४५-पित्तपापड़ा का चूर्ण ३ माशे शहद छै माशे दिन में ३ बार लें, दाह दूर करता है।

६४६-मक्खन व घी को १०० बार कांसे की थाली में घोलें इसके लगाने से दाह अवश्य दूर होती है।

६४७-बकरी का दूध मलने से दाह में लाभ होता है।

६४८-कांसे के बेला को पैर के तलुओं व हथेली पर मलने से दाह दूर होती है ज्वर कम होता है।

६४९-सफेद चन्दन, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, कमल डंडो. सोंफ धनियां, खस, नागरमोथा, कमलगट्टा, की गिरो पद्माख, आंवला सब समान भाग लेकर जौकुट करलें। इसमें से २ तो०, लेकर भावभर जल में क्वाथ करें आधपाव पानी रहने पर छान शोतल कर पिलावें प्रातः-सायंकाल, दाह दूर करने में सर्वोत्तम है।

६५०-एलिक्जर विटामिन बी कम्पलेक्स १-२ चम्मच दिन में तीन बार लें।

६५१-विटामिन बो कम्पलैक्स २ सी. सी. का इन्जेक्शन मांसपेशी में दें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

चित्तव्याकुलता–घबराहट

६५२-हजारदाना का चूर्ण ३ माशे मिश्री ३ माशे पानी के साथ ३ बार लें घबराहट दूर होती है।

६५३-बड़ी इलायची नग ४ भूनकर बीजों को पीस १ तो० शहद में मिला १-२ उँगली बराबर चटाते रहें। घबराहट एवं प्यास रोकती है।

६५४-कोरामीन लिकुट १०-१० बूंद दिन में ४ बार १ तो० पानी में मिला कर ४ बार दें। घबराहट दिल की कमजोरी नाड़ी क्षीणता को ठीक करती है किसी भी रोग में इसे दे सकते हैं।

६५५-कोरामीन का इन्जेक्शन मांसपेशी में दें। घबराहट दिल की कमजोरी, शीतांग, नाड़ी क्षीणता शीघ्र दूर होती है।

तृषा–प्यास अधिक लगना टापी (थिरस्ट)

६५६-आलूबुखारा भून कर मुंह में रख चूसें तृषा को रोकता है।

६५७-धनियाँ, अडूसा, आँवला, काली मुनक्का, पित्त-पापड़ा, प्रत्येक बराबर २ लें जौकुट कर रखलें इसमें २।। तो० लेकर १ सेर पानी में रात को भिगोदें प्रातः छान थोड़ा २ पिलाइये तृषा को शान्त करता है।

CC-0. In Public Domaih. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

६५८-पोपल वृक्ष की छाल लेकर अग्नि में जला गर्म पानी में बुझादें शीतल होने पर छानलें इसमें से २-२ तोले कई बार पिलावें प्यास को कम करता है।

६५९-धनियां २ तो०, शहद छः माशे, चीनी १ तो० मिला इसमें से थोड़ा २ पिलावें।

६६०-पिपरमेंट मुख में रख चूसें, तृषा कम होती है।

६६१-ग्लूकोज १-२ चम्मच जल में मिलाकर कई बार पिलावें। तृषा कम होती है।

हैजा-विशूचिका-कालरा

६६२-पिपरमेंट, अजवायन का सत, कपूर, तीनों को समान भाग लेकर शीशो में भरदें सबका पानी जसा हो जावेगा इसमें से १०-१० बंद बताशे में डालकर दें, कै, हैजा को ठीक करता है।

६६३-आक की जड़ की छाल ऽ-, अदरक छिली हुई ऽ- दोनों को बारीक पीस जंगली बेर से बड़ी गोली बनावें १-१ घण्टे में १-१ गोली खाकर ऊपर से प्याज का रस २-२ तो० पिलावें। कै, वमन, दस्त, होना दूर होता है। हैजे के लिए अनमोल दवा है।

६६४-आक की ताजा जड़ का छिलका ६ माशा, आक की लौंग छः माशा, काला नमक १ तो०—इन सबको खूब बारीक पीस लें। जंगली बेर बराबर

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

गोलियां बना छाया में सुखालें। १-१ घण्टे में १-१ गोली खिलाकर ऊपर से निम्न दवा पिलावें।

६६५-पोदीना के पत्ते १॥ तो०, बड़ी इलायची ४ नग दोनों को कूट १ सेर पानी में गर्म करें आधा रहने पर छानकर रखलें, इसमें दो-दो तोला पानी थोड़े २ अन्तर से देते रहें। इससे दस्त, वमन को आराम होकर चित्त ठीक हो जाता है।

६६६-कपूर १ माशा, अर्क प्याज १० तोला में मिला कर शीशी में भरदें। ६-६ माशा दवा किसी चम्मच में लेकर देते रहें। एक ही दिन में आराम होजावेगा।

६६७-लालमिर्च ऽ— लेकर कपड़छन कर लें फिर पानी के साथ पीस जंगली बेर के बराबर गोली बनालें एक-एक घण्टे में लौंग नग २५ लेकर पानी में औटावें आधा पानी रहने पर ऊपर से इसे पिलादें।

६६८-जायफल एक नग लेकर २॥ तोले मीठे तेल में मिलाकर पैरों पर मलें। हड़फूटन, ऐंठन, हैजे को दूर करता है।

६६९-चिरचिरी की जड़ ३ माशा जल ऽ— जड़ को जल में पीसकर तीन बार दें।

६७०-बेल का गूदा ४ माशा, जायफल ३ माशा, सोंठ ३ माशा, जल ऽ। इसका क्वाथकर तीनबार दें। विशूचिका नाशक है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi.Research Academy

६७१-बड़ी इलायची १ तो०, लवंग १ तो०, पीपर १ तो० मेंहदी १ तो०, सफेद चन्दन १ तो० बेर की गुठली की गिरी १ तो०, धान की खील १ तो० इनका कपड़छन चूर्ण कर मिश्री मिला रखना, ३ माशा मधु के साथ ३–४ बार। वमन निवारक है।

६७२-कलमो शोरा १ पाव, जल ऽ।, १–१ चम्मच ३ बार पिलावें। मूत्र त्यक्त होने लगता है।

६७३-भुनीसोंठका चूर्ण सेंधानमक आधीछटाँक-शरीर पर मर्दन करना, पसीना निकलना बन्द होता है।

६७४-क्लोरोडीन २० बूंद, एसिड सल्फ्यूरिकडिल २० बूंद, टि. कैप्सीकप ५ बूंद, एक्वामेंथापिप १ औंस २ घण्टे पर। या अर्क कपूर (डा० वर्मन का) १०-१० बूंद दें, १ घंटे तक पानी न दें शुरू अवस्था में।

६७५-सल्फाग्वाईडोन १ गोलो, सोड़ावाई कार्व ५ ग्रेन ४—४ घंटे पर जल से।

६७६-क्लोरोंमाईसेटीन तथा टैरामाइसीन में से किसी का प्रयोग विशूचिका की प्रारम्भिक अवस्था में करने से बहुत लाभ होता है। ३–४ घंटे पर १-१ गोली।

रक्तदोष–खूनखराबी

६७७-दिमाजिरो १ तो०, कालीमिर्च नग ३१ ठंडाई की तरह प्रातःकाल छान पोवे रक्तदोष दूर होताहै। इसके ऊपर घी खाना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

६७८-चोवचीनी २ तोला, मुंडी २ तोला, उसवा २ तोला, उन्नाव २ तोला, आंवला २ तोला, हड़का वक्कल २ तो०, चिरायता २ तोला, पानी ऽ। शेष ऽ।। खांड ऽ।। डाल औटा छानकर रखलें। इसमें से २।।-२।। तोला पिलावें।

६७९-चिरायता ऽ५ वर्ग सितारा ऽ।- उन्नाव ऽ।- मुण्डी ऽ।। नीलोफेर ऽ। चिरमिटी ऽ।। उसवा ऽ।। सनाय ऽ।। मंजीठ ऽ।- बावची ऽ। अनन्तमूल ऽ।। नीम की छाल ऽ।।। बबूल की छाल ऽ।। संदल ऽ।। नीम के फूल ऽ।। पानी २० सेर रातभर भिगोकर सब चीजों को जोकुट कर रातभर भिगो दें। सुबह भवके द्वारा १० बोतल अर्क खोचें। सुबह-सायंकाल २।।-२।। तोला १ तोला शहद में डाल पीवें। ख़ून साफ करे।

६८०-तुलसी की पत्ती १ तोला ऽ। पानी में उबाल आधी रहने पर १ तोला शहद डाल सुबह-शाम पीवें। रुधिर विकार नष्ट होते हैं।

६८१-नीम को पत्ती छै माशे, नीम की छाल २ तो० पानी ऽ।- का क्वाथ करें। ३ छटांक शेष रहने पर १ तोला शहद डाल दोनों समय लें। खून साफ होताहै।

६८२-मछेलो का चूर्ण ४ माशे कालीमिर्च १ माशा चूर्णकर गुनगुने पानीसे २बारलें। रक्तविकार दूर हो।

६८३-कचनार की छाल का चूर्ण ३ माशे, शहद १

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

तोला के साथ चाटें २ बार, रोग नष्ट होता है।

६८४-रुद्रवन्ती का चूर्ण ३ माशे, शहद ६ माशे मिला दिनमें दो बार लें। रक्तदोष में लाभकारी है।

६८५-गोभी का साग खाना खून विकार में लाभ करता है।

६८६-उसवा ऽ॥ सनाय ऽ=पानी ऽ८ सेरमें जोकुट कर रातभर भिगोदें। सुबह भबके द्वारा ४ बोतल अर्क खींचें सुबह-शाम २॥-२॥ तोला अर्क १ तोला शहद डाल कर पीवें, रक्तदोष, विकार दूर होते हैं, दस्त साफ होता है।

६८७-निसौथ का चूर्ण छः माशे, शहद १ तो०, में मिला चाटें। दिनमें दो बार। रक्तदोष दूर होता हैं दो-तीन दस्त रोजाना होते हैं।

६८८-कुसुम के फूल ऽ॥ पानी ८ सेर रात भर भिगो भवके द्वारा छः बोतल अर्क खोचें। सुबह-शाम २॥-२॥ तो०, अर्क १ तोला शहद डाल पिलावें। रुधिर विकार दूर होते हैं। कुसुम के फूलों का तेल लगाने से जमा हुआ रुधिर पतला हो जाता है। रुधिर विकार शान्त करता है।

६८९-मिल्कविद आयोडाइड का इन्जेक्शन मांसपेशी में हर तीसरे दिन लगावें १० इन्जेक्शन लगावे। खून साफ होता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

भस्मक—भूख अधिक लगना

६६०-अपामार्ग के पत्ते छै माशा, या अपामार्ग की जड़ छै माशे, अपामार्ग के बीज १ तोला पानी के साथ खावें। ४ दिन तक, रोग ठीक हो जाता है।

ताऊन—महामारी—प्लेग

६६१-नीम को पत्ती, कालीमिर्च के साथ पीसकर गर्म कर लगाने से गिल्टी बैठ जाती है।

६६२-निर्वसी पीसकर लेप करें। इससे गिल्टी ठीक होती है।

६६३-फिटकरी का फूला १० तोले, नौसादर पकाया हुआ, कालीमिर्च, सोनागेरू, तीनों ५-५ तोले, गुड़ १० तोले लें। पहिले गुड़ को खरल में घोटे नरम होने पर औषधियों का चूर्ण थोड़ा २ डाल मर्दन करते जावें—बाद में १-१ रत्ती की गोली बनावें। गोली सोनागेरू के चूर्ण में डालते जावें। १ से २ गोली ३-३ घंटे के अन्तर से जल के साथ दें। इस गोली के साथ पपीता का चूर्ण २-२ रत्ती दिन में ३ बार दें। इसमें से ४-६ मात्रा देने पर प्लेग का ज्वर उतर जाता है। भूख लगने पर चाय पिलावें।

३६४-सल्फेडायजीन २४ टिकिया—पहली मात्रा ८

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

गोलो इसके बाद २-२ टिकिया ४-४ घण्टे में आधे गिलास सोडावाईकार्व में पानी मिला उसके साथ।

६९४–मिवाजोल, सल्फेडायजोन और स्टैप्टोमाईसीन इनमें से कोई १ इन्जेक्शन मांसपेशो में दें यह इन्जेक्शन विशेष उपयोगी हैं।

६९५–एम. बी. ६९३–पहलो माला ४ टिकिया बाद में दो टिकिया ४–४ घण्टे में।

व्रण–फोड़ा–अल्सर

६९७–पीपल के पेड़ का दूध लगाने से व्रण ठीक होता है। फोड़ा बैठ जाता है।

६९८–मोंगरा के पत्तों की टिकिया बना बांधने से फोड़ा बैठ जाता है।

६९९–कंजा की गुद्दी का लेप करने से फोड़ा बैठ जाता है।

७००–सिंदूर दही मिलाकर पान पर रख बाँधने से गाँगन फोड़ा ठीक हो जाता है।

७०१–शहतूत की छाल पीसकर थोड़ा नमक मिला टिकिया बनाकर लगाने से फोड़ा अच्छा होता है।

७०२–चन्दन का तेल लगाने से गर्मी की फुन्सी ठीक हो जाता है।

७ ३–मेंहदी के पत्तों की टिकिया नमक डाल बांधने से व्रण ठीक होता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

७०४-सीसम के पत्तों का लेप गर्म कर करने से छाती का दर्द जाता है और फोड़ा अच्छा होजाता है।

७०५-धतूरा की पत्ती पीस टिकिया बना बांधने से व्रण ठीक होता हैं।

७०६-कनेर के पत्तों को पीस टिकिया बना लगाने से घाव अच्छा हो जाता है।

७०७-गोभो के पत्तों का लेप करनेसे व्रण ठीक हो।

७०८-अरनी का तेल लगाने से सिरकी गंज ठीकहो।

७०९-मालकांगनी की टिकिया में नमक और कत्था डाल बांधने से फोड़ा अच्छा हो जाता हैं—घाव के कीड़े मर जाते हैं।

७१०-नागोरी असगन्ध का चूर्ण २॥ तोला मीठे तेल में डाल जला छानकर लगावें, फोड़ा अच्छा हो।

७११-मोंगरे का पंचाग पीस नमक डाल तेल में मिला लगाने से फोड़ा फूटकर अच्छा होजाता है।

७१२-सहजना के पत्तों की टिकिया बांधने से फोड़ा ठीक होता है।

७१६-सत्यानासी के फल के बीज पानीमें पीस लगाने से फोड़ा बैठ जाता है।

७१३-गुलाब के फूलों की टिकिया बांधने से घाव भर जाता है।

७१४-कांधो के पत्तों को लुगदी बांधने से फोड़ा का

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

घाव ठीक हो जाता है ।

७१६-गूलर का दूध या छाल नमक डाल लगाने फोड़ा या गिल्टी, कखराई बैठ जाती है ।

७१७-बिषखपरा की पत्तियों को पीस टिकिया बांधने से फोड़ा अच्छा हो जाता है ।

७१८-बनगोभी के पत्तों की लुगदी बना बाँधने फोड़ा अच्छा हो जाता है ।

७१९-सरफोंका के पत्तों को लुगदी फोड़े पर बांधे

७२०-हिरनखुरी की लुगदी बाँधने से फोड़ा जाता है ।

७२१-सतावर पीस कर घाव पर लगाने से पुरता है ।

७२२-सरफोंका के पत्तों की लुगदी बना तेल में छानकर गज में लगाने से लाभ होता है ।

७२३-तमाकू का पत्ता गर्म कर बांधने से फोड़ अंडवृद्धि ठीक होती है ।

७२४-तेल मोठा ऽ। सफेंदा कास्तकारी ऽ, ऽ=, वि ोजा २ तोला गीला, नीलाथोथा ६ कारबोलिकएसिड २ तोला—सब चीजों को आं गर्म करें जब तार बँधने लगे उतार लें । फो फैला गर्म कर फाड़े पर चिपका दें ।

७२५-हल्दी ऽ सफेदा ऽ इनको कपड़छनकर

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

कडुए तेल में मिला फोड़ों पर लगावें।

७२६-बोरिक एसिड १ औंस, बैसलीन ६ औंस, फोड़ा-फुन्सी घाव पर लगावें।

७२७-जिंक आक्साईड १ ड्राम, बैसलीन २ औंस, फोड़ा-फुन्सी पर लगावें।

७२८-कोम्वायोटिक १ ग्राम को २ सी० सी० डिस्टिलवाटर में घोल कर मांसपेशी में इन्जेक्शन दें। गन्दे जख्मों को ठीक करता है।

७२९-प्रोकीनपेनसिलीन ४ लाख मांसपेशी में दें जाना गन्दे घावों को ठीक करता है।

७३०-क्लोरोमाईसेटीन १ इन्जेक्शन मांसपेशी में लगा दें।

अग्निदग्ध आंच से जलना

७३१-राल ऽ— नारियल का तेल ऽ≡ विधि नारियल तेल में राल मिलाकर चूने के निथरे पानी से १०१ बार धावें। इसे जले हुए स्थान पर लगावें इससे जले-घाव भी शीघ्र अच्छे होते है।

७३२-सिरस की छाल की राख या छाल का चूर्ण लगाने से आराम होता है।

७३३-लिसोड़े के पत्ते जलाकर जले हुए स्थान पर या तेल-चुपड़ ऊपर से इसे बुरक दें। जले हुए अच्छे हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

सोम रस

७३४-जलजमुनी कपड़छन कर चूर्ण ३ मा०, शहद ६ माशे, मिला ३ बार लें। सोम ठीक हो जाता है।

७३५-दुद्धी छोटी का चूर्ण ६ माशे, मिश्री ६ माशे, मिला दो बार लें सोम ठीक होता है।

७३६-पियाबाँस की पत्ती १ तो०, मिश्री १तो० मिला रखलें मात्रा ६ माशा ताजा पानी से दिनमें २ बारलें।

७३७-जवासा २॥ तो०, पानी ऽ। शेष ऽ— क्वाथ कर छान १ तो० शहद डाल २ बार लें। सोम रोग शीघ्र अच्छा होता है बच्चों का डब्ब [पसली चलना] रोग भी इससे अच्छा हो जाता है।

राजयक्ष्मा—तपैदिक—टीबी (थाईसिस)

७३८-अडूसा की जड़ १ तो, पानी ऽ। शेष ऽ— क्वाथ कर छान १तोला शहद डाल पीवें रोग अच्छाहोताहै।

७३९-झाऊ की पत्ती ऽ४ पानी १६ सेर रात भर भिगो कर सुबह भवके से ८ बोतल अर्क खींचलें २॥ तोला तीन बार लें पीते वक्त ६ माशे मिश्री मिलालें राजयक्ष्मा ठीक होती है।

७४०-कंघी बूंटी के पत्ते ६ माशे, मिश्री ६ माशे, ठंडाई की तरह दो बार लेने से पुराना बुखार ठीक होता है।

७४१-नाई बूंटी को पानी में पीस छान १तो०, शहद

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

डाल दोनों समय पीवें। इससे पुराना ज्वर जाता है।

७४२-महासुदर्शन चूर्ण और गिलोय १-१ तोला, काली मुनक्का और मुलहटी ६-३ माशा, अडूसेके पत्ते २० नग १६ गुने जल में क्वाथ करें चौथाई भाग जल रहने पर छान लें। ऊपर के क्वाथ में ३ हिस्से कर दिन में ३ बार लें। इसके पीने से ज्वर-कास कफ-रक्तस्राव मलावरोध दूर होता है तथा शान्ति और शक्ति प्रदान करता है।

७४३-दालचीनी १ तोला, इलायची छोटी के बीज दो तो०, पोपल ४ तोला, वंशलोचन ८ तोला, इनका कपड़छन चूर्ण करलें। एक से तीन माशा दो तीन बार घी व मधु के साथ प्रातः सायंकाल कास पार्श्व शूल तथा जीण ज्वरादि नाशक है।

७४४-गाय का दूध या बकरी का दूध ऽ। पीपल नग ५ पानो ऽ। इसे औटावें केवल दूध रह जाने पर ३ माशा खूबकला फाँक कर ऊपर से इस दूध में १ तोला मिश्री डाल कर पिलावें, जीर्ण ज्वर में अवश्य लाभ होता है।

७४५-बसंत-मालती १ रत्ती. छोटी पीपल चूर्ण २ रत्ती, मधु तीन माशा, मिला प्रातः सायंकाल लें। राजयक्ष्मा में विशेष हितकर है।

७४६-नेकोडीन प्रतिदिन १-१ चम्मच लें। कास

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

को यक्ष्मा में हितकारी है।

७४७-ग्लाइकोहीरोइन १ ड्राम, अधिक खाँसी होने पर देना चाहिए।

७४८-माल्टएक्ट्रेक्ट विद काडलीवर आइल पुष्ट तथा बलशाली बनाता है।

७५९-स्टप्टोमाईसीन १ ग्राम को मात्रा में पेशीगत दैनिक व हर तीसरे दिन आवश्यक होने पर दिन में दो बार भी दिया जाता है। कुल ४५ ग्राम लगाना पर्याप्त होता है।

७५०-पैराअमाइनो सेलीसिलिक एसिड (पी.ए.एस.) पास चार ग्राम दिन में ३ बार रोगोन्मुक्त होने के एक महीने बाद तक सेवन करना चाहिए।

छाती की पीड़ा-रोग

७५१-अकरकरा का चूर्ण १ माशे शहद डाल कर खाने से रोग ठीक होता है।

७५२-उस्वा २ तो०, पानी ऽ।= क्वाथ करें ऽ= रहने पर २ तो० मिश्री डाल पीवें। दिन में २ बार पीवें छाती की पीड़ा ठीक होती है।

७५३-चिरायता २ तो० पानी ऽ। क्वाथकरें आधपाव रहने पर छान १ तो० शहद डाल पिलावें छाती की पीड़ा नष्ट होती है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

७५४-गूलर का चूर्ण ६ माशे मिश्री ३ माशे ऐसी ३ खुराक लें। छाती का दर्द ठीक होता है।

७५५-आकाशबेल २तो०, पानी ऽ।≡ शेष ऽ≡ क्वाथ कर छान ३ बार लें। इसमें एक तो० शहद डाल लें। ३ बार लें दर्द ठीक होता है।

७५६-इन्द्र जौ ६ माशे, शहद १ तो० में मिला दिन में तीन बार लें पसली को पीड़ा नष्ट होती है।

७५७-हुलहुल के बीज ४ माशे, शहद १ तो०, में मिला चाटें दो बार। इसी को छाती पर लगाना भी चाहिए छाती की पीड़ा में उपयोगी है।

७ ८-खोया ऽ= नमक एक तोला, दोनों को मिला पोटली बांध गर्म तवे पर रख छाती को सेकें। छाती का दर्द तुरन्त कम होता है।

७५९-ऐंटीफिलेजिस्टीन को गर्म कर कपड़े पर फैला छाती पर चिपका दें, छातीके दर्द में निहायत मुफीद है।

७६०-प्रोकोन पेनसिलन ४ लाख का इन्जेक्शन मांस-पेशो में दें। छाती की पीड़ा निमोनियाँ को ठीक करता है।

योनिदोष--गर्भाशय दोष

७६१-कंजा की मिंगी ४ सेर पानी १६ सेर रात को भिगोदें सुबह भवके द्वारा अर्क खींचें इसको २।। तो० की मात्रा में ६ माशे मिश्री डाल दिनमें ३ बार लें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

इसी अर्क में रुई का फोया भिगो योनि में रक्खें। योनि दोष ठीक होता है।

७६२-पीपल, कालोमिर्च, उड़द, सोंग, कूठ और सेंधा नमक सब बराबर ले पोस ६ माशे रुई में लपेट योनि में रक्खें योनि की कफ जन्य पीड़ा नष्ट होतीहै।

७६३-गिलोय, त्रिफला, जमालगोटा तीनों १-१ माशा लेकर १ सेर पानी में भिगो छान योनि को धोने से खुजली नष्ट होती है।

७६४-कत्था, जायफल, बिल्वपत्र और सुपाड़ी समान भाग ले पुंज के यूष में पोस छान कर रुई में रख योनि में रक्खे इससे योनि का संकोचन होता है।

७६५-नाग भस्म २ रत्ती शहद में मिला चटावें।

७६६-अशोकारिष्ट २ तो० इतना ही पानी मिला कर दें। सोमरोग दूर होता है।

अशोका २ सी. सी. का मांसपेशी में इन्जेक्शन दें ६ दिन तक, सोमरोग ठीक होता है।

नोट :-प्रदर में गर्भाशय मार्ग से पानी व रक्त जाता है इसमें मूत्र मार्ग से निरन्तर पानी बहता रहता है। सोमरोग और प्रदर में यही अन्तर है।

पथरी-अश्मरी-गौलस्टोन्स

७६७-सहदेई का चूर्ण ६ माशा, मिश्री ६माशा मिला दिनमें ३ बार लें, ऊपर से दूध पीवें, अश्मरी नष्टहो।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

७६८-इन्द्र जौ ४ माशे, शहद ६ माशे मिला ३ बार लें, पथरी नष्ट होती है।

७६९-सोंठ, अरनो, पाषाणभेद, सहजना को छाल, वरना की छाल, गोखरू, ग्वारपाठा, अमलतास यह सब बराबर लें। इसमें से २ तोला लेकर ऽ।= पानी में औटावें तीन छटांक रहने पर होंग १ माशा, जवाखार १ माशा, सेंधानमक १ माशा डाल दोनों समय पीवें, अश्मरी को काट २ कर निकाल देती है।

७७०-अदरक, जवाखार, हड़ और दारू हल्दी सब समान भाग लेकर चूर्ण बनावें ६ माशा चूर्ण दही के तोड़ पावभर में मिलावें, दोनों समय। पथरी नष्टहो।

७७१-कद्दू के बीज, खीरे के बीज, तरबूज के बोज प्रत्येक ५-५ तो०, हजरतहूल ऽ।।= सबको कपड़छन करलें इसमें इतना शहद मिलावें कि चाटने लायक हो जावे और रखलें १ से २ माशा जल अथवा गोखरू के क्वाथ के साथ लें, अश्मरी में अत्यन्त उपयोगी है।

७७२-यवाक्षार १ माशे ठंडे पानी के साथ ३ बार लें, वृक्कशूल नष्ट होता है मूत्र साफ आता है।

७७३-कोलेक्ट्रिना २-३ टिकिया रोजाना।

७७४-यूपेको (मर्क) १-२ टिकिया जल के साथ शूल के लिए।

७७५-सोनाल्जिन १-२ गोली जल के साथ शूल के

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

लिये इससे नींद भी आती है।

गलगण्ड—गण्डमाला

७७६-पित्तपापड़ा ४सेर पानी १२ सेर रा को भिगोदें सुबह भबके से ६ बोतल अर्क खींचें। २॥-२॥ तोला १ तोला शहद डालकर तीन बार लें। इसी को पीस कर थोड़ा नमक मिला लगावें, गण्डमाला ठीक हो।

७७७-अंडी के जड़ के चूर्ण में थोड़ा नमक मिला लगावें। साथ ही ६-६ माशा दो बार फांकें भी, गलगण्ड ठीक होता है।

७७८-कांच के फल की गिरी ऽ- शहद ऽ- मिला लगावें। गण्डमाला ठीक होती है।

७७९-सफेद अण्डी की जड़ की छाल १ सेर, दूध ५ सेर घड़े में गर्म कर जमावें प्रातः इसको मथकर घृत निकालें इसमें जंगाल १ माशे पीसकर गण्डमाला पर लगावें। गण्डमाला दूर होती है।

७८०-मूंग १ तोला, बिनोला १ तोला को भस्म करें घी से गांठों को चुपड़ इस भस्म को बुरक दें। गण्डमाला दूर होती है।

७८१-अकोला की जड़ की मिट्टी २ तोला को जल पीस कर लेप करें। व्रण, ग्रन्थिनाशक है।

७८२-अजमायन का चूर्ण २ माशा, कबीला १ माशा

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

दोनों को पीस घो में मिलाकर लेप करें। ग्रंथिहर है।

७८३-गौ घृत ऽ- में सुहागा १। तोला को धीरे २ पकावें, इसका लेप लगावें। ग्रथि नष्ट होती है।

चोट की सूजन

७८४-आक को जड़ की छाल पीस नमक डाल लगावें तो दर्द दूर हो और सूजन नष्ट हो।

७८५-घीग्वार के गूदे में हल्दो डाल मिला लेप करें ऊपर से आक का पत्ता सेक कर बांधें। सूजन एवं दर्द नष्ट हो।

७८६-राई का तेल लगाने से सूजन जाती है।

७८७-तारपीन का तेल ऽ- कपूर १ तो० दोनों को मिलाकर लगावें सूजन व दर्द ठीक होता है।

७८८-हल्दी को पीस तेल में मिला गर्म कर लेप करें। सूजन ब दर्द नष्ट होते हैं।

७८९-नागौरो असगंध ६ माशे, मिश्री ६ माशे दूध के साथ दोनों समय फाँकें रोग दूर होता है।

७९०-इन्द्रायन को पीस तेल मिला गर्म कर लगावें। सूजन दूर होनो है।

७९१-इश्क पेचा पोसकर चोट पर लगावें। सूजन दूर होता है।

७९२-तज को पोसकर सूजन पर लेप लगावें ऊपर से आक के पत्ते गर्मकर बांधें सूजन नष्ठ होतो है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

७९३-रसोत को पीसकर पानी मिला थोड़ासा नमक डाल लेप करें ऊपर से आक का पत्ता बांधें । सूजन अच्छी हो जाती है । बाबूना की लुगदी में मीठा तेल डाल गर्म कर लेप करें । सूजन विनष्ट होती है ।

७९४-सत्यानासी को पीस तेल डाल गर्म कर लेप करें, रोग जाय ।

७९५-कपूर कचरी को पानी डाल पीस थोड़ा नमक डाल गर्म कर लेप करें । सूजन बैठ जाती है ।

७९६-कंधी का अर्क पीने से सूजन ठीक होती है ।

७९७-कुसुम का तेल लगाने से सूजन ठीक होती है ।

७९८-मूली का बीज ऽ- मीठा तेल ऽ= मिला लगावें, सूजन बैठ जाती है ।

७९९-ब्रह्मी के पत्ते पीसकर लेप करें ऊपर से आक के पत्तों को गर्म कर बांधें सूजन अच्छी हो जाती है ।

८००-जलजमुनी की लुगदी बांधने से टूटी हड्डी जुड़ जाती है ।

८०१-चितावर को लुगदी में हल्दी डाल कर लगाने से दर्द और सूजन दोनों ठीक होते हैं ।

८०२-ऐंटीफिलेजिस्टीन को गर्म कर कपड़े पर फैलाकर लगावें चोट व सूजन दूर होती है ।

८०३-हल्दी, आवांहल्दो, चोट सज्जी को गर्म पानी में पीस लेप करें । दर्द व सूजन मिट जाती है ।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मुखरोग—मुख के छाले कऊआ लटकना

८०४-पीपल के पेड़ की छाल कपड़छन कर छालों पर दो बार बुरकें। छाले अच्छे होजाते हैं साथ ही जीभ पर काई रोग नहीं रहता।

८०५-अपामार्ग का चूर्ण ३ माशे शहद में चाटने से मुख के छाले ठीक होते हैं।

८०६-चमेली के पत्तों का रस ऽ— घी ऽ। मिला मन्दाग्नि पर औटावें घी मात्र रहने पर छान कर रख लें, इससे मुंह में लगाने से बच्चों का लाल सफेद मुंह आना ठीक हो जाता है।

८०७-इमली को खटाई का रस खाने से गर्मी के मुंह के दाने ठीक हो जाते हैं।

८०८-शहद व शर्बत शहतूत खाने से मुंह के छाले मिट जाते हैं।

८०९-कचनार के रस के कुल्ले करने से गर्मी के छाले अच्छे हो जाते हैं।

८१०-बबूल के पत्तों का रस और गोंद दोनों को मिला जीभ पर लगाने से मुंह का फोड़ा ठीक हो।

८११-अडूसा का रस लगाने से छाले ठीक होते हैं।

८१२-अकरकरा चूर्ण १ माशा, शहद ६ माशे में मिला लगाने से मुख के छाले ठीक होते हैं।

८१३-गोंदनी के पत्ता और फल खाने से छाले मिटें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

८१४-पियाबाँस का रस लगाने से मुंहके छाले ठीकहों।

८।५-चिरमिटी का रस १ तोला, शहद छै माशे मिला छालों पर लगाने से छाले ठीक होते हैं।

८१६-अर्जुन की छाल का चूर्ण शहद के साथ मिला छालों पर लगाने से छाले ठीक हो जाते हैं।

८१७-कुलफा के पत्ते खाने से मुख के छाले ठीकहों।

८१८-जावित्री, गिलोय, दाख, जवासा और त्रिफला इनको जौकुट कर रखलें। इसमें से २ तोला लेका ऽ।≈ पानी में औटावें ऽ≈ रहने पर पिलावें। मुख पाक ठीक होता है।

८१९-कालाजीरा, कूट, इन्द्रजौ इनका कपड़छन चूर्ण करलें। इस चूर्ण के बुरकने से मुखपाक, मुखव्रण, मुख का क्लेद, मुख की दुर्गन्धि नष्ट होती है।

८२०-कुचला १ तो०, गेरू १तो०, सोंठ १तो०सबको महीन पीस पानी में पीसलें इसको गर्म कर कण्ठशालूक (कानों के नीचे गिल्टी होने पर) लगावें ऊपरसे पीपल का पत्ता बांध दें। इससे गिल्टी ठीक हो जाती है।

८२१-फिटकरी २ तोला, हड़ छोटी २ तो०, तुम्बी के बीज २ तो० माजूफल २ तो०, कत्था १ तो० सब को जौकुट कर १ सेर पानी में औटावें-आधपाव पानी रहने पर ऽ≈ मिश्री मिला एकतारी चाशनी करें। इस फुरैरी के लगाने से मुंह के छाले एवं कऊआ लटक

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

ठीक होता है।

८२२—सुहागा १ तोजा, मधु १ तोला मिला लगाना २-३ बार लगावें।

८२३-नीला थोथा ३ माशे, गेरू ऽ— दोनों को कपड़-छन कर रखलें, इसे जीव पर बुरक लार टपकावें, छाले ठीक होते हैं। बच्चों को १ तो० शहद में यही दवा १॥ माशे मिला फुरैरी से लगावें।

८२४-लाईकरफैरी पर क्लोराईड १ ओंस, ग्लेसरीन ८ ओंस दोनों को मिला रखलें। मुंह के छाले एवं कऊआ लटकने को दूर करता है। खांसीमें हितकरहै।

८२५-सल्फेडायजिन १ टिकिया २-२ घण्टे में मुंह में घुलने दें।

८२६-निकोटिनेमाइड १ टिकिया दिनमें ३ बार दें।

८२७-पोटाशक्लोरेट ३० ग्रेन, टि. फैरीपरक्लोराइट १ ड्राम, ग्लेशरीन ३ ड्राम, पानी २ ओंस—१ ड्राम दिन में ३-४ बार ५ वर्ष तक के बच्चे के लिये।

८२८-अरियोमाइसीन (कैपशूल)- ५ एम० जी० पाऊडर को मुंह में ३ बार ३-४ दिन तक छिड़कें। सफेद मुंह ठीक होता है।

८२९-प्रोकीनपेनसिलन ४ लाख का इन्जेक्शन मांस-पेशी में रोजाना दें। ६ इंजेक्शन में लाभ होजाता है।

८३०-बोरिक एसिड ५ ग्रेन, ग्लेसरीन २ ड्राम-मुख

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

पाक पर लगाना २-३ बार।

८३१—बोरेक्स १० ग्रेन, सल्फेनिलेमाइड १ गोली ग्लेशरीन १० बूंद, जल १ औंस—मुख पाक पर लगाना ३-४ बार।

शीतला—माता—चेचक—स्मालपाक्स

८३२-सहदेई का रस ६ माशे, शहद ६ माशे डाल पीवें इससे शीतला नहीं निकलती।

८३३-आक की जड़ ४ रत्ती, पानी ऽ— में डाल औटावें-छानकर ६ माशा मिश्री मिला पिलावें। इससे शीतला नहीं निकलती।

८३४—शंखाहूली का रस ६ माशे, मिश्री ६ माशे मिला पीवें इससे चेंचक को बीमारी नहीं होती।

८३५-सत्यानाशी की पत्ती ३ माशे, ६ माशे मिश्री मिला पीवें।

८३६-हुलहुल के पत्तों का रस १ से १॥ माशा, श्वेत चन्दन घिसकर के साथ देनेसे दाने शीघ्र उभर आतेहैं।

८३७-अनार की छाल, ईख की जड़, गिलोय, मुनक्का, मुलहटी को समान भाग लेकर चूर्ण करलें। इसमें से ३ माशे चूर्ण गुड़ के साथ दोनों समय पिलावें, इससे दाने बिना उपद्रव के निकल कर पक कर ढल जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

८३८-अनन्तमूल, चमेली को पत्तो, चौराई कीं जड़, नागकेशर, लालचन्दन और सिरप की छाल पानो में पीस कर लेप करने से लाभ होता है।

८३९-प्रोकीन पेनसिलन का ४ लाख का इन्जेक्शनदें।

८४०-सिवाजोल, एकब्सोलिन, कौसोलन और पैरा-सिडौन इनमें से किसी एक दवा का सेवन करें। छोटी माता पर।

८४१-एमिनाल ३ ग्रेन की गोली तीन बार दें।

८४२-एल्कामाल, क्रायोजेनिन, २ से ४ ड्राम-भोजन के बाद दें। बड़ी माता पर।

८४३-लाइकर एमोनिया ऐटेसेटिस, १ ड्राम, टि० एकोनाईट २ बूंद स्प्रिट ईथर नाईट्रोसी २० बूंद, सिरपनारंगी १ ड्राम, एक्वामेथापिप १ औंस, ऐसी १ मात्रा दिन में ३ बार। रोग के आरम्भ में ज्वर और बेचैनी के लिए।

८४४-कोरामीन २-२ सी. सी. मांस में हृदय को बल देने के लिए।

८४५-कौम्वायोटिक १ इन्जेक्शन दिन में १ बार मांस में, उपद्रवों के लिये—

कलेजे की निर्बलता

८४६-अरनी का चूर्ण ३माशा, मिश्री ३ माशा मिला

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

दिनमें ३ बार लें। कलेजे की निर्बलता मिटती है।

८४६-पुनर्नवा ऽ४ पानी १६ सेर रातको भिगो सुबह भवके द्वारा अर्क खींचें। २॥ तोला से ५ तोला तक २ बार लें, रोग नष्ट होता है। पुनर्नवा को जड़ का चूर्ण ६ माशे खाने से बालक जल्दी पैदा होजाता है।

८४८-पेनकिलर पोनेसे कलेजे का दर्द तुरन्त दूर हो।

प्रसूति रोग

८४९-इन्द्रायन की जड़ को पीस गर्मकर पेडू पर लेप करने से स्त्री के प्रसव समय जो खून रह जाता है वह खराब खून निकल जाता है।

८५०-सहदेई का चूर्ण ६ माशा शहद मिला दो बार पिलावें।

८५१-सहजना की जड़ ३ माशे, शहद ६ माशे डाल दो बार चाटें तथा जड़ को पोस गर्म कर पेडू पर लगावें, प्रसूति ठीक होता है।

८५२-पाढ़ २॥ तोला, मोठा तेल ऽ में जला छान कर रख लें, इसे सिर में लगाने से प्रसूति का रोग ठीक होता है।

८५३-नकछिकनी का रस सूंघनेमें रोग ठीक होता है।

८५४-आक को जड़ ४ रत्ती शहद में मिला चाटें और लगावें भी।

८५५-प्रसूतिकावस्था में उदर वृद्धि पर पोपड़ामूल

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

का चूर्ण ३-३ माशा ३ बार पानी के साथ दें।

८५६-गिलोय, सोंठ, पियाबांस के पत्ते, आक की जड़ नागरमोथा, सोनापाठा, वेल, गम्भारी, अरनीकी छाल सब समान भाग ले जौकुट करलें। इसमें से १ तोला ऽ। पानी में क्वाथ कर ठण्डा कर १ तोला शहद मिला पिलावें, इससे प्रसूत ज्वर शान्त होता है।

८१७-दशशूल पिसी हुई २ तोला पानी ऽ। में क्वाथ कर ऽ= बढ़चे पर ६ माशे शहद मिला पिलावें। प्रसूति का ज्वर अन्य विकारों मैं अत्युपयोगी है।

८५८-अजमायन, मैंथी दाने के लड्डू बना खावें १ तो० मूसलीभो मिलादें। जच्चा की बादी दूर होती है।

८५९-सोंठ ६ माशे, घो मैं तल दूध के साथ दोनों समय लें।

८६०-दशमूल १ तोला, पोपड़ामूल ५ माशा, शहद २ माशा, पीपल, पानोमें औटावें, ठण्डाहोनेपर पिलावें।

८६१-नरकचूर, वायविडंग, भुनी मिश्री, मकोय की हरी पत्ती, (आग मैं भून लें) सब पीस गोलियाँ बना लें, इन गोलियों को ३ गर्भाशय में ३ गुदा में रक्खें। नसों मैं वायु भरने मैं मुफोद है।

८६२-गिरी बिनौला १ छटाँक, सफेद मूसली, काली मूसलो छोटा गोखरू १-१ तोला पोसें। चाकसू ऽ= लैकर दूध में पका सुखालें, फर आध सेर खाँड पका

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

लड्डू बनालें। प्रातः १ लड्डू खावें।

८६३-हिंगोटा की मिंगी ४ रत्ती झड़बेरी के पत्तों में रख चबावें सिर दर्द प्रसूति ठीक होती है।

८६४-दशमूल की सभी दवाओं को आध-आध पाव लेकर ५ सेर पानी में भिगोदें। सुबह भवके द्वारा ऽ२॥ अर्क खींचें और बोतलों में भरलें। इससे अनियमित ऋतुस्राव, नष्टार्तव, गुल्म, पेट का कड़ा पड़ना, संभोग समय वेदना, हाथ पैरों में जलन, अल्प ऋतुस्राब इत्यादि बीमारियां नष्ट होती हैं।

प्रतिश्याय—जुकाम

८६५-गुलवनफसा ३ माशे, मुलैठी ६ माशे, लिसोड़ा २ माशे सोंठ २ माशे, अड़ूसा की पत्ती २ माशा, कालीमिर्च ७ माशा, मुनक्का ११ नग—ऽ।= पानी में पका ऽ= रहने पर दोनों समय पिलावें। कफ को पतला कर निकाल जुकाम ठीक करता है।

८६६-अजमायन चूर्ण पीस पोटली बना सूंघें प्रतिश्याय नाशक है।

८६७-कालीमिर्च १ तोला, देवदाली फल १ तोला दोनों को महीन पीस सूंघें। प्रतिश्याय नाशक है।

८६८-वचचूर्ग—इसे पोटली में बाँध सूँघना—शुष्क नाशा को आर्द्र करता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

८६९-सल्फायडायजिन १ गोली, ए. पी. सी. १ गोली। एक मात्रा ४-४ घंटे पर दें।

८७०-प्रोकीन पेनसिलन ४ लाख का मांसपेशी में इन्जेक्शन दें।

८७१-आरियोमाइसिन ट्राचेस (२) पेनसिलन लाजेन्जेज (३) ट्रोमेंट इनमें से किसी एक को मुंह में डाल चूसें। गले में खराश, जकड़ाहट में अत्यन्त उपयोगीहै।

८७२-एस्प्रो-१-१ गोली दिन में ३ बार पानी से लें। प्रतिश्याय, इनफ्यूऐंजा में लाभकारी है।

८७३-मैन्थल ५ ग्रेन. यूक्यूलिप्टस आयल २० बूंद, एर्माग्लेडो आयल १ औंस नाक में लगावें।

सन्धिशोथ—आमवात—गठिया

८७४-वत्सनाभ, सोंठ काला जीरा, सहजने की छाल देवदार, सन के बीज, रास्ना धतूरे की पत्ती इनको गौ मूत्र में पीस कर गर्म कर शोथ स्नान पर लेप करने से लाभ होता है।

८७५-बालू की पोटली, नमक की पोटली से सेक करना भी बहुत लाभकारी है।

८७६-हल्दी १ माशा को फांक कर भैंसे का मूत्र ऽ— छानकर पीने से आमवात में लाभ होता है।

८७७-रास्ना, पुनर्नवा, सोंठ, गिलोय, एरंड की जड़ प्रत्येक समान भाग ले जौकुट कर २ तोला ले ऽ।—

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

पानी में औटा ऽ= शेष रहने पर दोनों समय पीवें, इससे सब प्रकार की वायु ठीक होती है।

८७८-एक्टिसाल १ से ३ टिकिया भोजन के बाद दें, ऊपर से जल या दूध लें।

८७९-एम्ब्रोकेशन इसकी धीरे-धीरे मालिश करना।

८८०-अर्गापाईरीन का इन्जेक्शन माँसपेशी में दें। कम से कम ६ इन्जेक्शन तीसरे दिन दें।

८८१-नोवेल्जिन का इन्जेक्शन माँसपेशीमें दें रोजाना,

८८२-लिनीमेंट ए. बी. सी. की मालिश करें।

फोतों की सूजन

८८३-आक के पत्तों पर तेल लगा गर्म कर बांधने से सूजन ठीक होती है।

८८४-भाँगरा का रस गर्म कर लगाने से सूजन जाती है।

८८५-तमाकू के पत्ते गर्म कर बांधने से सूजन बिखर जाती है।

८८६-काक जंघा का रस गर्मकर सूजन पर लेपकरें।

नकसीर—नाक से खून जाना

८८७-गुलाब का अर्क पीने से और सूंघने से नकसीर बन्द होती है।

८८८-अडूसा का रस १ तोला, शहद १ तोला मिला पीवें, नकसोर बन्द होती है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

८८८-माजूफल का चूर्ण ३ माशे, मिश्री ६ माशे पानी के साथ लें, नकसीर बन्द होती है।

८८०-पोता मिट्टी या पीली मिट्टी मस्तक व नाक पर पानी से घोल लगाने व सूंघनेसे नकसीर बन्द होतीहै।

८८१-आंवले पानीमें पीस मस्तक एवं तालूपर लगायें

८८२-पेठे की मिठाई की ४ गाँठे ऽा पानोमें भिगोदें, सुबह पहिले पेठा खाकर ऊपर उसका पानी पीवे २१ दिन तक, नकसोर रोग अच्छा होता है।

८८३-प्याज को कुचलकर रूमाल में बाँध सूंघें, नकसीर का रोग निश्चय ही अच्छा होता है।

८८४-एमोनियाकार्ब २ ग्रेन, पुटाशब्रोमाईड ५ ग्रेन, एकुआ आधा औंस, ऐसी १ मात्रा १० मिनिट में दें।

८८५-बिरूटन १ टिकिया दिन में तीन बार।

८८६-कैलसियम क्लोराईड १५ ग्रेन हैजलोन लिकुड १ ड्राम एकुआ १ औंस, ऐसी १ मात्रा ३-३ घण्टे में।

८८७-कैपसीन १ टिकिया ३-३ घण्टे में।

८८८-कैपसीन (विटामिन) के. का इन्जेक्शन मांसपेशी में दो बार लगावें।

मुंहासा-एकनी

८८३-लस्सन की ३ कली जलाकर भस्म करलें फिर उसमें चमेली का असली तेल १ तोला घी देशी १तो० मिला सुबह-रात लगावें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

९००–जवासा २।। तोला, पानी ऽ।।= का क्वाथकर आधपाव रहने पर (दो बार पीवें) उसी से मुंह भो धोवें। मुंहासे ठीक होते है।

९०१–सिरस के बीज पानी में पीस मुंह पर लगाने से मुंहासे नष्ट होते हैं।

९०२–सल्फर १ ड्राम, ग्लेशरीन १ ओंस, रोजवाटर १० ओंस इसे रोजाना चेहरे पर लगावें।

९०३–भीनीफौर्मीन-थोंड़ी सी मरहम दिन में २ बार चेहरे पर मलें लड़कियों के लिये।

९०४–एस्केमल-इसे मुंह पर लगावें।

९०५–डर्मासल्फ-इसे रोजाना दो बार लगावें।

९०६–वामोफार्म क्रीम (सवा) इसे दो बार रोजाना लगावें।

९०७–वीकोजाइम-१ टिकिया रोजाना २ बार।

९०८–प्रोकीन पेनसिलन ४ लाख रोजाना मांस में।

००९–मिल्क इन्जेक्शन चौथे दिन माँस में।

९१०–ओम्नेसिलोन-एक इन्जेक्शन रोजाना मांसमें।

नेत्ररोग–आईडिसीज

९११–अपामार्ग के रस की २-२ बूंद डालें।

९१२–त्रिफला २।। तोला, ऽ।= पानी में रात को भिगोदें, सुबह छान आंखों में छोटें मारें। नेत्र स्वच्छ होते हैं, धुन्ध जाता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

६१३-गुलाब का अर्क आँख में डालने से आंखों को गर्मी व आँखों को लालो दूर होतो है।

६१४-चमेलो को टिकिया पोस आँख पर बांधें, नेत्र दुखना ठीक होता है।

६१५-इमलो के पत्तो का रस डालने से नेत्र रोग ठीक होते हैं।

६१६-घी ग्वार का रस डालने से गर्मी को आँख आई हुई ठीक हो जातो हैं।

६१७-बबूल को पत्तो की टिकिया बाँधने से आंखों का आना ठीक होता है।

६१८-ओंघाहूलो की पत्तियों की टिकिया बाँधने से नेत्र रोग ठीक होते हैं।

६१९-मुंही का रस आंख में डालने से आंख ठीक हो जाती हैं।

६२०-रसौत को पोस गर्म कर पलकों पर लगावें, इसमें जरा सी फिटकरी भी मिला लें, नेत्र सूजन, रोहे, आँख दुखना ठीक होता है।

६२१-कुकरोंधा की लुगदो बांधें। लालो दूर हो जाती है।

६२२-प्याज का रस १ तोला, मधु १ तोला मिला दोनों बार डालें, नेत्र ज्योति बढ़ती है।

६२३-विषखपरा की टिकिया बाँधने से गुहेरी ठीक

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

होतो है मोतियाबिंद ठीक होजाता है।

६२४—वनगोभी की टिकिया बना बांधें, आँख दुखना ठीक हो जाता है।

६२५-पियावांसा का रस डालने से आँखें ठीक हों।

६२६—नहाने का साबुन (लक्स) जरा पानीमें घोल झाग लगावें रात को, रतोंधो ठीक होती है।

६२७—अरहर की जड़ [पुरानी] पानीमें घिस लगाने से फुल्ली कट जाती है।

६२८-सोंफ को घिसकर लगाने से आँख अच्छी हों।

६२९-फिटकरी को फुलाकर लगाने से आँख के रोग जाते हैं।

६३०-सफेदा ऽ।, मिश्री ऽ=, फिटकरी का फूला ऽ- नीलाथोथा, फुलाया हुआ ६ माशे गुलाब जल में घोंट कर गोली बनावें। पानी में घिसकर आंखों के भीतर लगाने से आंखों का आना, फुल्ली, रोहे आदि आंखों के समस्त रोग शर्तिया दूर होते हैं।

६३१—लाहोरी नमक ६ माशे, बरसात का पानी १ बोतल मिला छानकर रखलें, इसे आँखों में डालने से आंखों के समस्त रोग दूर होते हैं।

६३२—पुराने कच्चे मकान का कोयला पानी में घिस लगावें, गुहेरी ठीक हो जाती है।

६३३—लोंग को घिस गुहेरी पर लगावें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

६३४—मिश्री महीन पीस आँख में लगावें, आँख की गर्मी शान्त होती है।

६३५—गेंदा का रस लगानेसे आँखकी लाली ठीकहो।

६३६—गधा का दाँत पानी में घिस आँखमें लगावें, चेचक से आँख मारी गई हों उसे ठीक करता है।

६३७—लाल चन्दन को महीन पीस लगाने से फुल्ली नष्ट होती है।

६३८—भीमसेनी कपूर १ तो०, घी २॥ तो० मिला लगाने से आँख में ठंडक पड़ कर रोग दूर हों।

६३९—ब्रह्मी को टिकिया बाँधनेसे आँख दुखना दूरहो।

६४०—क्लोरोटोन १ ग्रेन, एसिडबोरिक ५ ग्रेन, डिस्टल्डवाटर १ औंस दिनमें ३ बार नेत्रों में डालें।

६४१—एसिड टैनिक १ ग्रेन, गुलाब जल १ औंस दिन में २-३ बार टपकावें रोहे अच्छे होते हैं।

६४२—आरजीरौल ३० ग्रेन, डिस्टल्ड वाटर १ औंस दिन में २-३ बार डालें। रोहे व आँख दुखना शीघ्र अच्छा होता है।

६४३—पोटार्गल ३० ग्रेन, गुलाब जल १ औंस दिन में २-३ बार टपकावें।

६४४—एक्राफिलेविन १ ग्रेन, डिस्टल्डवाटर १ औंस दिन में २-३ बार डालें।

६४५—हाईड्राइज आक्साइडप्लेवा २-४ ग्रेन, बैसलीन

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

सफेद १ औंस, रात को सोते समय आंख के भीतर काजलकी तरह लगावें रोहों व आंख चिपकनेके लिये।

६४६-बोरिक १ ड्राम, पानी ऽ।। खूब गर्म्माकर कपड़ा भिगो निचोड़ सिकाईकरें, सूजन व रोहे ठीक होते हैं।

६४७-सिवाजोल आई-आइन्टमेंट (२) पेनसिलन आइ-आइन्टमेंट (३) टेरांमाईसीन आई–आइन्टमेंट (४) क्लोरोमाईसीन आँख का मरहम (५)ओरियोमा ईसीन आइ-आइन्टमेंट इनमें से कोई एक मरहम दिनमें २-३ बार लगावें।

कर्ण रोग

६४८-तुलसी का रस कान में डालने से आधाशीशी ठीक होती है।

६४९-घी ग्वार का रस कानमें डालें, शूल बन्द हो।

६५०-इन्द्रायण का गूदा २।। तोला, तेल मीठा ऽ– में पका छान गुनगुना डालें, कर्ण रोग दूर होते हैं।

६५१-बाबूना का रस कान में डालने से बहरापन दूर हो।

६५२-सहजना का रस कानमें डालने से पीव बन्दहो।

६५३-प्याज का रस कान में डालने से दर्द व बहरापन दूर होता है।

६५४-विषखपरा का रस कान में डालने से कान का दर्द और बहरापन मिटता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

६५५-सुदर्शन के पत्तों का रस कान में डालने से कान का फोड़ा और दर्द ठीक होता है।

६५३-एस्प्रीन ५ ग्रेन, फिनेस्टीन ३ ग्रेन, कैफीनसाईट्रास २ ग्रेन, ऐसा १ पुड़िया ३ घंटेमें दर्द बन्दहो।

६५७-सेरीडन (२) कोडोपायरीन (३) सिवाल्जीन (४) इस्प्रो इनमें से किसी एक को १ टिकिया जरूरत के समय, दर्द तत्काल दूर होता है।

६५८-आर्जिरौल 'ओरीजिनल' १ ड्राम, डिस्टल्ड-वाटर १ औंस कान में गर्म बोरिकलोशनकी पिचकारी लगाने के बाद इस लोशन को चंद बूंदें टपकावें।

६५९-एक्रीफिलेविन १ ग्रेन, जेशियन बायलेट १ ग्रेन, ग्लेशरीन एक औंस, कान को दो बार हाईड्रोजन परांक्साईड से साफ करके इसकी चंद बूंद डालें। कर्ण से मवाद जाना ठीक होता है।

६६०-टेरामाईसीन कैपशूल एक कैपशूल ६-६ घण्टे में एक शीशी (१ लाख यूनिट)

६६१-पेनसिलन एक शीशी (एक लाख यूनिट) डिस्टल्डवाटर २०० शीशी हाईड्रोजन से कान साफ करके इसकी ४-५ बूंद दिन में ३ बार डालें। कान का दर्द बहना बन्द होता है।

६६५-मरकेक्रूम १५ ग्रेन, ग्लेशरीन एक औंस पहिले कान को हाईड्रोजन से साफ करके इसकी चंद बूंदें

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

टपका कर रुई लगादें।

६६३-एसिड कार्बोलिक १० बूंद, एसिडबोरिक ३० ग्रेन थाईमौल ५ ग्रेन, ग्लेशरीन १ औंस कान को हाईड्रोजन से साफ कर इसकी चंद बूंद डाल रुई लगादें।

६६४—प्रोकीन पेनसिलिन ४ लाख का इन्जेक्शब मांसपेशी में दें ६ दिन तक।

६६५—एरोविटड्रोप्स एक शीशी दूध या चायमें कान में दुर्गन्धित मवाद बहने पर।

गर्भपीड़ा

६६६-आकाशबेल का रस ऽ।।, मीठातेल ऽ।। मंदाग्नि पर पकायें, तेल मात्र रहने पर छान लें। इसके लगाने से गर्भ पीड़ा दूर होती है।

६६७-उसवा ऽ। पानी ऽ४ शेष ऽ१ छान लें फिर तेल मीठा ऽ१ लेकर काढ़ा छान पानी मिला मन्दाग्नि पर औटायें, तेल मात्र रहने पर छानकर रखलें इसके लगाने से गर्भ पीड़ा शान्त होती है।

६६८-कुलीजन का चूर्ण ४ माशे मिश्री ४ माशे मिला पानी के साथ तीन बार फंकी करें। गर्भ की पीड़ा नहीं होती।

६६९-बाबूना ऽ। पानी ३ सेर में मिला काढ़ा करें। १ सेर शेष रहने पर छानकर रखलें फिर इसमें १ सेर मीठा तेल मिला मन्दाग्नि पर औटायें तेल मात्र

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

रहने पर छानलें, इसके लगाने से गर्म पीड़ा जाती है।

६७०-चिरायता ऽ। पानी ऽ४ का काढ़ा करें १ सेर पानी रहने पर छान लें फिर उसमें १ सेर मीठा तेल मिला मन्दाग्नि पर औटावें। तेल मात्र रहने पर छान कर रखलें इसे लगाने से गर्भ पीड़ा मिटती है।

फीलपांव—घुटना सूज जाना

६७१—मुण्डी का चूर्ण १ तोला कपड़छन कर शहद मिला ३ बार चाटें रोग ठीक होता है।

६७२—भाँगरा का रस १ तो०, शहद १ तो० मिला दिन में ३ बार लें। फीलपांव ठीक होता है।

भगन्दर—फैसटूलाइनएनो

६७३—चोता निसोथ, पाढ़ल, आक, कठूमर, थूअर, सफेद कनेर, वच कलिहारी, हरताल, सज्जीखार, माल काँगनी प्रत्येक १—१ तोला ठण्डे जल के साथ पीस लुगदी बनालें। फिर तिल तेल ४८ तोला, पानी १६२ तोला मिलाकर मन्दाग्नि पर औटावें तेल मात्र शेष रहने पर छानकर रखलें। इसे भगन्दर पर लगावें व्रण रोपण है।

६७४—हड़ चूर्ण २तोला, आंवला चूर्ण२ तोला, बहेड़ा चूर्ण २ तोला, पीपल चूर्ण १० तोला, गुग्गुल शुद्ध १० तो०, इनको घी के साथ खरल कर रखना। आधा तो० सुबह शाम मधु एवं दूध के साथ लें। भगन्दर

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

नाशक है ।

६७५–सत्यानाशी की जड़ की लुगदी में थोड़ा सा नमक मिला कर लगावें, भगन्दर ठीक होता है ।

६७६–निगन्दबावरी की लुगदी में नमक डाल लगावें भगन्दर ठीक होता है ।

६७७–मनुष्य की हड्डी का पाताल यन्त्र से तेल निकाल रखलें इसको भगन्दर के व्रण पर लगावें । ईश्वर विमुख न हो तो अवश्य ही लाभ होता है ।

६७८–बिल्ली की हड्डी का, न्योला की हड्डी का लेप करें । नीम की पत्ती की धूनी देना भगन्दर को ठीक करता है ।

६७९–रूमीमस्तंगी १ माशा, लाख १ माशा, इनको तीन दिन खरल में सूखी ही घोंटता रहे पानी में घोल कर वस्त्र पर लेप कर भगन्दर में लगावें ।

६८०–एनीस्थेसिन ७० ग्रेन, एक्सट्रेक्ट बेलाडोना १ ड्राम, भगन्दर पर लगाना, वेदना नाशक है ।

६८१–इकथ्योल मलहम १० प्रतिशत भगन्दर पर लगावें ।

६८२–पेनसिलन, स्टप्टोमाईसीन, ऐरियोमाइसीन इन में से किसी १का इन्जेक्शन माँसपेशीमेंदें ।

मोच–स्पेन

६२३–हल्दी प्याज चोटमुसब्बर कालीजीरी को पीस

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

कांजो सिरका या पानो में पोस कर कडुआ तेल मिला कर गर्म करके मोच पर बाँधना उत्तम है।

८२४-वेलाडोना मरहम या लिनीमेंट ए. बो. सो. का मोच स्थान पर मर्दन करना ऊपर से रुई को गर्म कर बाँध देना मोच में लाभ कर है।

८८५-फिटकरी २॥ तोला पाव भर पानी में डाल गर्म करें उसमें कपड़ा डाल कर निचोड़ सेक करना इसके बाद रुई को गर्म कर बांध दें।

८८६-इमली को पत्ती को उबाल कर उसके पानो से धोना पत्ती बाँधना मोच को ठोक करती है।

८८७-निगुंडी सहजने की छाल अण्डी की पत्तो एक साथ पीसकर हांडी में पकाकर उसको भाप से सेकना अथवा गर्म कर बांधना भी मोच में लाभकारी है।

❀ बच्चों की कोष्ठ बद्धता ❀

८८८-छुआरा ३ माशा सायंकाल ऽ पानी में भिगो सुबह मल छान पीजावें।

८८९-श्वेदचीनी १ माशा दूध में घिस पिलाना।

८९०-साफ अण्डी का तेल आधा तोला गर्म दूध आधो छटांक प्रातःकाल दें।

८९१-सोड़ा फास्फेट ५ ग्रेन दूध में मिला पिलावें।

नहरूआ रोग पर

८९२-आकके दूध को लगावें। नहरूआ ठीक होता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

९९३–करीलको जड़ का रस लगावें। नहलूआ ठीक होता है।

९९४–बकावन के जड़ की छाल का रस लगाने से रोग दूर होता है।

९९५–सेमल के बीज की लुगदी में गौमूत्र मिलाकर लगावें नहरूआ ठीक होता है।

गंज–ऐलेपेसिया

९९६–आक का दूध मलने से बाल जम जाते है।

९९७–इन्द्रायण बूंटी के पत्तों का रस मलने से बाल उग आते हैं, यह दस्तावर भी है।

९९८–मुंडी के रस को लगानेसे बाल काले होजातेहैं।

९९९–मोंगरा के रस का लेप करने से बाल काले हो जाते हैं।

१०००–माजूफल फल के चूर्ण को पानी में पीस घोल कर लगावें। बाल काले हो जाते हैं।

१००१–घमासा का रस लगाने से बाल उग आते हैं।

१००२–करोल का रस लगाने से बाल उग आते हैं।

१००३–एसिडसैली सिलक १० ग्रेन, आइल लवेंडर ३ बूंद, कैस्टर आइल काफी तादाद में, एसिटोन १ ड्राम, मेथलेटिड स्प्रिट १ औंस, नित्यप्रति इसे बालों की जड़ों में मला करें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१००४-वाइटेक्स, इसे रोजाना बालों की जड़ोंमें मलें। १००५-एसिड नाइट्राइड १ ड्राम, स्प्रिट रेक्टीफाईड २ ड्राम इसे एक दिन छोड़कर रात्रि के समय बालों की जड़ों में मलें।

१००६-टिंचर कैन्थेराइटिस २० बूंद, अल्कोहल ६ प्रतिशत १ औंस इसे रात को बालों की जड़ोंमें मलें।

नष्टार्तव-रजप्रदर्शन किल्लते हैज एमेनोहिया

१००७-काला तिल १माशा, त्रिकुटा मिश्रित ३ माशा, भारंगो ३ माशा, जल १ पाव में क्वाथ करें। १ छटाँक जल रहने पर छान २ तोला पुराना गुड़, गुड़ न मिलने पर २ तो० शक्कर मिला पिलावें। प्रातः सायंकाल।

१००८-मालकांगमी ऽ राई या मज्जोखार ऽ विजयसागर (लकड़ी) ऽ दूधिया वच ऽ सबका कपड़ छन चूर्ण कर रखना—पानी या कच्चे दूध से प्रातः सायंकाल।

१००९-मूलीबीज १ तोला, गाजर बीज १ तो०, मैथी बीज १ तो० इनको कपड़छन चूर्ण करलें। ३-३ माशा गर्म दूध के साथ प्रातः सायंकाल। ३-४ दिन तक।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१०१०-कड़वी तूमी के बीज ४ तो० दन्ती ४ तो० मैन फल ४ तोला सुराबीज ४ तोला बड़ी पीपर ४ तोला जवाखार ४तोला इनका महीन चूर्ण करलें इसमें ४तो० गुड़ मिलाकर इसे थूअर के दूध में पीस छोटी उंगली के बराबर बत्ती बनालें और छाया में सुखालें। बत्ती को गर्भाशय के मुख व योनि में रक्खें, आर्तवस्रावकहै। इस बत्ती को योनि में रखने के साथ नं० १००९ को दवा खिलाने से विशेष लाभ होता है।

१०११-खिरनी बीज की मिंगी—इमे सिल पर पीस वस्त्र में बांध पोटली बना कई दिनों तक योनिमें रखते है। आर्तव प्रवर्तक है। पोटली रोजाना नई बनाते हैं।

१०१२-अजमायन का चूर्ण एक-एक तोला, दिन में दो बार गर्म पानी से लें।

१०१३-अकरकरा ४ माशे गर्म पानी से ३ बार लें रजोधर्म जारी होता है।

१०१३-कड़वी तोरई के बीज को पीसकर ३-३ माशे गर्म पानी से लें, सुबह-सायंकाल। रजोधर्म जारी करता है।

१०१५-विषखपरा की जड़ ६ माशे पानीमें पीस २ बार

---

* सुराबीज—शराब खिंच जाने के बाद जो अवशिष्ट भाग रह जाता है कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

लें रजो धर्म खुलता है।

१०१६-पिलएलोज एट भिई ४ ग्रेन, पिल एलोज एट फेराई ४ ग्रेन—गोली बनालें। १-१ गोली दिन में तीन बार दें।

१०१७-एक्सट्रेक्ट अर्गट (अर्गोटीन) ४० ग्रेन, एपिऔल ड्राम इसे मिलाकर २० कैपशूल में भर दें। एक कैपशूल दिन में ३ बार दें।

१०१८-डाइलोफार्म १ टिकिया २-३बार २ सप्ताहतक।

१०१९-अर्गोपियल, एक टिकिया दिन में दो बार।

१०२०-एलेट्रिस कौर्डियल, एक ड्राम एक औंस जल में मिलाकर दिन में तीन बार।

१०२१-न्यूमेन्ट्रोन गोली एक हजार यूनिट एक गोली भोजन के बाद दिन में ३ बार दें।

गर्भ स्थापन

१०२२-ल्यूटोस्टेव (२) ओवोस्टेव (३) न्यूमेन्सस्ट्रोन इनमें से कोई सा इन्जेक्शन तीसरे दिन दें।

आवश्यक नोट :—इन दवाओं का सेवन किसी योग्य वैद्य एवं डाक्टर की देख-रेख में करना चाहिये।

१०२२-शखाहुली का चूर्ण ६ माशे, मिश्री ६ माशे सेवन करने से गर्भ रहता है।

१०२१-नागौरी असगन्ध ६ माशे, मिश्री ६ माशे पानी के साथ खाने से गर्भ रहता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१०२५-लक्ष्मण बूंटी ३ माशे खाने से गर्भ स्थिति होती है।

११२६-पीपल सुहागा चौकिया बायबिडंग समान भाग लेकर दूध के साथ ऋतु समय पोने से गर्भ रहता है।

१०२७-ऋतुस्नानास्त्रो असगन्ध ६ माशे दूध में डाल कर मिश्री मिला पीवे तो गर्भ रहता है।

१०२८-खिरैटी खाड़ मुलैटी कंधो बड़ के कोमल अंकुर और असगन्ध इनको समान भाग लेकर दूध और घी में पीसकर पोने से वन्ध्या स्त्री भी पुत्रवती होती है।

१०२९-मोर का बीच का चँदवा नग२ गुड़ में लपेट दूध के साथ लें, ऋतुधर्म के समय, गर्भस्थापन होता है।

१०३०-थीलिन २ सौ से १० हजार पावर प्रति सीसी मांसपेशी में इंजेक्शन दें। रजोनिवृत्ति के विकार रजप्रदर्शन पर विशेष उपयोगी है।

१०३१-ओकासा—सटीरिन (२) कर्टिलीन ओलोसाईक्लिन (३) ओवेरियन सब्सटैंवस (४) एन्टोस्टैव (५) इनमें से किसी एक का सेवन करें।

१०३२-आवोसाईविलन इंजेक्शन माँसपेशी में दें। इसे रज प्रदर्शन या कष्टप्रद मासिकधर्म में १५ मिलीग्राम प्रति सप्ताह दें १ से ५ मि.ग्राम के पेकिंग में आता है

१०३३-इस्ट्रोफार्म थोलौल और ल्यूटोसाईक्ली सैवस। वोगर २ प्रकार का आता है। मेल और फीमेल मात्रा

CC-0, In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१ शीशी मांसपेशी में प्रतिदिन दें। वन्ध्या रोग नष्ट करने में उपयोगी है।

१०३४-स्टिल विट्रोल, इसमें प्रति शीशी एक मिली ग्राम और ५ मिलीग्राम आता है। मांसपेशी में दें। यह कष्ट रज, अल्परज, बांझ पर गर्भाशय सम्बन्धी सब रोगों पर उपयोगी है।

गर्भस्राव–गर्भपात

१०३५-कुशा, कांस और एरण्ड और गोखरू इनका कल्क बनाकर दूध में पका मिश्री मिलाकर दें। इससे शूल बन्द होता है।

१०५६-भोंरे के घर की मिट्टी, मोंगरे का फूल, लज्जा वन्ती, धाय के फूल, पीला गेरू, रसौत और राल इनमें से जितनी वस्तुएँ प्राप्त हों लेकर चूर्ण बना शहद से साथ ६ माशे ३ बार चाटें। इससे गर्भपात रुकता है।

१०३७-बच तथा लहसुन के कल्क से दूध पका कर उसमें हींग और काला नमक का प्रक्षेप (डाल) पिलावें। इससे गर्भवती का अफरा दूर होता है।

१०३८-ल्युटो साईक्लीन (बूंट कम्पनी) का १ इंजेक्शन मांसपेशी में दें। सप्ताह में २-३ बार। गर्भपात रोकता है।

१०३९-प्रोजीरोल इन्जेक्शनसे गर्भपात तुरन्त रुकता है।

१०४०-विटामिन ई का इन्जेक्शन भी लाभकारी है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१०४१-सिटामिड टिकिया एक से दो टिकिया दिन में ३ बार देने से यदि नियमित गर्भपात होता हो तो गर्भ की रक्षा होती हैं।

१०४२-विटामिराडौन, विटयोलिन (२) कैलसियम लैक्टड (३) एलेट्रिस एलोक्जिर इनमेंसे कोई दवा एक चम्मच दिनमें ३ बार दें। इससे गर्भकी रक्षा होतीहै।

गर्भवती का वमन

१०४३-वटवृक्ष की डण्डी जलाकर शहद में चाटें।

१०४४-कपूर कचरी गुलाब जल में घोंट मूंग बराबर गोली बना शहद में चाटें, वमन बन्द होती है।

१०४५-गेरू को आग में गर्म कर उसको पानी में बुझा वह पानी पीवें।

१०४६-चावल का धोवन मिश्री मिला ३ माशे धनियां डाल पीवें।

१०४७-आलूबुखारा भिगो पोस नमक डालकर चाटें।

१०४८-मोरपंख, आँवले के बीज, तीनों को जला के राख बना थोड़ी-थोड़ी शहद के साथ चाटें।

१०४९-सिरआई आग्जेलेट ५ ग्रेन, सोड़ावाई कार्ब १४ ग्रेन ग्लूकोज ३० ग्रेन दिन में दो-तीन बार देने से गर्भवती का वमन बन्द होती है।

१०५०-एनऐक्सिन प्रतिदिन एक गोली दें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१०५१-विटामिड एक टिकिया दिन में तीन बार दें।
१०५२-टिंचर आईडोन (रेक्टीफाइड स्प्रिट से बना) एक बूंद प्रतिदिन २।। तो, पानी में मिला कर एक सप्ताह दें सगर्भा को दारुण बमन अवश्य नष्ट होतीहै।

सन्तानिरोध-वर्थकण्ट्रोल

१०५३-चम्पा देशी का फूल एक रोजाना ७ दिन तक रजोधर्म के बाद इससे गर्भस्थिति नहीं होती।
१०५४-अंडी की मिंगी ७ दिन तक रजोधर्म के बाद निगले, गर्भ स्थिति को रोकती है। एक वर्ष तक गर्भ नहीं रहता।
१०५५-हिंगुल से निकाला पारा, गेरू, सफेद फिटकरी ढाक के बीज, तालीसपत्र प्रत्येक एक-एक तो० पारे को छोड़कर शेष चीजों को कूट पीस लें बाद में पारा मिला कर २४ घण्टे घोंटे। इसको मात्रा तीन माशे की है ऋतु से निवृत्ति होने पर चौथे दिनसे शुरू करें। इसको बेर की लाख के काढ़े से देना चाहिए इसका प्रयोग दस-बारह दिन तक करें। दूसरे मास में भी फिर इसी प्रकार प्रयोग करें तीसरे मास में भी-तेरह दिन फिर प्रयोग करें तीन मास तक पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहें। महिला जन्म भर को वन्ध्या हो जाती है।
नोटः-विशेष आवश्यकता होने पर ही इसका प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

करें इससे अधिकतर मासिक धर्म भी रुक जाता है।

१०५६-चैक पेसेरी का स्त्री सेवन करे।

१०५७-फ्रेंचलैदर का पुरुष व्यवहार करे। समागम करने पर भी सन्तान नहीं होती।

१०५८-ओबाट्रिम कौनटैव, टिकिया विधि शीशी के साथ आती है।

१०५९-वौल्पर पेस्ट विधि पैकेट पर लिखी होती है।

दन्त रोग—

१०६०-इमली के बीज का महीन चूर्ण करलें तीन माशे चूर्ण ६ माशे शहद में मिला दो बार चाटें इसी का दांतों में मंजन करने से दन्त रोग दूर होते हैं।

१०६१-अडूसा के पत्ते ऽ= पानी ऽ१ गर्म कर कुल्ले करें तथा ऽ= काढ़े में १ तो० शहद डाल पीवें दन्त रोग नष्ट होते हैं।

१०६२-कचनार की छाल ऽ= लेकर पानी १ सेर में औटावें इसके कुल्ले करने से दन्त रोग दूर होते हैं।

१०६३-बबूल की छाल ऽ= पानी ऽ१ लेकर गर्म करें इसके कुल्ले करने से दांतों की बीमारी ठीक होती है।

१०६४-इन्द्रायण का रस दाँतों पर मलें या राख करके दाँतों पर मंजन करें। दाँतों के रोग नष्ट होते हैं।

१०६५-कंघी की दाँतन करने से और उसका रस दांतों पर मलने से दन्त रोग नष्ट होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१०६६-प्याज के पत्तों का धुआं पीने से दांतों के कीड़े मर जाते हैं।

१०६७-पोने को तम्बाकू (गुड़ मिलो हुई) एक पोटली में बांधकर पानी में डुबा जिधर दांत में दद होता हो उसके दूसरो ओर कान में २-३ बूंद डालें। दांत का दर्द ठोक हाता है।

१०६८-लोंग का तेल वो० पी० लेकर फुरैरी बना दाँतों पर लगावें मसूड़े बैठ जाते हैं दाँद का दर्द तत्काल दूर होता है।

१०६९-नागरमोथा, त्रिकुटा, हड़, वायविडंग, नीम के पत्ते समान भाग लेकर गौमूत्र में पोस गोली बना छाया में सुखा रखलें। सोते समय मुख में रखने से हिलते दांत जम जाते हैं।

१०७०-पोपल, लोध, मैंनसिल, हरोकसोस, फूलप्रियगु तेजबल बराबर लेकर कपड़छन करलें। इसके दाँतों पर मलने से खून जाना, पोव आना ठोक होना हैं।

१०७१-शुद्ध तारपोन का तेल ऽ— कपूर २।। तोला दोनों को मिला रखलें। इसको फुरैरी से लगाने से दाँतों का दर्द, मसूड़े फूलना ठीक होता है।

१०७२-कपूर, हींग, वच, दालचीनी समभाग लेकर महीन पीसलें इसमे से थोड़ा चूर्ण रुईमें लपेट दाँतों के बीच में दबा लेनेसे मिश्रिष्ट होकर डाढ़ और दांतोंका

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

शूल उसी समय नष्ट होता है।

१०७३-कपूर, पिपरमेंट का फूल, क्लोरल हाईड्रेट एक-एक औंस, कार्बोलिक एसिड ३० बूंद मिला लें जल के समान हो जावेगा। इसको फुरैरी दांतों में लगाने से तत्काल वेदना शान्त होती है।

१०७४-ए०पी०सो० या एस्प्रो की एक-एक गोली ३ बार लें दर्द दूर होकर शान्ति मिलेगी।

(२) पेलोलिन एक दो एम्पुल रोजाना मांसपेशी में इन्जेक्शन दें।

स्वरभंग—गला बैठना

१०७५-बहेड़ा की मिंगी का रस चूसने से स्वर मीठा ठीक होता है।

१०७६-गोंदी के फल व पत्तों का चूर्ण शहद के साथ खाने से रोग नष्ट होता है।

१०७७-कुलीजन ५ तोले, कूठ, बच, अकरकरा, लौंग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, इलायची दाने, जावित्री तेज-पात, कपूर, नागरमोथा, कत्था, बहेड़ा एक-एक तोला सबको मिला कूट पान के रस में ६ घण्टे घोंट एक-एक रत्ती की गोली बनालें। इसे मुंह में रखकर चूसें दस गोली तक चूस सकते हैं। इससे गला बैठना, ठीक होता है। जुकाम, कांस और श्वांस में भी हितकर है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१०७८-कस्तूरी ३ माशे, छोटी इलायची के दाने २ तोले लोंग ३ तोले, बंशलोचन ४ तोले, इनको खरल कर बोतल में भरलें। २-२ रत्ती दिन में २ बार शहद २ माशे घी ३ माशे में मिला सेवन करने से आक्षेयिज स्वरभ्रंश और वाक् स्तम्भ दूर होते हैं।

मृगी—अपस्मार—एपिलेप्सी

१०७९-तुलसी का रस ६ माशे, शहद ६ माशे मिला ३ बार चाटें इससे मृगी ठीक होती है।

१०८०-रीठा की गिरी चबाने से रोग ठीक होता है।

१०८१-सहदेई का रस कान में डालनेसे मृगी ठीकहो।

१०८२-आक का दूध तलुओं पर मलने से मिरगी नहीं आती।

१०८३-इन्द्रायन का चूर्ण १॥ माशा कालीमिर्च नग ५ मिला ३ बार लें। इससे मिरगी ठीक होती है।

१०८४-असगंध का चूर्ण ६ माशे मिला ३ बार लें मिरगी ठीक होजाती है।

१०८५-ब्रह्मी का रस एक तोला शहद ६ माशे डाल २ बार लें। मिरगी ठीक होती है।

१०८६-जबासा २॥ तोला पानी ऽ।= शेष ऽ= क्वाथ करें छान एक तोला शहद डाल दो बार लें। मिरगी नष्ट हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१०८७–सफेद गोंगची को महीन पीस लें उसका हुलास सूंघने से मृगी जाती है।

१०८८-घुड़वच का चूर्ण ३ माशे शहद ६ माशे में दिन में तीन बार दें। मृगी नष्ट होती है।

१०७८-पेठे का रस २।। तोला मुलैठी का चूर्ण ३माशा पीस कर पिलाने से मृगी रोग नष्ट होता है। दिन में २ बार लें।

१०९८-सतावर १ तो० दूध ऽ। पानी ऽ। में औटावें जब दूध मात्र रह जाय मिश्री डाल दोनों समय पीवें, मृगी के रोगी को लाभ होता है।

१०९१-ब्रोमोबाल एलीकिंजर १ से २ चम्मच जल के साथ दिन में तीन बार पोवें।

१०९२-एल्डीवेलीरियन एलिकजर एक से दो चम्मच पानी के साथ दिन में ३ बार।

१०९३-फेनीटोइन सोडियम एक टिकिया दिनमें २-३बार

१०९४-टि०बेलाडोना २ बूँद, सोडा ब्रोमाइड १५ग्रेन, क्लोरलहाईड्रेट ५ ग्रेन, एकुआ मेंथापिप एक औंस ऐसी एक मात्रा दिन में तीन बार दें।

१०९५-गार्डनल सोडियस–३ शीशी माँसपेशी में इन्जेक्शन दें।

योपास्मार–हिस्टीरिया

१०९६-बरियारी (बला) की जड़ की छाल का रस

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

६ माशे २० बूंद मधु, एक रत्ती बड़ो इलायचो के साथ चटावें, प्रातःकाल ।

१०९७-अश्वगंधारिष्ट १। से २।। तोला बराबर पानो मिलाकर भोजन के बाद ।

१०९८-खुरासानी वच १ तोला कपड़छन कर रखलें। २-२ रत्ती दिनमें ४ बार बढ़िया घी में चाटें । या मलाई में चटावें । इसके बाद बढ़िया दूध की खीरदें।

१०९९-पीपड़ामूल, वच, जटामासी, मिश्री सब बराबर घोंट पीसकर रखलें । २ से ४ रत्ती तक गुलकन्द या अनार के रस में दें । प्रातःकाल दो बार दें । हृदय एवं मस्तिष्क को उत्तम शान्ति प्राप्त होगी बीमारी हमेशा को मिट जावेगी ।

११००-सर्पगन्धा ५ तोले, दुग्ध वच ५ तोले दोनों कपड़छन कर रखलें । २-२ माशे दिन में ३ बार घी ६ माशे, शक्कर ३ माशे, कालीमिर्च ५ नग मिला गौ दुग्ध से दें । निद्रानाश एवं प्रारम्भिक योपास्मार में अच्छा प्रभाव दिखलाती है ।

११०१-टमाटर का साग खाना लाभकारी है ।

११०२-हींग एक तोला (घी में भूनकर) गुड़ एक तोला, मिला एक-एक रत्ती की गोली बनालें । एक एक प्रातः सायं निम्न दशमूल के काढ़े के साथ दें ।

११०३-दशमूल (दसों दवाएँ मिली) २।। तोला पानी

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

SI= मिला गर्म करें। S= रहने पर नुस्खा ११०२ की गोली खिलाकर ऊपर से इसे १ तो० शहद डालपिलावें।

११०४-बोवेलीन आधा औंस जल के साथ दिन में ३ बार।

११०५-मायनेसीन एक दो टिकिया २–४ बार।

११०६-टि० आसाफठीठा २ ड्राम, टी. वेलेरियन एमोनिमेटा २ ड्राम, टी. कैस्टर २ ड्राम, एकुआ कैम्फर ६ औंस आधे से एक औंस एक-एक घण्टे में जब तक दौरा शान्त न हो।

११०७-ऐक्स० हायोसाइमस पाव ग्रेन, जिंक वलेरियन २ ग्रेन, आसाफठीठा १ ग्रेन जिंक औक्साइड एक ग्रेन ऐसी एक गोली दिन में २-३ बार पानी से बिना दौरे के समय।

११०८-वेलीरियन एक इन्जेक्शन चर्म के नीचे।

११०९-गार्डिनल-सोडियम १ इन्जेक्शन चर्म के नीचे दिन में १–२ बार।

१११०-मौर्फीनसल्फ १ इन्जेक्शन (चौथाई आधा) चर्म के नीचे जिस समय दौड़े बार-बार पड़ रहे हों।

बाल–रोग

१११९-ऊँटकटेला की जड़ को पानी में घिस कर चने बराबर पिलावें शीतला निकलने का भय बच्चों को नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१११२-काली कोयल के पत्तों का रस १ माशा, काला नमक १ चावल भर मिला बच्चों को पिलावें। इससे वमन होकर कफ के विकार नष्ट होते हैं।

१११३-लहसन एक पोतिया जलाकर एक-एक रत्ती मां के दूध में दें कफ की कांस नष्ट होती है।

१११४-गोरोचन १ रत्ती मां के दूध में पीसकर चटावें तो बच्चों की पसली चलना बन्द होता है।

१११५-भुना चौकिया सुहागा १ रत्ती, भुनी फिटकरी १ रत्ती लेकर माता अपने दुग्ध से स्तनों पर लेप कर स्तनों का दूध पिलावें कांस नष्ट होती है। यदि इसका चूर्णकर मधु और दूधमें देवें तो १ रत्तीसे अधिक न दें।

१११६-आक का पोला पत्ता एक लेकर गर्म भूभल में गर्म कर अर्क निकाल मधु मिला ३-३ बूंद दें। पसली चलना, कफ विकार नष्ट होते हैं।

१११७-सुहागा १ चावल, वासाक्षार १ चावल, अपामार्गक्षीर एक चावल, अंडी का क्षार एक चावल, अतीस एक रत्ती, हड़ एक रत्ती के साथ पानी में पीस गर्म कर देने से बच्चों की पसली चलना बन्द होती है।

१११८-एलुआ एक रत्ती, सुहागा भुना एक रत्ती, हींग भुनी एक चावल, काला नमक १ रत्ती अण्डी की मिंगी या पत्ता ३ माशे बेंगन के पानी के साथ या इन्द्रायण के पानी के साथ पीसकर पेट पर गुनगुना

CC-0. In Public Domain.-Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

लेप करने से अफरा दूर होता है।

११११८-दूब और ईख के पत्तों पर पड़ी हुई ओस मुख में लगाने से मुँह के छाले ठीक होते हैं।

११२०-शनिदार या रविवार को उड़द के बड़े बनाकर २१ बार बच्चे के ऊपर उसार कर सायंकाल को चौराहे पर कुत्ते को खिलादें। बच्चोंकी नजर लगने की व्याधियां नष्ट होती हैं।

११२१-एक मिट्टी के सकोरा में जलती हुई आँच का अंगार रखकर लोहे की कील, राई, लालमिर्च, नमक डालकर बच्चे के ऊपर तीन बार उसार कर बटलोई में इसे डाल दे फिर उस बटलोई को एक थाली में उल्टा कर रखदें, उसके ऊपर गोबर पतला किया हुआ डालदें। इससे बटलोई थाली चिपट जाती है उग्रदृष्टि दोष नष्ट होता है। यह स्त्रियों का परीक्षित तन्त्र है।

११२२-गेहूँ का आटा एक तोला, चीनो एक तोला, घृत ६ माशे मिलाकर बालक का हाथ लगवाकर प्रातः चीटियों को बुलावें। बालग्रहों को शान्त करता है।

११२३-कुकरोंधा की पत्ती, सहदेवी को पत्ती सम भाग लेकर खूब पीसकर बारीक करलें और चना बराबर गोली बनालें एक-एक गोली माँ के दूध में तीन बार दें, सूखा रोग दूर होता है।

११२४-मूंगा भस्म, गौदन्ती भस्म, बंशलोचन पीपल

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

को सूखो छाल सब बराबर लेकर कपड़छन करलें १ से २ रत्ती शहद के साथ २ बार दें । श्वांस कांस सूखा रोग दूर होता है ।

११२५-मोंगरा, मकोय, घोग्वार का गूदा छोटी दुद्धी, पान बंगला और ताल मखाना देशी इनका रस - दस-दस तोला निकाल कर ऽ।।। तेल (काले तिल का) मिलाकर तेल विधि से मन्दाग्नि पर पाक करें जब तेल मात्र रह जाय छान लें फिर दालचीनी का तेल एक तोला कपूर एक तोला डाल कर शीशी में रख लें, इस तेल को सर्वांग में लगानेसे तथा कानोंमें डालने से सूखा रोग, ज्वर, अतिसार, सिरदर्द दुर्बलता मिटे ।

११२६-कछुए की हड्डी का चूर्ण ३ माशा, लेकर ५ तोला तिल तेल में डालकर पकावें जलने पर उतार कर ठंडा करें फिर एक माशा अफीम डाल दें, झाग शान्त होने पर एक माशा केशर डाल दें और छान कर रखलें । इसके लगाने से रक्तज कृमि नष्ट होकर रक्त का संचार होता है । बच्चे हृष्ट-पुष्ट होजाते है । सूखा रोग पर उत्तम है ।

११२७-बंशलोचन, इलायची दाना सफेद, समुद्रो नारियल, जहर मोहरा, खताई, हजरत यहूद, जमुर्रद और पदमाख प्रत्येक ६-६ माशा और अनविधे मोती ६ रत्ती

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

सबको गुलाब जल में घोंट कर सरसों के बराबर गोलो बनावें। एक-एक गोली दिन में ३ बार माँ के दूध या शहद के साथ। सूखा रोग की उत्तम दवा है।

११२८-गोरोचन ३ माशा, एलुआ ३ माशा, उसारे वन्द, केशर कटेरी का जीरा, यवक्षार और सत्यानासी के बीज प्रत्येक एक-एक तोला लेकर अदरक के रस में खरल कर मूंग के बराबर गोली बनावें। एक-एक गोलो माता के दूध या शहद में। पसली चलना कब्जियत, सूत्र का रुकना, अफरा, काँस आदि रोग दूर होते हैं।

११२९-कलई चूना २ तो० मिश्री ४ तोला, जल ऽ।= मिलाकर घोल लें। २४ घण्टे पर ऊपर का नितरा हुआ जल लेकर छान कर रखलें। मात्रा—३ मास के बच्चों को ५ से दस बूंद, एक वर्ष के बच्चे को २० से २५ बूंद, ३ वर्ष के बच्चों को ४० से ५० बूंद दूध में मिला कर पिलावें। इससे अपच. दूध फेंकना उदर पीड़ा, जुकाम, मन्दाग्नि और कब्ज आदि रोग नष्ट होकर मांस व वजन को बढ़ाने वाला उत्तम पेयहै।

३०-मेटेटोन (२) मेटेजिन विद काडलीवर आइल, (३) एडोक्सिलिन (४) थायरोप्रोटीन (५) इर्रेडोल (६) ऐलेक्सर हेमोग्लोविन आदि में से किसी एक दवा

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

का सेवन करें। बच्चों के सूखा आदि को दूर कर मोटा ताजा बनातो है। दांतों को आसानीसे निकाल देती हैं। लालतेल रोजाना लगाना भी सूखा रोग में लाभप्रद है।

११३१-रेडियोस्टोलियम—एक शीशी रोजाना या तीसरे चौथे दिन मांसपेशी में इन्जेक्शन दें।

११३२-कैल्सी-औस्टेलिन आधी सी. सी. चर्म या मास में तीसरे चौथे दिन।

११३३-लीवर ऐक्सट्रेक्ट आधी सी. सी. मास में तीसरे दिन।

११३४-विटेमिन बी १२-१५ एम. जो. रोजाना या तीसरे दिन मांस में।

नोट :—उपरोक्त सब इन्जेक्शन बच्चों को अत्यन्त उपयोगी बलवर्द्धक हैं। सूखा, जिगर, तिल्ली को ठीक कर वजन बढ़ाते हैं।

उन्माद—पागलपन

११३५-मछेरी का रस ६ माशे, शहद ५ माशे डाल कर दोनों समय पीवें, उन्माद में हितकर है।

११३६-कंघी बूंटी का रस एक तोला, शहद ६ माशे डाल पीने से गर्मी के पागलपन को ठीक करता है।

११३७-हारसिंगारके फूलों को सूंघने से लाभ होता है।

११३८-ब्रह्मी का रस ६ माशे, शहद ६ माशे डालकर दो बार पीवें, उन्माद में लाभकारी है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

११३९-वेल के पेड़ को जड़ २ तोला पानी ऽ। शेष ऽ= रहने पर दोनों समय पीवें, उन्माद ठीक होता है।

११४०-सर्पगन्धा ३ माशे रात को दूध के साथ दें नींद लाता है उन्माद ठीक करता है।

११४१-बकरी का मूत्र ५ तोला या २।। तो०भुनो हींग एक माशे से भावित कर पीवें, उन्माद शान्त होताहै।

११४२-भांग एक तोला को गाय के दूध में पीस कर सिर में तथा हाथ पैरों के तलुओं में मालिश करें। उन्माद हर है।

११४३-लहसन के रस में हींग को घोंटकर अन्जन लगावें, भूंतोन्माद में लाभकारो है।

११४४-अजमोद, खुरासानी अजमायन, भाँग, धतूरे के बीज कपूर, अफीम के डोरे, जायफल प्रत्येक ४-४ तोले लेकर जौकुट चूर्ण करें चार सौ तोले गौ दुग्ध में मिला कर रात्री को भिगोदें प्रातः भवके से अर्क निकाल लें। १। से २।। तक जरूरत के समय प्रातः सायंकाल। यह अर्क पहले कुछ उत्तेजक, फिर शायक, निद्रापद, वेदना शायक औरवल्य है। किसो भो रोग में निद्रा लाने के लिये उत्तम है। मस्तिष्क की निर्बलता में पन्द्रह बूंद द्राक्षासव और जल मिला कर दें। इसके सेवन करने से मस्तिष्क शान्त रहता है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

कृमि रोग

११४५-तुलसी को पत्तो का रस ६ माशे सुबह-शाम पोने से कृमि रोग नष्ट होते हैं।

११४६-नीम को पत्ता का रस ६ माशे दिन में ३ बार लेने से कृमि नष्ट होती है।

११४७-कंजा की गिरी ३ माशे कालीमिर्च ७ नग का चूर्ण कर दिन में ३ बार ले।

११४८-पलासबीज एक तोला, नीम की छाल एक तो० इन्द्रजौ एक तो०, चिरायता एक तो०, वायविडंग एक तो०, इनका कपड़छन चूर्ण कर रखना। मात्रा ३ मात्रा। अनुपान पुराना गुड़ रात में सोते समय ७ दिन तक।

११४९-वच एक तो०, पलासबीज एक तो०, अजमोद एक तोला, कचूर एक तोला, वायविडंग एक तोला, सोंठ ३ तोला—इनका कपड़छन चूर्ण कर एक तो०, भुनी हींग मिलालें। मात्रा ३ से ६ माशे गर्म पानी से प्रातः तथा सायंकाल।

११५०-सीताफल के बीजों को पानी में पीस गुदा में लगाने से बच्चों के कृमि नष्ट होते हैं।

११५८-इन्द्रायण की जड़ २ माशे सुबह-शाम

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

गर्म पानी से लें दस्त को राह कृमि नष्ट होते हैं।

११५२-कुकरौंधा का रस गुदा में लगाने से बच्चों को कृमि नाश हो।

११५३-मूली का रस २॥ तोले दोनों समय पोवें कृमि नष्ट हों मूली खाने से भी लाभ होता है।

११५४-आकके पत्तों का रस ऽ= तेल मौठा ऽ। मिला आंच पर मन्दाग्नि से पकावें जब तेल मात्र शेष रह जावे छानकर रखलें—इसको गुदा में लगाने से कृमि नष्ट होती हैं।

११५५-कुटकी ६ माशे, नमक एक माशे मिला गर्म पानी से दो बार लें, ये दस्त की राह कृमि को निकाल देती है।

११५६-अजमोद ३ माशे, नमक एक माशे मिला दोनों समय लें, कृमि नष्ट होती हैं।

११५७-सेन्टोनिन ३ ग्रेन, कैलोमल एक ग्रेन, सोडावाई कार्ब ३ ग्रेन, ग्लूकोज ५ ग्रेन यह माला है, रातको सोते समय लें, दूसरे दिन सबेरे कोई कोष्ठ शोधक विरेचन दें।

११५८-कार्बनटेट्राक्लोराईड ३०—४५ बूंदें कैपशूल में भरकर दें। इसके देने के ३ घण्टे बाद मैगसल्फ ४ ड्राम पानी में घोलकर पिलावें, इससे आंतों में चिपके

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

हुए कृमि भी निकल जाते हैं।

११५९-दो से पांच माशा तक कलौंजी का चूर्ण या इसका क्वाथ इन्द्रायण के रस में पीसकर नाभि के ऊपर किया हुआ लेप भी कृमि नष्ट करता है।

११६०-शफ़तालू के हरे पत्ते और कोमल शाखायें कूट पीसकर नाभि के ऊपर लेप करने या उनका रस पीने से कैंचुए और कद्दूदाने निकल जाते हैं।

११६१-सकमूनियां २ रत्ती और निसोथ ३ माशा निहार मुंह सेवन करने से छींटे और बड़े उभय प्रकार के कृमि मृत होकर निकल जाते हैं।

११६२-कुलफा का रस एक तो०, सुबह-शाम पीने से कद्दूदाने मर कर निकल जाते हैं।

११६३-कबीला ३ माशे, ऽ- छटांक दही में मिला कर खाने से सब तरह के कृमि मर कर निकल जाते हैं।

११६४-वायविडंग ९ माशा सुबह-शाम गर्म पानी से पीवें।

११६५-काला दाना २ माशा गर्म पानी से लें।
११६६-सफेद निसोथ ३ माशा गर्म पानी से लें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

११६७-शहतूत के वृक्ष की छाल २ तोला अनार की छाल २ तोला दोनों को ऽ॥ पानी में औटादें ऽ॥ रहने पर सुबह-शाम पिलावें ।

११६८-काला जीरा, कंजे की गिरी, पलास पापड़ा, कबोला वायविडंग प्रत्येक ४ माशा बारीक पोसकर गुड़ में मिलाकर २ बार खिलावें कृमि मर कर निकल जावेंगो ।

११६९-मछेछी का चूर्ण ३ माशा, कालोमिर्च एक माशा पोसकर दो बार गर्म पानी से लें । कृमि मर कर दस्त के रास्ते निकल जावेंगी ।

रक्त—पित्त

११७०-अडूसे का पत्ता ६ माशा, हड़ ६ माशा मुनक्का ६ माशा जल एक पाव । इनका क्वाथ करें । जब आधी छटाँक जल शेष रहे तब छान कर शीतल कर मिश्री मिला पिलाना ।

११७१-लाक्षा ३ माशा, मधु ६ माशा, घी ३ माशा प्रात. तथा सायंकाल । रक्त वमन को सर्वोत्तम औषधि है ।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

११७२-अडूसे की जड़ की छाल ६ माशा, किसमिस ६ माशा, हड़ ६ माशा, जल एक पाव। इनका क्वाथ करें, आधी छटांक जल शेष रहने पर शीत न कर छान मधु तथा मिश्री मिला पिलावें। प्रातःतथा सायंकाल। स्वांस कांस तथा रक्तष्ठीवन को बन्द करतो है।

११७३-मुक्ताशुक्ति भस्म एक तोला, धनियां १तोला, प्रवाल भस्म एक तोला, मुलैठी चूर्ण एकतोला स्वर्ण-गेरिकभस्म एक तोला, मिश्री ४तो० इन्हें एकत्रमिश्रित कर रक्खें। मात्रा ३ माशे अनुपान ५ तोला अडूसे का रस प्रातः तथा सायंकाल। रक्त वमन तथा रक्त मेह नाशक है।

११७४-शतावर रस ४ सेर, वला रस ४ सेर, दाक्षा-रस ४ सेर, घी ४ सेर, पेठे का रस ४ सेर, ईख रस ४ सेर, आँवला रस ४ सेर। इन्हें एकत्र पका कर घो अवशेष तक पाक करें। मात्रा आधा २ तो०, प्रातः तथा सायंकाल। रक्त पित्त, नष्ट कर बल, शुक्र तथा ओजवर्द्धक हैं।

११७५-सेलखड़ी को लेकर पहिले १४ बार गाजुवां के काढ़े में बुझाओ फिर नोचे ऊपर ग्वार पाठे का गूदा रखकर सराव संपुट में बदलकर फूंकदें, ४ से ८ रत्ती दिन में कई बार पानी से दें। रक्तस्राव और सुजाक

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

को दूर करता है । यह पित्तनाशक, रक्त रोधक संतापहर और दाह को दूर करता है ।

११७६-लाख का चूर्ण ४ रत्ती से डेढ़ माशा तक दिन में ३ बार धनिये को भिगो उसके पानी से दें यह रक्त स्राव व रक्त पित्त में तत्काल लाभ करता है ।

११७७-पित्तपापड़ा, मुनक्का, धनियाँ, आंवला, अडूसा सब समान भाग लेकर कूटकर रखलें, २ तोला रात को गर्म पानी में भिगोदें—सुबह छान कर पीवें । रक्त-पित्त को नष्ट करने में उत्तम है ।

११७८-अडूसे के पत्तों का रस २ तो० शहद तथा चीनी मिलाकर दो बार लें । रक्त पित्त में लाभ करता है ।

११७९-लोंग २ नग जल के साथ घोंटकर खांड मिला कर पिलावें, रक्त पित्त को नाश करता है ।

११८०-जवासा, कालीमिर्च जल द्वारा घोंट छान कर पिलावें, मूत्र मार्ग से रक्त जाने को उत्तम है ।

११८८-अनार के फूलों का रस दस बूंद नाक द्वारा चढ़ाने से रक्त आने को बन्द करता है ।

११८२-धनियाँ एक तो०, आंवला एक तो०, गेरूकलमी शोरा एक-एक तो०, सबको जलमें पीस कर सिर पर लेप करें, नाक से खून आने को बन्द करता है ।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

११८३-मुलतानी या पीली मिट्टी पानी डाल सिरपर लगावें—नाक के बहते खून को बन्द करता है।

११८४-दशमूल ६ माशा सतावर १ तो० छोटी पीपल २ दाना, मुनक्का ५ दाना दूध आधा सेर इन्हें एकत्र पकाकर दूध शेष तक औटा छानलें, २-३ मात्रा रक्त-ष्ठीवन की अचूक औषधि है।

११८५-अडूसे की जड़ की छाल ६ माशा, किशमिश ६ माशा, हड़ ६ माशा, जल एक पाव—इनका क्वाथ बनावें आधी छटांक जल शेष रहने पर शीतल कर मधु तथा मिश्री मिलाकर पिलावें प्रातः तथा सायंकाल श्वांस, कांस तथा खून बहने को बन्द करता है।

११८६-इलायची एक तोला, दालचीनी एक तोला मुलैठी ४ तो०, तेजपात एक तो०, छोटी पीपल ४ तो० इनका कपड़छन चूर्ण करें। ४ तो० पिंडखजूर ४ तो० दाख ४ तो० चीनी, ४ तो० मधु मिला ३ माशे की गोली बनावे। एक-दो गोली मधु के साथ दें। प्रातः तथा सायंकाल रक्त बन्द करने में उत्तम है।

११८७-प्लम्बाई ऐसोटेट ४ ग्रेन, एसिटिक एसिडडिल ६ बूंद, लाइकर मार्फिन ऐसीटेट १० बूंद, जल २ औंस प्रत्येक २ घण्टे पर।

११८८-कैलसियम ग्लुकोनेट १० ग्रेन, ऐक्सट्रेक्ट अर्गट

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

लिकुड १५ बूंद, स्प्रिट क्लोरोफार्म १० बूंद जल एक ओंस, ऐसो ३-४ माला दें। आर्तव की अत्यधिक प्रवृति होने पर गर्भाशयगत रक्तस्राव में लाभकारी है।

११८८-विटामिन के एक गोली, विटामिन सी १०० मि० ग्राम, कैलसियम लैक्टेड १० ग्रेन कोडीन सल्फेट पाव ग्रेन, एक माला। प्रति ५ घण्टे पर जल से देना चाहिए।

११८०-गोआगुलिन ५ से २० सी० सी० इन्जेक्शन मांसपेशी द्वारा।

११८१-विटामिन के-शिरा या पेशीद्वारा इन्जेक्शन दें।

सर्व विष चिकित्सा

११८२-महुआ को पीसकर कुत्ता के काटे घाव पर लगाने से अच्छा हो जाता है।

११८३-अपामार्ग को जड़ को पानी में पीस बिच्छू के काटे हुए घाव पर लगाने से अच्छा होता है।

८४—इमली के बीज घिसकर बिच्छू के काटे हुए घाव पर चिपकाने से अच्छा होता है।

८५-मदार के दूध को बिच्छू व कुत्ते के काटे पर लगाने से अच्छा होता है।

८६-पुनर्नवा की जड़ को पीसकर कुत्ता के काटे

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

घाव पर लगाने से अच्छा हो जाता है।

११९७-सतावर को पीसकर घी के साथ खिलाने से संखिया विष शान्त होता है।

११९८-घी में कालीमिर्च मिलाकर खाने से सब तरह के विष शान्त हो जाते हैं।

११९९-सत्यानाशी के बीजों को घी के साथ खाने से विषैले जीवों के काटे का विष शान्त होता है।

१२००-प्याज का रस पीने व घाव पर लगाने से कुत्ता काटे का विष शान्त होता है।

१२०१-जितनो अफीम खाई हो उसी वजन में हींग पानो में पीस पीने से अफीम का विष नष्ट होता है।

१२०२-विषखपरा को पीसकर घाव पर लगाने से साँप का विष उतर जाता है।

१२०३-वर्र, मधुमक्खी के काटे स्थान पर मट्टी का तेल लगाने से विष दूर होता है और उस स्थान पर सूजन भी नहीं होतो।

१२०४-सर्प के दंश स्थान के पास गोल्ड क्लोराईड को १५ ग्रेन की मात्रा में डिस्टल्डवाटर में मिला कर त्वचा में प्रविष्ट करना चाहिये।

१२०५-पीपल ३ माशा, अदरक ३ माशा, कालीमिर्च

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

३ माशा, सेंधा नमक ३ माशा एकत्र पोस कपड़छन चूर्ण कर घो, मधु तथा मक्खन में एकत्र मिला पिलाना विष नाशक में श्रेष्ठ है।

१२०६-राई, लहसन तथा प्याज अधिक मात्रा में खिलाना।

१२०७-फिटकरी पीस जल में घोल पिलाना।

१२०८-बन्दर की काटी हुई जगह पर बन्दर की भिष्टा लगाने से विष शान्त होता है।

१२०९-नारियल दरियाई डेढ़ माशा पीसकर पिलाने से हर प्रकार के जहर को बहुत फायदा होता है, चाहे वह जहरीले जानवरों का हो या संखिया, धतूरा, अफीम वगैरह का हो।

१२१०-यदि छिपकली काट खावे तो सरसों के तेल में राख मिलाकर लगाने से आराम होता है।

१२११-कुचले को चावल की बराबर कतर के और एक चावल भर निहार मुंह सात दिन तक निगलने से कुत्ते काटने का फिर कोई डर न रहेगा। और सब जहर शरीर से नष्ट हो जावेगा।

१२१२-अगर आदमी को साँप काटे तो दूसरे आदमी का और अगर औरत को काटे तो दूसरी औरत का पेशाब बिना दिखाये पिलाने से फौरन जहर उतर

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

जाता है। यह राम वाण उपाय है।

१२१३-तुलसी के ५ पत्ते और ५ कालीमिर्च पोसकर पिलावें भंग का नशा दूर हो।

१२१४-कान में कडुआ तेल डालें या अदरक का रस पिलादें भंग का नशा उतर जावेगा घी मिलाकर दूध पिलावे।

१२१५-धतूरे का फल खाया हो तो कपास का फल खावें, धतूरे की जड़ खाई हो तो कपास की जड़ खावें, धतूरे का पत्ता खाया हो तो कपास का पत्ता खिलावें यह विचित्र दवा है।

१२१६-मैंढासिंगी को पीसकर लगाने व सुंघाने व पिलाने से सांप और बिच्छू का विष शान्त होजाताहै।

१२१७-मदार के दूध को बिच्छू व कुत्ते के काटे पर लगावे तो अच्छा हो।

१२१८-हिंगौटा छोटे पौधे की जड़ ऽ- लालमिर्च ऽ= पानी में पीस मटर के बराबर गोली बनावे १५ दिन में १ गोली गुड़ में लपेट कर दें ३ गोली दें। एक नाज की रोटी खावें घाव पर बेंगन के पत्ते तेल चुपड़ गर्म कर बाँधें। इसके प्रयोग से पागल कुत्ता, स्यार, गीदड़ के काटने का विष नष्ट होता है यह प्रयोग हजारों बार का परीक्षित है।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१२१६-काली गुनीसर, कढ़वीपाढ़, पंचागड़ा काला इन तीनों को कूट पीसकर घी के साथ ६ माशे फक्की करावे। सर्प विष अवश्य ही ठीक हो जावेगा।

बच्चों का दवाखाना

तत्काल फलप्रद चुनी हुई दवाएँ

१२२०-सोना गेरु-उबकाई पर २ रत्ती दूध से
१२२१-सोडावाई कार्व हाजिम २ रत्ती ,,
१२२२-कलमी शोरा पेशाब कारक ज्वर हर २रत्ती ,,
१२२३-नौसादर-ज्वरहर, काँसहर २ रत्ती ,,
१२२४-हींग-हाजिमा, पेट दर्द पर १ रत्ती ,,
१२२५-सेंधानमक हाजिमा एक रत्ती पानी से
१२२६-सुनारी सुहागा फूला दस्तावर २ रत्ती दूध से
१२२७-फिटकरी-खूनजाने, ज्वर पर एक रत्ती ,,
१२२८-बंशलोचन, घबराहट कै पर दो रत्ती ,,
१२२९-नीबू का सत-पेट दर्द पर, पाव-पाव रत्ती ,,
१२३०-बूरा खुश जायका २ रत्ती ,,
१२३१-मिश्री-प्यास पर दो रत्ती ,,
१२३२-काला नमक-हाजिमे की खराबी एक रत्ती ,,
१२३३-चौकिया सुहागा भुना-खाँसी पर दो रत्ती ,,

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१२३४-सोंठ, हाजिमा २ रत्ती गुनगुने पानी से
१२३५-जीराभुना, हाजिम, पेट दर्द पर दो रत्ती ,,
१२३६-इलायची, कै होने, प्यासपर एक रत्ती गुनगुने,,
१२३७-जुलाफाहर्र दस्तावर एक रत्ती ,,
१२३८-छोटी बड़ी हर्र–दस्तावर दो रत्ती ,,
१२३९-सनाय, दस्तावर दो रत्ती ,,
१२४०-अतीस, खाँसी, बुखार, दस्तों पर दो रत्ती ,,
१२४१-काकड़ासिंगी, खाँसी, बुखार पर दो रत्ती ,,
१०४३-मोचरस, खूनी दस्तों पर दो रत्ती ,,
१२४४-मुलैटी, खांसी पर दो रत्ती ,,
१२४५-कालोमिर्च, खाँसी, जुकाम, बुखार, एक रत्ती,,
१२४६-सोंफ, हाजिमा दो रत्ती ,,
१२४७-भारंगी, पसली चलने पर एक रत्ती ,,
१२४८-कड़वी पाढ़-पसली, बुखार रोकने को
एक रत्ती गर्म पानी से
१२४९-भाँग, दस्त बन्द करने को पाव रत्ती पानी से
१२५०-उसारेवन्द-पसली चलने पर १ से ४ रत्ती
माँ के दूध में
१२५१-लौंग, अधिक सर्दी पर, कफ खाँसी आधीरत्ती
गर्म पानी से

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

नोट—इन दवाओं को अलग २ कपड़छन करके अलग-अलग शीशियों में रखलें। इन ३२ दवाओं से ही बच्चों के सब रोगों का शर्तिया इलाज कर सकते हैं। चाहे एक ही दवा दें चाहे दो दवा मिलाकर देंयह आपकी इच्छा पर निर्भर है। यदि आप १ मास से ५ वर्ष तक के बच्चों का इन दवाओं से इलाज करेंगे तो आपको सफलता अवश्य ही मिलेगी। इलाज के लिये बच्चों का तांता लग जावेगा, यह दवाएँ बच्चों की चिकित्सा का जीवनभर का तजुर्वाहै। यश धन, प्रशंसा आपको अनायास ही प्राप्त होगी। इन दवाओं की खास विशेषता यह है कि यह निर्विष हैं। बालकों को विषैली दवाऐं बजाय फायदे के नुकसान करती हैं।

विशेष—बूरा किसी भी दवा में मिलाकर दे सकते हैं। बच्चे मीठी दवा को खाना ज्यादा पसन्द करतेहैं। मात्रा-आधी रत्ती से दो तक, आयु बल का विचारकर प्रत्येक दवा को दे सकते हैं।

——::❀::——

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

नित्यप्रति काम आने वाली आयुर्वेदिक एवं ऐलोपैथिक पेटेन्ट दवाएं

१-कोडोपाईरोन–दांत, कान, सिर. छाती, कमर और दूसरे अंगों के दर्दों को फौरन आराम करतीहै। दिनमें ३ बार १-१ गोली ठण्डे पानी से लें।

२-क्लोरोक्वीन–यह मलेरिया रोकने की अक्सीर दवा है। इसे गर्भावस्था में भी दे सकतेहैं। २गोलियां बुखार से पहिले पानी के साथ दें।

३-एफेड्रीन हाईड्रोक्लोर–यह गोली और इन्जेक्शन दोनों रूप में आतो हैं। दमे को शान्त करने के लिये इससे उत्तम कोई दवा नहीं। १–१ गोली पानी के साथ ३ बार लें।

४-थ्रोट मेंथल टेबलेट–खांसी और नलेकी खराबी में चूसने योग्य स्वादिष्ट टिकिया है। गले की सूजन पर भी उपकारी है। दिन भर में ५-६ गोली चूसनी चाहिये।

५-आयोडेक्स–प्रारम्भिक विद्रकाधि (गिल्टो) कनफेर और कंठमाला को बिठाने में अद्वितोय है इसका सेवन गठिया के कारण होने वाली सूजन को मिटाने ओर वेदना को कम करने के लिये भो किया जाता है। दिन में दो-तीन बार मालिश करें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

६—जेफरोल-प्रत्येक प्रकार को खाँसी को आराम करने के लिए यह एक सुस्वाद दवा है । बच्चों के लिये भी विशेष उपयोगी है । बच्चों को छोटा चम्मच बड़ों को बड़ा चम्मच दिन में ३-४ बार दें ।

७—स्काट इमल्शन—यह मछली के तेल का एक मिश्रण है इसे सुस्वाद बनाया गया है फेफड़ोंको बलवान बनाने के लिये बहुत उपयोगी है । जिन लोगों को नजले जुकाम की बार २ शिकायत बनी रहती है उन के लिये विशेष उपयोगी है । हर प्रकार को खांसी और कमजोरी को दूर करती है । क्षय रोगियों को भी लाभप्रद है । इसे बच्चों के सूखा रोग पर भी दिया जाता है । दिन में ३ बार एक२ चाय का चम्मच लें ।

८—सोनेरील-यह दवा उपशायक और निद्राजनक है । शारीरिक और मानसिक बेचैनी को दूर करती है और निद्रा लाती है । सुबह रात १-१ गोली पानी के साथ लें ।

९—अर्गापाईरीन-आमवात, गठिया आदि वात-व्याधियों को दबाने के लिये रामवाण है । वात—जन्य शोथ को भी दूर करता है । हमने इसे न्युमोनियाँ में बहुत गुणकारी पाया है इन्जेक्शन और टिकिया के रूप में आता है । इसका १ इन्जेक्शन हर तीसरे दिन

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

मांसपेशो में दें। दिन में ३ बार एक-एक टिकिया खाने को दें।

१०-लीवरजिन-जिगर तिल्ली व किसो प्रकार की कमजोरी में लाभप्रद है। एक २ चम्मच दो बार भोजन के बाद दें। बच्चों को अवस्थानुसार।

११-अमृतांजन सिरका दर्द और अन्य प्रकार के दर्दों में लगाने से बड़ा लाभ करता है।

१२-लोवर साल्ट फूट साल्ट-यकृति और आमाशय को बीमारियों में लाभप्रद है। अजोर्ण और कब्ज को दूर करता है। वाय, शिर शूल और गुर्दों के विकारों को ठीक करता है। एक-दो चम्मच एक गिलास पानो में।

१३-एनासिन या एस्प्रो-कर्णशूल, शिरशूल, दन्तशूल, नेत्र शूल, जुकाम, ज्वर, वाय तथा दूसरे दर्दों में उपयोगी है। मात्रा एक-दो टिकिया पानी से।

१४-अशोका कार्डियल-रक्त प्रदर, श्वेतप्रदर, गर्भाशय को सूजन, बार२ गर्भपात होना, कष्ट रज इत्यादि में उपयोगी है। २-३ ड्राम दिन में ३ बार।

१५-जूड़ो, ताप-डाक्टर एस. के बर्मन का, जिगर तिल्ली जाड़े के बुखार में उपयोगी है। बुखार से पहले तीन बार।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

१६-शिवाजौल-निमोनियाँ, सुजाक फोड़े-फुन्सी, प्लेग, चेचक, कंठ प्रदाह, बच्चों का सर्दी जुकाम खुजली और कई प्रकार के चर्म रोगों में उपयोगी है। प्रारम्भ में ४ टिकिया बाद में १-२ टिकिया ४-४ घंटे में पानो के साथ। यह कई रूप में आता है जैसे आँख का मरहम, पाउडर चर्म रोगों पर लगाने को।

१७-डोंगरे का बालामृत-यह दुर्बल बच्चों को हृष्ट-पुष्ट बनाता है। मात्रा लेखानुसार।

१८-फैलो सिरप-पाण्डु रोग, धातु क्षीणता, रोगों के बाद की कमजोरी और साधारण दुर्बलता में उपयोगी हैं। १५-२० बूँद से आरम्भ करना चाहिए।

१९-ग्लेक्सो—बच्चों के लिये दूध का पाउडर-जिन बच्चों को माँ का दूध अनुकूल न हो उन्हें दिया जाता है।

२०-ग्लाईकोडीन टर्पिवसाका—हर प्रकार को खांसी में उपयोगी है। मात्रा—१ ड्राम तीन-चार बार।

२१-ग्राईप वाटर (बुडबर्ड)—काली खांसी, कम्हेड़े, वमन, मतली, खट्टी डकार, अफरा, दाँत निकलने के समय के विकार दूर होते हैं। आधे से २ ड्राम तक दिन में दो बार।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

२२-हैडेन्सा-इसके लगाने से बवासीर के मस्से सुकड़ जाते है, शूल शान्त हो जाता है, खून बन्द हो जाता है।

२३-पेनकिलर-हर प्रकार के शूल में लगाने और खाने के काम में आता है। मात्रा चौथाई से दो ड्राम।

२४-पैप्स-कंठ और फेफड़ों के कारण होने वाली खाँसी में उपयोगो है। १-१ टिकिया दो बार चूसें।

२५-सैरिडान-हर प्रकार के शूल में उपयोगी है। मात्रा एक-दो टिकिया पानी के साथ।

२६-सरपीना-(हिमालय) पागलपन, हिस्टीरिया प्रसूत, उन्माद, ब्लेडप्रेशर (रक्त का दवाब बढ़ना) अनिद्रा, बेचैनी में उपयोगी है। एक-दो टिकिया दो तीन बार।

२७-सुन्दरी रसायन-लाल, पीला, श्वेत दर सोप रोग गर्भ का बार-बार गिरना क्षादि स्त्री रोगों की प्रसिद्ध दवा है।

२८-हिन्द रसायन-जीर्णज्वर, यकृति ओदाविकार पाण्डु, खून की कमी, हथेलियों एवं पिंडलियों का जलना आदि रोगों में लाभप्रद है।

२९-जीवन सुधा-रक्त, शक्ति को बढ़ाकर वजन

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

को बढ़ाता है। मात्रा—२ तोला उतना ही पानी पिला कर भोजन के बाद।

३०—अभय कल्प उदर को दूर कर भूख बढ़ाता है। मात्रा २-२ तोला भोजन के बाद।

३१—अमृत धारा (देहरादून) सुधासिन्धु (मथुरा) अतिसार, हैजा, कै, उदर शूल आदि रोगों में आशुफलकारी है। मात्रा ५ बूंद से १० बूंद तक बताशे या थोड़े पानी में।

३२—च्यवनप्राश—खांसी, बलगम, क्षय आदि में लाभप्रद है।

॥ इति ॥

वैद्यककी नीचेलिखी पुस्तकें पत्र भेजकर मंगाइये

नूतनामृतसागर	८)
इलाजुल गुरबा	४)
बूटी प्रचार	२)५०
रस हजारा	३)
वैद्य जीवन	)६०
नाड़ी परोक्षा	)२५

मंगाने का पता :—

श्यामकाशी प्रेस, मथुरा।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

बच्चों के लिये टीके

—डा० भद्रसेन— (नवभारत टाइम्स से)

(बाल्यावस्था में लिये गये टीकों या सूचि वेधों द्वारा जिन रोगों से बच्चों को बचाया जा सकता है, उनमें से प्रमुख हैं)

१—चेचक २—डिप्थीरिया (प्रबलाघ), गले की एक घातक बीमारी ३—काली काँसी ४—टेटनस (धनुस्तम्भ), ५—तपैदिक इन पाँचों रोगों के विरुद्ध प्रतिरोध अथवा बचाव जीवन के प्राथमिक वर्षों में ऐसे ही धार्मिक कर्तव्य के रूप में हो जाने चाहिये जैसे नाम करण, मुण्डन आदि संस्कार होते आये हैं। बच्चे के पैदा होते ही कुछ निम्न प्रकार का प्रोग्राम बनाकर उस पर आचरण किया जावेगा तो बालतंत्र का यह परमावश्यक आदेश विधि पूर्वक पूरा किया जा सकेगा और माता पिता कालान्तर में पछताने और आलस्य, उपेक्षा और मूर्खता के दोषी कहलाने से बच सकेंगे।

नवजात शिशु (क) बी० सी० जी० अर्थात् तपेदिक से बचाने वाला टीका एक नियम समझकर लगवा लेना चाहिये। यदि माता तपेदिक रोगिणी है तो बच्चे को एकदम माता से पृथक कर देना चाहिये। बी० सी०जी० का टीका लगवा देना चाहिये और जब परीक्षाओं द्वारा सिद्ध हो जाय कि बच्चे के खून में तपैदिक से बचाव, की शक्ति ठीक पैदा होगई है, उसे माता के पास ले आना चाहिये।

(ख) चेचक का टीका भी इन दिनों लग सकता है। यदि चेचक का टीका पहले लगा है तो बी० सी० जी० को इससे कम से कम तीन सप्ताह के अन्तर से देना चाहिये। आस पास चेचक फैली हो तो चेचक का टीका फौरन करावें और बी० सी० जी० को मुनासिब इन्तजार पर डाल दें।

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

जन्म से चार मास तक (क) चेचक का टीका इस काल में अवश्य लग चुकना चाहिये। इतनी जल्दी चेचक का टीका लगवाने के कई लाभ हैं। (१) बड़ी उमर में लगवाये टीके की अपेक्षा इस समय लगवाये टीके से आवांच्छनीय प्रतिक्रियायें और शारीरिक उपद्रव कम होते हैं। (२) टीके का दिमाग पर बुरा प्रभाव इस उमर में कभी देखने में नहीं आता। (३)चेचक के किसी रोगी या उससे मिलने जुलने वाले किसी व्यक्ति के सम्पर्क में जाने की सम्भावना से पहले ही शरीर में प्रतिरोधक शक्ति पैदा हो जाती है।

(ख) यदि शरीर में एक्जीमाचम्बल या त्वचा की कोई बीमारी उग्ररूप में उपस्थित हो तो इसटीके को कुछदिन स्थगित कर देना चाहिये. शरीरमें कोई दूसरीछूत लगी हो, बड़ीबीमारी या गड़बड़ उप स्थित हो या त्वचा के किसी रोगी का सम्पर्क अनिवार्य हो तो भी कुछ दिन ठहर जाना ही सुरक्षाजनक है।

चार से नौ मास तक (क) डिप्थीरिया और काली खाँसी या डिप्थीरिया, टेटनस और काली खाँसी के मिश्रित टीके लगवा कर इन तीनों रोगों के विरुद्ध बचाव शक्ति पैदा कर लेनी चाहिए।

(ख) यदि अब तक बी० सी० जी० नहीं दिया जा सका हैं तो बालक के एक वर्ष का होने तक इसकी व्यवस्था कर डालनी चाहिये।

एक से दो वर्ष तक (क) यदि इलाके में टाइफाइड मियादी बुखार रहताहै या फैलाहुआ है तो टायफाइड तथा पैराटाइफाइड के मिश्रित टीके(टी० ए० बी०) लगवा लेने चाहिए। ऐसे टीके भी मिलते हैं जिनमें हैजे का प्रतिरोधक वैक्सीन भी टी० ए० बी० के साथ ही मिला होता है। हैजा फैला हो मेले,

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

तीर्थ या ब्याह शादी जाना हो तो इसका बड़ा लाभ रहता है।

(ख) टेटनस के प्रथम टीके को लगे साल गुजर गया है तो इसका दूसरा टीका लगवा देना चाहिए।

(ग) खसरे का टीका भी निकल आया है और कुछ देशों में प्रचलित है। यदि गैमाग्लीब्यूलीन की शक्ल में सुलभ हो तो लगवा लेना चाहिए, वर्ना खसरा और चिकनपौक्स (छोटी-माता, काकड़ा लाकड़ा) जितनी छोटी आयु में निकल आयें उतना ही अच्छा रहता है।

तीन चार वर्ष तक डिप्थीरिया, काली खाँसी तथा टेटनस का मिला जुला टीका प्रतिरोधक टीका एक बार लगवालें। अगर पिछलीसाल ऐसा मिलाजुला टीका लगवाने से प्रतक्रिया जरूरत से ज्यादा हो गई थी तो इस बार इन तीनों के टीके अलग अलग लगवाने चाहिये।

चार बर्ष के बाद पहले लग चुके जिन टीकों का प्रभाव कम होने लगा है मगर जिनके प्रभाव को जारी रखना हो तो यह आवश्यक है उनको दोहराना पड़ता है इन्हें बुस्टर (उत्तोलक, पूरक, सहायक) मात्रायें कह सकते हैं। अर्थात् गिरते प्रभाव को उठाने वाली।

(क) प्रत्येक बच्चेकी जिसे नवजात अवस्थामें बी०सी०जी० लग चुका है तीन वर्ष की आयु पर पुनः परीक्षा होनी चाहिए। इसके बाद प्रति छः मास बाद होती रहनी चाहिए, और जब भी पिछले टीके का असर कम होता दीखे बी० सी० जी० को दोहराना चाहिये अन्यथा नहीं।

(ख) चेचक का टीका छः वर्ष तथा बारह वर्ष पर दोहराया जासकता है। यदि आसपास चेचक फैली हुई है या फैलने का डर है तोभी यदा कदा लगवाते रहना चाहिए। यदि शकहो कि

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

पिछला टीका कामयाब था या नहीं तो भी इसे दोहरा लेना चाहिए।

(ग) तीन चार वर्ष के अन्दर पर काली खाँसी का प्रतिरोधक टीका भी दोहरा लेना चाहिये ताकि बच्चे की बचाव शक्ति एक बार फिर बढ़जाए। चाहे पूर्ववत तीनों रोगों के मिश्रत टीकेके रूप में चाहे काली खांसी का पृथक, पांच वर्ष की आयु के बाद तीनों का मिला हुआ टीका एकबार फिर लगवाना चाहिए स्कूल जाने की उमर हो गई है नये सम्पर्कों से बचाव की तरफ विशेष ध्यान देना पड़ेगा।

(घ) डिप्थीरिया और टेटनस के टीके भी तीन चार साल की अवस्था पर दोहराने चाहिए।

(ङ) जिन इलाकों में टाइफाइड रहता है या है उसमें टी० ए० बी० साल के साल लगवाते रहना चाहिए प्रतिरोधक मिश्रित हो तो और भी अच्छा।

❀ समाप्त ❀

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy

CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection

Digtized by Muthulakshmi Research Academy



CC-0. In Public Domain. Chhatrasal Singh Collection